With the financial assistance from the Ministry
of Education Government of India

श्री गोस्वामि फाल्गुन भट्ट विरचितं

जय-भारतादर्शः

भाषाटीका समेत चम्पूकाव्यम्

विलसतु सवज्ञस्य कृपा कटाक्षस्य दिव्य आदश
भारत शिक्षा मन्त्रालयस्यार्थ सहायादर्शं ।
निजकर्माणि सौजन्यमादश मुद्रणालयादश बीकानेर नगरे

प्रथम सस्करण प्रतीनामेकमहस्रम

शाके १८९५ विक्रम २०३० ईसवी १९७३

आदर्श मुद्रणालय, तेलीवाडा मार्ग, बीकानेर

मूल्य – 4 रुपये

दो शब्द

आदश के प्रथम आलोक म भगवती भारती मातृभमि के दिव्य दर्शन होते हैं। अत प्रत्येक देश-भक्त का कतव्य है कि यह मातृ भूमि के चरणो में नत मस्तक होवे और देश भक्ति का प्रण ग्रहण करे।

पुस्तक का प्रथम पृष्ठ या मुखपृष्ठ है वह ग्रन्थ का परिचय देता है।

इस पुस्तक के निर्माण का श्रीगणेश तब हुआ जब अखण्ड भारत देश के राजनैतिक स्वाथ लोलुपता से विभाजित होकर दो देश परस्पर युद्ध-प्रतियुद्ध म जूझने लगे। आक्रामक कौन तथा प्रतियोद्धा कौन यह घटनाओ से स्पष्ट निर्दिष्ट हो जायगा। यह सन् १९६५ की बात है।

श्रेयासि बहु विघ्नानि के न्याय से विघ्न आये परन्तु भारत सरकार ने यथावत् अनुग्रह किया। इन अवसरो मे चुनाव, कागज की कमी मुद्रणालय के अध्यक्ष की अस्वस्थता तथा दुखद वैकुण्ठवास भी हैं।

यह ग्रन्थ भारतवष के इतिहास का उज्ज्वल त अध्याय है। उसके शूरवीरो के चरित्र, धीरता, आदि की अमर कहानी है।

अन्तिम अनुच्छेद "आदर्श कौतुकम" विशेषत पडोसी देश बगला देश पर पाक का अत्याचार तथा उस देश का स्वातत्र्य सग्राम तथा बलिदान। ऐसे समय मे भारत द्वारा सहानुभूति पूर्ण शरणार्थियो की सहायता आदि है।

इतिहास की प्राचीनता उसका गुण है।

इति शुभम

जय भारतादर्शः

विषय सूची

१. आदि पर्व — पृष्ठ

२ सभा पर्व

३. वन पर्व

४. विराट पर्व

५ उद्योग पर्व

६ भीष्म पर्व

७. द्रोण पर्व

८ कर्ण पर्व

९. शल्य पर्व

१०. स्त्री पर्व

११. अनुशासन पर्व

१२. शान्ति पर्व

१३. खिल पर्व

कुछ विद्वानों की सम्मतियां

भारत राष्ट्र के केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय द्वारा आर्थिक सहायता मिलना ही स्वय प्रमाणित करता है कि इस अनुदान की तथा ग्रन्थ की उपादेयता का समर्थन सम्भ्रान्त विशिष्ट विद्वज्जनों द्वारा हुआ ही है। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य विद्वानों की सम्मतियां यहा उद्धृत की जाती हैं। इन सब आदरणीय महानुभावों के प्रति अपना परम आभार प्रकट करने को मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

ग्रन्थ निर्माता

सस्कृत साहित्य सम्मेलन शाखा बीकानेर द्वारा सस्कृत सेवी लेखक विद्वान् प० फाल्गुन गोस्वामी को सम्मान-पत्र समर्पित

आदरणीय,

फाल्गुन जी गोस्वामी

सस्कृत साहित्य सम्मेलन के लिए गौरव का विषय है कि आपने सस्कृत साहित्य एव भारतीय सस्कृति की महान् सेवा की है आप गोस्वामी परिवार के वरिष्ठ सदस्यो म हैं तथा आपने राष्ट्रीय एकता व देश के लिए (जय) भारतादर्श नामक सस्कृत ग्रन्थ का प्रकाशन किया है। आपका स्वागत सम्मान करते हुए बीकानेर का सस्कृत सम्मेलन गौरव अनुभव करता है।

राजस्थान सस्कृत सम्मेलन

दि० ५-४-७०

बीकानेर

पण्डित श्री हरि शास्त्री दाधीच
आम्नाय-घुर घर, साहित्य महोपाध्याय
महोपदेशक आशुकवि, कविभूषण,
काव्य रत्नाकर, वेदान्त भूषण,
आगमरत्न।

सी० २४६, दयानन्द मार्ग
तिलक नगर, जयपुर

श्रीमान् प० फाल्गुन जी गोस्वामी लिखित 'जय भारतादश' नामका निबन्ध हमने भी देखा है। इसमे वर्तमान भारत के नेताओ को प्राचीन महाभारतीय नेताओ पर आरोपित कर एक रूपकालकर (प्रबन्धगत) बनाते हुए कवि लेखक ने अपनी प्रजन प्रतिभा का परिचय प्रस्तुत किया है। तदनुसार ही इसके प्रतिकूल पाकिस्थान एव चीनीय दल के नेताओ को महाभारत के दुर्योधनादि नेताओं पर निरूपण किया है। और गुण धर्मानुसार एव स्वभावानुकूल यह रूपक रम्य ही हो गया है।

कृति (रचना) भी कोमल मधुर है। काव्य कला के निपुण कवि श्रेष्ठ ने इसम पाण्डित्य का भी साहित्य शैली के साथ निवाह किया है। यह प्रशसनीय है।

पाक्य नेता अयूब भुट्टो आदि को दुर्योधन दुशासनादि पर और नेहरू लाल बहादुर शास्त्री प्रभृति का पाण्डवीय नेता युधिष्ठ रादि पर आरोपित किया है। ऐसे ही चीन के नेताओं का निरूपण उचित हुआ है। प्रतिप ही नेताओ की (पाक्य और चीनीय) नीति का और उनकी दुश्चेष्टाओ का कूटनीतियों का एवं धानमरी स्वार्थनीतियों का वर्णन रोचक हुआ है। साथ ही वायुयान राकेट जेट विमान टैंक रडारों का भी वर्णन है। भारतीय सैनिकों का

प्रदम्य उत्साह और प्रचण्ड पराक्रम अच्छे ढंग से किया है।-उसे देख कर यह कहा जा सकता है कि इस नवीन युग के युद्ध का वर्णन आरंभिक मान कर भी कवि का उत्साह देश-प्रेम तथा राष्ट्रीयता अनुकरणीय है।

इस 'जय भारतादर्श' निबन्ध की पूर्ण प्रचार पूर्वक ख्याति चाहते हैं तथा प० फाल्गुन गोस्वामी जी का धन्यवाद करते हैं।

ह० श्री हरि शास्त्री दाधीच,

दि० २१-५-६८ जयपुर

श्री गणेशाय नमः

गोस्वामिकुलभूषण विक्रमनगरवास्तव्य विद्वत्प्रवर कविवर श्री मत्फाल्गुन गोस्वामिमहोदय प्रणीत 'जयभारतादर्श' नामक लघुकाव्यम् मयाअवलोकितम्। अल्पशरीरमपीद काव्यम् प्रस्तुत विषय वैशिष्ट्यनात्ममहत्व स्पष्ट-माख्याति। देववाण्या मेतादृश्यवर्तमानराष्ट्रिय महित्ववर्णनपराणा ग्रन्थानामाम्ते नैयू यमिति तत्पूर्तिप्रसक्ता हार्दिक धन्यवादार्हा श्री गोस्वामिमहाभागा। तदस्य भारतराष्ट्रगौरवप्रकाशकस्य काव्यस्य सर्वत्र प्रचार प्रसारश्च श्रीमन्मुरारि कृपया सद्योभूयादिति सम्मिलष्यन् संस्कृत संस्कृति सेवाय श्री गोस्वामिना दीर्घायुष्टवञ्च भगवत श्री श्रीनाथान्याचन् विरमति।

विद्वद् विधेय

हस्ताक्षरित श्री नारायण त्रिपाठी

प्राचार्य

दि० १८-११-६८ राजकीय संस्कृत कालेज नाथद्वारम्

चेनसुखदास न्यायतीर्थ
प्रिंसिपल, जैन संस्कृत कालेज

मनिहारो का रास्ता,
जयपुर २१ ६ १९६८

'जयभारतादर्श' एक आधुनिक संस्कृत भाषा की रचना है। इसमें— 'अयूबस्य भारतस्य शत्रयनुस धनम्, सम्पूर्ण केतवम्, तोत्रा' घातञ्च, फिल्लोर क्षेत्रम् आदि प्रकरणो द्वारा भारत और पाकिस्तान के युद्ध का वर्णन किया है। इसमें सब मिलाकर ४६ प्रकरण हैं। इन प्रकरणो मे भारत के विभि न प्रदेशो—बाडमेर, जोधपुर अमृतसर, राजस्थान, सौराष्ट्र आदि पर पाकिस्तान द्वारा किये गये आक्रमणो का वर्णन किया गया है। भारत का शौय और उसकी परम्परा के अतिरिक्त वर्णविच्छेद एव नेताजी सुभासच द्र बोस तथा पञ्च शील आदि का भी वर्णन है। इसमें कोई शक नही है कि लेखक के सस्कृत प्रेम ने इस ग्र थ के निर्माण की प्रेरणा दी है। ग्र थ की भाषा सरल है। इस रचना का ऐतिहासिक महत्व भी है। सस्कृत मे ऐसी रचनाओ का होना सस्कृत की उ नति के लिए आवश्यक है।

मुझे आशा है कि लोग इसे दिलचस्पी से पढ़ेंगे और इसका अवश्य प्रचार होगा।

हस्ताक्षर
चैनसुखदास

शांति आश्रम
बीकानेर

'जय भारतादश' संस्कृत भाषा की एक नवीन रचना है। इसके लेखक श्री फाल्गुन जी गोस्वामी बीकानेर के पुराने और जाने–माने मनीषी एवं साहित्यकार हैं। यह रचना एक लघु-काव्य है जिसका विषय मुख्यांश में विगत भारत–पाक संघर्ष है। भारतीय संस्कृति और देश की वर्तमान दशा से सम्बन्धित कतिपय प्रकीर्णक कविताएं भी अन्त में परिशिष्ट रूप में दे दी गयी हैं। स्वदेश एवं मातृभूमि के लिये प्राणोत्सर्ग करने वाले वीरों का प्रशस्तिगान राजस्थान की साहित्यिक परम्परा रही है। इस काव्य का प्रणयन तदनुरूप ही है। काव्य में संघर्ष के विविध प्रसंगों का बड़ा सजीव वर्णन हुआ है। कवि का देश प्रेम प्रशंसनीय है। भाषा सरल और सहजगम्य है। आशा है कि यह कृति संस्कृतज्ञ विद्वानों और संस्कृतज्ञ काव्यरसिकों द्वारा समानरूप से समादृत होगी। इस सुंदर कृति के लिये लेखक को मेरी हार्दिक बधाई।

दि० २१ ४ ६६

नरोत्तम दास स्वामी
अवकाश प्राप्त उप–प्रधानाचार्य और
हिंदी विभागाध्यक्ष,
महाराणा भूपाल कालेज,
उदयपुर, तथा
पीठाधिपति, राजस्थानी ज्ञानपीठ, बीकानेर

हिन्दी विश्वभारती शोध संस्थान, बीकानेर

निर्देशक
विद्यावाचस्पति मनीषी
विद्याधर शास्त्री, एम०ए०

बीकानेर
क्रमांक अभ्यनुज्ञा-२०२६
दिनांक १६-४-६८

विविध विद्वज्जनमण्डित बीकानेर के सुप्रसिद्ध गोस्वामी वंश के विभूषण विद्वत्प्रवर श्री फाल्गुन जी गोस्वामी महोदय द्वारा रचित 'जय भारतादय' नाम का संस्कृत काव्य, केवल अभिनव संस्कृत साहित्य का ही एक अद्वितीय ऐतिहासिक संस्कृत काव्य नहीं है अपितु नव भारत की राष्ट्र चेतना को समुचित दिशा में सम्प्रेरित करने वाले भारतीय भाषाओं के समस्त साहित्य में एक परम स्वागत योग्य सत्काव्य है।

कवि ने इसमें भारत पर चीन के विश्वासघात पूर्ण आक्रमण और भारतीय प्रदेशों पर पाकिस्तान की गृध्र दृष्टि के कारण समुत्पन्न नाना संघर्षों के वर्णन माध्यम से जिन उत्साहवर्धक और पद पद पर भारतीय सन्नीति एवं अतुलनीय शौर्य के प्रतिष्ठापक काव्यमय विशद वर्णनों का गुम्फन किया है। वे सर्वथा स्वागत योग्य और आधुनिक भारतीय कवियों द्वारा निरन्तर अनुकरणीय हैं। काव्य की भाषा शैली सर्वत्र प्रसाद गुण सम्पन्न और नाना अलंकारों और छन्दों की सुन्दर छटा के साथ व स्थान स्थान पर आधुनिक प्रान्तीय भाषाओं के संस्कृती-कृत मुहावरों से भी मुखरित है। एक आदर्श काव्य की सरणी के अनुसार इस काव्य के समस्त घटना-वृत्त नाना प्राकृतिक वर्णनों और मनोवैज्ञानिक चित्रणों से सम्बन्धित है।

आना है प्रकाशन से पूर्व मुद्रण योग्य इसका पुनर्वाचन और पुनर्लेखन अवश्य होगा और यथास्थान इसके समस्त प्रकरणों को क्रमबद्ध कर देने पर इसके द्वारा संस्कृत के काव्य संसार में राष्ट्रोन्मुखी जो सत्काव्य-प्रवृत्ति उत्पन्न होगी वह सर्वत्र समादृत होगी।

ह० विद्याधर शास्त्री

डा० फतह सिंह
निदेशक।

राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर

प० फाल्गुन गोस्वामी कृत संस्कृत काव्य 'जयभारतादर्श" इस बात को प्रमाणित करता है कि संस्कृत भी एक जीवित भाषा है। आक्रान्ता पाकिस्तान पर भारत की विजय को एक प्रबन्ध काव्य के रूप में प्रस्तुत करने का संभवतः किसी भी भाषा मे यह प्रथम प्रयास है। लेखक का संस्कृत भाषा पर अच्छा अधिकार है और उसने बड़ी ही सरल भाषा में देश-भक्ति, त्याग और बलिदान की कहानी को बड़े सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है। लेखक इसके लिए बधाई का पात्र है। क्षेत्रीय भाषा के अनुवाद सहित इस ग्रन्थ का प्रकाशन भारतीय एकता और राष्ट्रीयता के लिये बहुत महत्वपूर्ण होगा। इस पुण्य कार्य में सहायता देना प्रत्येक देश भक्त का परम कर्तव्य है।

ह० डा० फतह सिंह
निदेशक

दि० १८-१-१९६६

The 'जय भारतम्' is a work of heroic narrative poetry in Sanskrit composed by Pandit Phalgoon Goswami of Bikaner The author selects a classical language to relate and narrate the present events of Modern India It has a good bearing on national outlook and national character and traces out the phases of national history of India It may, therefore, be called a National poem The author has rightly admitted a single episode of Pakistan Military attack on Indian soil with a series of episodes that are nicely proportioned and subordinated to the main theme of the subject It follows naturally the various problems and moods with a variety of scenery and properties inside and around India The writer has given due importance to the geographical places of valour and chivalry to keep the memory of martyrs green and honoured, hence it has both an epic variety and elegiac character His objective manner of narration is commendable

I congratulate the author for writing this type of Sanskrit work at this age and recommend very strongly for the publication grant at once, to see the work in schools, colleges, Universities and Libraries of India

Sd/- B C Telang,
Professor-In-Charge,
Post-Graduate Studies in Hindi,
Marathwada University,
AURANGABAD

Dt 1-9 71

जयभारतादर्शः

आदि पर्व

उपोद्घात

महाहवे न्यस्तरथाङ्गहेति-मृ दूग्रयो-राहवयोस्तयोरच ।
किरीटिगाङ्गेय विपक्षयोर्गति न्ययन्त्रयत्तोत्र-रथांगपाणिः ॥१॥
जनप्रतिश्रुत येन रचित स्वानुकम्पया ।
तमह करुणासिन्धु प्रपद्ये शरण सदा ॥२।

उपोद्घात

महाभारत युद्ध में अर्जुन के ढीलेढाले तथा भीष्म के उग्र परस्पर सघर्ष को देखकर श्रीकृष्ण भगवान् ने, अपनी शस्त्र न उठाने की प्रतिज्ञा रखते हुए भी, उनके इस प्रकार के युद्ध की गति का नियन्त्रण किया ॥ १ ॥

इस प्रकार जिन ने एक बार चक्र लेकर तथा फिर चाबुक से ही भीष्म पर आक्रमण कर, अपने भक्त की प्रतिज्ञा का कि मैं भगवान् को शस्त्र उठाने को विवश कर दूगा पालन करवाया, मैं उन्हीं भगवान की शरण में सदा रहूँगा ॥२॥

श्रीकृष्णस्य भगवतः पादारविन्दौ शतशः शिरसा नम स्कृत्य गीर्वाण-गिरो विपश्चितां सादरं अभिवादनं कृत्वा अस्याः कृत्याः किञ्चिद् उपोद्घात-रूपं व्यपदेशयामि। भाषा सारल्यात् स्थाने स्थाने सन्धिसाधनं नैव कृतं तत् क्षन्तव्यम्।

पाकस्थानाक्रमणस्य पूर्वं केचित् श्लोकाः मुक्तकाः विनिर्मिताः। परं तदारम्भानन्तरं अन्तरात्मनः प्रेरणाद् अस्याः रूपरेखां परिवर्तितुं मनोऽकरवम्। समाचारपत्रेषु युद्धवर्णनं पठित्वा तस्य संक्षिप्तं कथानकमलिखम्। संस्कृतवाङ्मयस्य भारते आहिमालयसागरः प्रचारो निश्चितः स्वल्पोऽधिकोवा

श्रीकृष्ण भगवान् के चरणो मे सैकडो बार नमस्कार कर संस्कृत के विद्वानो का आदरपूर्वक अभिवादन कर मैं अपनी इस कृति का उपोद्घात निवेदन करता हूँ। भाषा की सरलता के लिए स्थान स्थान पर संधि की साधना नही की है। वह क्षन्तव्य है।

पाकिस्तान द्वारा आक्रमण के पूर्व कुछ मुक्तक श्लोक निर्मित किए। परन्तु उसके प्रारम्भ होने पर अन्तरात्मा की प्रेरणा से मन में इच्छा हुई कि इसकी रूपरेखा बदली जाय। समाचार पत्रो में युद्ध का वर्णन पढकर उसकी संक्षिप्त कथा लिखने लगा। संस्कृत

अतोऽखण्ड भारतवासिनां अवगमनार्थं विशेषतो बालयूना देशस्य भाविकर्णधाराणा बोधार्थं मया व्यवसितमिदम् ।

संस्कृत-भाषायाः ममाध्ययन अपूर्णं अपितु स्तोक मेव । अशिक्षितोऽस्मि इति मम स्वीकारोक्तिर्न कथमपि अत्युक्तिः पर शुद्धा सत्या। कविकुलमणेः कालिदासस्य अभिज्ञान शाकुन्तले तस्य सर्वोत्तमकृत्या सूत्रधारमुखादिय उक्तिरस्ति—

'आपरितोषाद् विदुषो न साधुमन्ये प्रयोग-विज्ञानम् ।
बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्यय चेतः ॥

भाषा का इस देश म हिमालय स लेकर समुद्र तक निश्चय ही प्रचार है चाहे थोडा या घना । अत अखण्ड भारत-वासियो के ज्ञान के लिये, खास कर बालक तथा युवा पुरुषो को जो देश के भावी कर्णधार हैं ज्ञान कराने को यह पुस्तक लिखी है।

संस्कृत का मेरा अध्ययन अपूर्ण अपि च थोडा ही है। मैं अपने आपको अशिक्षित मानता हूँ। यह अत्युक्ति नही पर तु शुद्ध सत्य है। कविकुलमणि कालिदास ने अभिज्ञान शाकुन्तल में, जो उनकी सर्वोत्तम कृति है, सूत्रधार के मुख से कहा है—"अपनी कृति से जब तक विद्वान् लोगों का परितोष न हो तब तक उसे मैं अच्छी नही मानता" ऐसे धुरधर विद्वानो को अपने काय की सुष्ठुता पर

परिवर्तिता पाद्धी ता निवेदयामि—
आत्मन्यशिक्षितानां वलवद्-प्रत्यय चेत'

फलतो ममैव कृति-दोषपूर्णा स्यादिति पूर्णा समावना। अस्यां वालचापल्य युनोन्माद' स्थविरस्य शैथल्य इति त्रयो दोषाः सहजाः। विद्वत्सु ममैव अभ्यर्थना यत् मम स्वीकारोक्ति मनसि विचार्य दोषदृष्टि जहतु महाभागा'।

यदि दोषदर्शनाभिलाषा भवेत्तर्हि काव्यादश साहित्य-दर्पण च द्रष्टव्ये। तत्र सर्वे दोषा सगृहीता सन्ति। अपरच गीताया भगवद् वचनाद् 'यथाऽऽदर्शोमलेन च' आवृत्त। यदि जयभारतादर्श दोषाकर' अनुभूयते तदा दोषाकर' एव वरम्—यत' 'एकोहि दोषो गुण-सन्निपाते निमज्जतीन्दोः

ऐसा प्रत्यय हो, तब मेरे जैसे अशिक्षित के चित्तम अविश्वास बडा प्रबल होना ही चाहिये।

निष्कष यह है कि मेरी कृति दोष पूर्ण होगी इसकी बहुत अधिक समावना है। [सस्कृत मूल उपोद्घात मे अपने बचाव के लिये जो कुछ मैंने लिखा है, उसे मैं यहा उद्धृत नही करता हू। यह क्षमा के योग्य है]

किरणेष्विवांकः' इति पुनः कविकुलगुरो-र्वचनं स्मरणीयम् ।

अलङ्कारैरलं कृत्वा शक्यं स्वात्मरञ्जकाः ।
बाहुल्याच्छ्लोक-पद्यानां महर्षेरनुकम्पया ॥१॥
स्खलितान्यार्ष-वाक्यानि भवन्तु मम रचणे ।
वृत्तशास्त्र-विरोधेऽपि स्वरच्छन्दोऽस्तु पालकम् ॥२॥
अन्यत्रुटीनां व्याप्तौतु बहुवादा भवन्ति तद् ।
रहस्य-प्रगतिच्छाया-प्रपन्नोऽहं न दोषभाक् ॥३॥

यन्मत्या मयास्या' कृत्या नामकरणं कृतं तां निवेदयामि। भारतीये महायुद्धे कौरव-पाण्डवानां समरोऽजायत। भारत-देशस्य विभाजनं अपि तच्छदृश कलह-मूलम्। एकस्यैव राष्ट्रस्य प्रजायाः सन्तत्यां धृतराष्ट्रेणामनीषिणा स्वप्रजासु अन्याय्याभिलाषां परिपूरयता बन्धुबान्धवानां मध्ये कलह उत्पादितः। अत्रापि प्रायशः इदमेवेतिवृत्तं सञ्जातम्। पाकस्था.

इस पुस्तक के नाम के विषय में यह निवेदन किया जाता है। भारतीय महायुद्ध में कौरव पाण्डवों का सग्राम हुआ। भारत देश के टुकड़े होना इसी प्रकार के कलह का मूल है। एक ही राष्ट्र के निवासियों

कौरवा भारतीया पाण्डवा इत्यभिधारणीयम् । जयो भारत महाभारत इति अस्य आकर ग्रन्थस्य त्रीणि रूपाणि विद्वै-र्मन्यन्ते । महाभारत तु महोदधिरिति सिद्धांत । इद मम पुस्तक तु सीकर मात्र भवेत् । भारत-पाक्य-कलहोऽपि महा-भारत-समरस्य कण मात्र एव । पर भारतद्वारा पाक्यातिवा-यिन रणे भङ्ग तस्याधीश्वराणां च मुखभजन कृतम् ।

में राष्ट्र के मालिक (धृतराष्ट्र) ने नासमझी से उनके बीच म कलह का बीज बो दिया । अपनी अ यायपूर्ण अभिलाषा स भाई बन्धुओ म परस्पर द्वेषाग्नि प्रज्वलित कर दी । यहा भी कौरव पाण्डवो के मध्य-जैसी बात पैदा कर दी । पाकिस्तानी कौरव तथा भारतीय पाण्डव यह समझना चाहिए ।

उस आकर ग्रन्थ के तीन रूप जय, भारत तथा महाभारत विद्वानो द्वारा माने जाते हैं । प्रामाणिक लोग महाभारत को समुद्र समझते हैं । यह मेरी पुस्तक तो बूद है । भारत-पाक्य सघर्ष भी महाभारत युद्ध के सामने एक कण के बराबर है । परन्तु भारत ने दुष्ट पाकिस्तान को रण म ठडा कर दिया । उसके अधिनायक को मुह-तोड जवाब दिया । भारत की इस सम्बन्ध

भारतीयानां अत्र विषये विजयप्राप्ती राष्ट्रस्य गौरवास्पदम्। अतः जयभारत इति घोषो यथार्थ।

अद्यतनस्य भारतस्य पूर्णस्वरूप-दर्शनहेतवेऽपि बृहत्तर-ग्रन्थ. अपेक्षते। इद पुस्तक तु आदर्शः। एतेन एकाङ्गस्य एक-पक्षस्य सूक्ष्मदर्शनमेव सम्भम्।

महाभारतस्य मूलकथावस्तु अर्थात् कौरववश वर्णनम् अपि विस्तारमपेक्षते। पाण्डवा अपि कौरवा सर्वे भारताश्च। पर दुर्योधनस्य विद्वेष एव तेषा पृथक् नाम-करणस्य

में विजय राष्ट्र के गौरव का कारण है। इसलिए 'जय भारत' घोषणा यथार्थ है।

आज के भारत का पूर्ण दर्शन कराने के लिए भी बडे भारी ग्रन्थ की आवश्यकता है। यह पुस्तक तो आदर्श (दर्पण) है। इससे एक ही अंग तथा एक ही तरफ का सूक्ष्म दर्शन सम्भव है।

महाभारत की मूल कथावस्तु अर्थात् कौरव वश का वर्णन भी विस्तार चाहता है। पाण्डव भी कौरव ही थे या सब भारत थे। परन्तु दुर्योधन के विद्वेष ने ही इन की पृथक् सज्ञाए कर दी। इसी प्रकार पाण्डवो का आचरण भी दुर्योधन की तरह

कारणम् । तथैव पाश्चात्या आचारा तच्छ्दशम् । द्वयोर्यत किंचित्साम्य तत्प्रतिपाद्यते इह । अत्र जोहनबुल. (ब्रिटिशः) धृतराष्ट्र धार्तराष्ट्रा दुर्योधन-दु शासनादय, अयूब भुट्टादयश्च । जिन्ना शकुनि । दुर्योधनन अ गराज्ये कर्ण इव अभिषिक्त' चाऊ एन लाई । तस्मै अपात्राय अन्यायेन प्राप्तस्य भारतस्य अग अयूबेन समर्पितम् । "चीनी हिन्दी भाई भाई" इति विश्वासनपर' चीनाधीश्वर कर्ण इव कौन्तेय' पर "विषकुम्भ पयोमुख" इत्युपमित । दुर्योधनस्य पर आशास्पदम् ।

का है । महाभारत और इस पुस्तक की जो समानता है वह यह है । यहां जोहन बुल (ब्रिटिश) धृतराष्ट्र है । उसके पोष्यपुत्र (धातराष्ट्र) दुर्योधन दु शासन आदि अयूब भुट्टो वगरह हैं । जिन्ना शकुनि । दुर्योधन ने अ ग राज्य पर कर्ण का अभिषेक किया था । अयूब ने भारत के अ ग पर चाऊ एन लाई को बिठा दिया । वह अ ग अयूब ने अपने आप अ याय से हडप रखा था । और अपात्र चाऊ को दान कर दिया । चीनी हि दी भाई भाइ' यह ढींग हाकने-वाला चीन का अधीश्वर कौन्तेय कर्ण की भाति विष-भरा दुध-मुहा घडा ही है । दुर्योधन को उससे बडी आशाए था ।

दुर्योधनो मन्युमयो महाद्रुमः स्कन्धो जिन्ना भुट्टोऽस्य शाखाः।
दुःशासनः पुष्पफले समृद्धे मूलं राजा धृतराष्ट्रोऽमनीषी ॥१॥
युधिष्ठिरो धर्ममयो महाद्रुमः स्कन्धोऽर्जुन श्चौधरिस्तस्य शाखा॰
कीलरबन्धू पुष्पफले समृद्धे मूलं धर्मो लालकः शास्त्रिवर्य्यः ।२।

भुट्टोऽयूबतटा–ममेरिकजला बृटेन–चीनह्रदा
पैट्टन्जेट विमान-मगमका भैक्ष्यास्त्र दुःस्रोतसम् ।

महाभारत में कौरव तथा पाण्डव पक्षों को विशाल वृक्षों के रूपक में दर्शाया है, उसकी छाया लेकर यहां भी पापयुक्त युद्ध छेड़ने वाले क्रोधभरे अयूब को बड़ा वृक्ष माना, उसका तना जिन्ना, भुट्टो शाखाएं भ्रष्ट शासन समृद्ध पुष्प तथा फल मूल अज्ञानी राजा धृतराष्ट्र (अंग्रेज) हैं।

युद्ध में धीर भारतीय सैन्य धर्ममय बड़ा वृक्ष, तना वायु-सेनानी अर्जुन सिंह, चौधरी उसकी शाखाएं, कीलर बन्धु समृद्ध पुष्प फल तथा धर्मरूप लालबहादुर शास्त्री मूल हैं।

श्रीमद् भगवद् गीता तथा भासकृत ऊरुभंग नाटक की छाया में पाकिस्तान के आक्रमण को दुस्तर नदी का रूप दिया जाता है, यथा—

इस नदी के भुट्टो और अयूब तट हैं, अमेरिका जल, बृटेन

तीर्णा-शत्रु नदी विपातसिक्ता येन प्लवेनार्यभूः
शत्रूणां तारणेषु नः स भगवानस्तु प्लवः केशवः ॥३॥

पाण्डवानां मातुलः शल्यः दुर्योधनस्यातःथेन जितः साधितो वा पाण्डवानां सुहृद् गण्यो मान्योऽपि पाक्याय शल्यानि शस्त्राणि अजेय टैंकानि जेटविमानानि दत्वा शल्यस्याचरणं अमेरिकया आचरितम् । अ कूल इति आंग्लभाषायां मातुलवाची शब्दः अकलटोम अमेरिकावासिनश्च उपनाम । तस्या इद चेष्टित

श्रोर चीन गड्ढे, पेट्टन टैंक जेट विमान् क्रमश लहरें श्रोर मगर, भिगासे प्राप्त शस्त्र बुरे सोते, तथा ढोठला रेता है । जिस नौका से आर्य भूमि भारत ने इसे पार किया वही नौका-भगवान् केशव-शत्रुओं के आक्रमण रूपी नदियों स (नित्य) पार लगावे ।

पाण्डवो के मामा शल्य को दुर्योधन ने खिलापिलाकर अपने पक्ष में कर लिया। जो पाण्डवों का मित्र गिना जाता था, वह भी हुआ उनके विपरीत । इसी तरह अजय टैंक, जेट विमान आदि पाक्य को अमेरिका ने देकर शल्यकासा आचरण किया (शल्य का अर्थ शस्त्र है) अ कल अ गरेजो म मामा को कहते हैं । अ कल टोम अमेरिका वासियो का उपनाम है । भारत ने अमेरिका को बतलाया कि पाक्य को शस्त्रास्त्र देना भारत के हित पर आघात होगा ।

भारतस्य हित-हानिकर भविष्यति इति भारतेन प्रत्यादेशने कृतेऽपि सा पाकस्य प्रत्याख्याने अपि कर्तुं न समर्थाऽथवा नैच्छत् ।

हते द्रोणे राजा दुर्योधनः कर्णं सेनापत्येऽभिषिषिचु-स्तस्य यन्तृकर्म कर्तुं भारतयन्तृतुल्य सत्वादि-विविधचाटुभि-स्तुष्ट तस्य स्पर्द्धालु शल्य सोऽभ्यर्थयामास । अत्र विषये शल्यस्य वचन स्मर्तव्यम् । स उवाच-'राधेयस्य सारथ्य-मातिष्ठे । समयश्चमे उत्सृजेय यथाश्रद्ध-मह वाचोऽस्य सन्निधौ ।'

अमेरिका ने वचन दिया कि ये शस्त्र भारत के विरुद्ध प्रयोग में नही लाए जाएगे । पाकस्य तब भी इसको नही मान रहा था । फिर भी अमेरिका ने उसे डाटा नही ।

द्रोण के मारे जाने पर दुर्योधन ने कर्ण को सेना-पति के पद पर अभिषिक्त किया । कर्ण का सारथि बनने के लिए उसी से स्पर्द्धा रखने वाले शल्य से प्राथना की गई । उसको अर्जुन के सारथि (भारत के नियामक) कृष्ण के समान बल-बुद्धि-शाली आदि अनेक खुशामदी के शब्द कहकर राजी किया ।

अस्माक-मस्मिन्सन्दर्भे कणश्चाऊ शल्योऽमेरिका पारुर
स्पद्धर्वालू पाकस्य कृपालू। भारत प्रति पाकाक्रमणे स
चाटुकारोंऽकूलटोमोऽपि यथाश्रद्ध वाच उत्ससर्ज 'सर्वशो
वितथानि ।

अद्यतने शिक्षणे परीक्षायुगे विद्यार्थिन कृतिः प्राप्तव्या
येषु शत-सख्यकेषु त्रयस्त्रिंशत् अथवा तदधिक स्वीकार्य
उत्तीर्णकर्तृक मन्यते। ममेय प्रथम कृति-रनया दृष्ट्या तु
मान्या एव भविता इति मेदृढ, प्रत्यय।

मम कृतिरिय चम्पूकाव्य अस्ति न तु इतिहास सविस्तारः।

या जातु पाश्चात्य-सस्कृति, पाश्चात्यानां सस्कृतिर्भवेत्।
परन्तु भारतीयाना तु सा दुष्कृति-रेवास्ति। आर्यपुरुषाणां

इस पर शल्य ने जो कहा वह स्मरणीय है। शल्य ने कहा— मैं
जो चाहूँ सो करण को कहूँगा।" हमारे इस सन्दर्भ में कण चाऊ
है, शल्य अमेरिका है। भारत पर पाकिस्तान के आक्रमण के सम्बध
में खुशामदिया मयूब, शल्य अमेरिका तथा कण चाऊ ने भी अपनी
मनचाही बातें कहीं। व सब झूठी काट से भरी थी।

जो पाश्चात्य सस्कृति है वह चाहे उनकी सस्कृति हो, पर भारत
के लिये वह अच्छी बात नहीं। आर्य पुरुषो के नामो में 'अजातशत्रुटाप्'

अभिधानषु 'अजाद्यतष्टाप्' सूत्रेण गुप्त मित्र मिश्र राम कृष्णादिषु अजा एडका चटका कोकिलावत् तान् गुप्ता मित्रा मिश्रा रामा कृष्णा इति कल्पयित्वा पुंसि स्त्री-भाव आविष्कृतम्। ठाकुर-स्थाने टगोर स्वीकृत्य परमनर्थका-मन्धानुकरण-मुदपतत्। अद्यापि सोऽनर्थो न परित्यज्यते। अन्यच्च, पूर्ण शुद्ध नाम विहाय उपाङ्गम्यैव प्राधान्यदानेन नाम्नो आग्ल-आद्याक्षराण्येव योजयित्वा असाध्य वैकल्य वैकल्प्य च समुपस्थिते।

फलत: पूर्ण-नाम नेपथ्ये तिरस्करिण्या, पृष्ठे वा प्रच्छन्न वर्तते। उदाहरणार्थं जी डी एफ, जी एच., डब्ल्यू आई चिन्त्यानि। एतानि बहुश सवथा अयथार्थानि अनर्थ-कराणि सन्ति इत्यत्र न कोऽपि विवाद:। निदानमह उपा-ह्वानि एव कथितु क्षम:। अत्र मम विवशता क्षन्तव्या।

सूत्र से गुप्त, मित्र, मिश्र, राम, कृष्ण आदि को अजा एडका चटका कोकिला की भाति गुप्ता, मित्रा मिश्रा, रामा कृष्णा इत्यादि बनाकर पुरुषों म स्त्री भाव लापटका। ठाकुर के स्थान में टगोर को मानना अन्धानुकरण ही हुआ। आज भी वह अनर्थ हटाया नहीं जा रहा। इससे आगे पूरे शुद्ध नामो को छोड कर उपनामों या नाम के टुकडो के अ गरेजी आद्याक्षर लिखकर असाध्य विकलता तथा विकल्पता पैदा कर दी।

आभार निवेदनम्

अस्य ग्रन्थस्य निर्माणे साहाय्य-प्रदातृणां प्रति ममाभार-निवेदनं कर्त्तव्यं मन्ये। समाचार पत्रेषु युद्ध-वृत्तान्तानां लेखका', 'भारतपाक संघर्ष' नाम आंग्लभाषाया' पुस्तकस्य निर्मातारःप्रकाश-प्राप्त मेजर-सीताराम-जोहरिरामारस्य भारपदम्। तेभ्य-स्ततसादरं निवेदयामि। अति समादरेण च पुनः मम बन्धु-वरान् श्रीधनरूप गोस्वामीन् ममाभार निवेदयामि। ते पात्र-

आभार निवेदन

इस ग्रन्थ के निर्माण में सहायता देने वालों के प्रति अपना आभार निवेदन करना अपना कर्तव्य समझता हूं। समाचार पत्रों में युद्ध के वृत्तान्त के लेखकों 'भारत पाक संघर्ष' नामक अंगरेजी की पुस्तक के निर्माता प्रकाश-प्राप्त मेजर श्री सीताराम जोहरी इस आभार के पात्र हैं। उनको सादर आभार निवेदन करता हूं। मेरे बन्धुवर्य श्री धनरूप गोस्वामी को भी अति समादर के साथ अपना आभार निवेदन करता हूं। उनको विद्वत्ता प्रमाण-पत्रों

माण शास्त्र-विचक्षणाः प्रमाणपत्रेभ्यः पराः पल्लवग्राहि-पाण्डित्यस्यापहर्तारोऽद्यतने परीक्षायुगे असख्य-प्रमाणपत्रे-प्सूनां तत्प्राप्त्यर्थं अध्यापनाय तेषु पल्लवग्राहिपाण्डित्य निरा-करण हेतवे अहनिशमनावृत-कपाटद्वारस्थाः स्वय च पण्डित-मन्यतायै आवृतकपाटस्थाः पण्डितैर्मान्या सन्ति तैर्महोदयैरस्य ग्रन्थस्य परिशोधन कृतम्।

की सीमा से परे है। अत उनसे सीमित नही है। पल्लवग्राहि पाण्डित्य (छुट पुट ज्ञान) को दूर करने वाले, आज कल के परीक्षा युग में असख्य परीक्षार्थियो, प्रमाण पत्रों की इच्छा रखने वालो को, पढाने के लिए और उनके नोट आदि से अधूरे ज्ञान की सपूर्ति करने को उनका दरवाजा रात दिन खुला रहता है। तथा स्वय पण्डित म-य बनने के लिये दरवाजा सदा ब-द रखते हैं। पण्डित लोग जिनका मान करते हैं। इन महोदय ने इस ग्र-थ का परिशोधन किया है।

मंगलाचरणम् भगवदीयञ्च

पायाद्दो घ् मणिवश विभूषणस्य,
पादुयुग जनमन स्पृहणीय वस्तु ।
यत्सार्व–भौमपदवीमभजत् सुराज्ये,
श्रारवास्य पूः सहजमातृसुबान्धवारच ॥'॥

पायादसौ कुरुकुलार्णव–मग्नयोषित् ।
पत्रोर्ण विस्ता–कृदगुलिकाप्रुगरे' ।

मंगलाचरण तथा भगवच्चर्चा ।

सूर्य वश के विभूषण भगवान् श्रीराम की पादुकाए हमारी रक्षा करो। ये भगवान् के भक्तो की मनचाही वस्तु है। इनकी सेवा के फन से राम राज्यको लक्ष्मी को पूण पुष्टि हुई । इनको पाकर अयोध्या की प्रजा भगवान् के भ्रातृगण, माताए तथा उनके बन्धु बान्धव आश्वस्त हो गये ॥१॥

कुरु कुल रूपी समुद्र में डूबती हुई द्रौपदी के चीर को बढाने वाली भगवान की अगुली हमारी रक्षा करे । इन्द्रमणि की शुभ्र आभावाली वह कौरवों की सभा में प्रकट हुई और उससे

इन्दीवरप्रभमणि प्रतिमा समार्या,
नैराश्यविस्मय सुतुष्टिकरी रराज ॥२॥

पायात् सौ मुरलिकाधर-बिम्बरक्ता,
कृष्णस्य पाणिमरसीरुह–सेव्यमाना ।
आकुञ्चति प्रभुवरस्य वपुस्त्रिधा वै,
यच्छादयत्यविरत कुहराणि यस्याः ॥३॥

नटराजम्यावतु नो डमरु गुंणयुतोऽनुविद्धः सूत्रैः ।
सूत्राणां मुनिवरेण दृष्टानां वक्ता विलक्षणानाम् ॥४॥

दुर्योधनादि को निराशा, अ य सदस्यों को विस्मय तथा पाण्डवों को प्रसन्नता हुई ॥२।

भगवान् कृष्ण के अधर–बिम्बसे लाल तथा उनके कर कमलों से सेवित मुरली हमारी रक्षा करो। भगवान् उसके छिद्रों को ढाकते हैं। तथापि उन त्रिविक्रम रूप भगवान् को वह तीन अंगों पर टेढ़ा करने का कारण बन रही है ॥३॥

भगवान् नटराज का गुण युक्त डमरू जो सूत्रों (धागों) से गुथा हुआ है तथा मुनिवर पाणिनि द्वारा दृष्ट व्याकारण के विलक्षण सूत्रों का वक्ता है, वह हमारी रक्षा करो ॥४॥

हरितेजोंशसमरा विम्बोऽलिन्द्रोऽब्जरच ये कचित् ।
तेभ्यो नमोनमोऽस्तु भगवदंशोपमार्हतां प्राप्ताः ॥५॥
विनायके क्रूरदृष्टिं सिंहस्य परिवर्जितुम् ।
वात्सल्यस्यातिरेकेण पार्वत्यन्तः पट ददौ ॥६॥
विघ्नराज–महासेन–सर्वज्ञत्रिपुरान्तकै ।
कृत मन्दस्मित तैरच चक्षुर्भि परिलक्षितम् ।७॥
द्वादशज्योतिर्युग्मे द्वादशात्मेष्ववालिक लोचनेषु ।

भगवान् के अश से हो उत्पन्न परन्तु भगवान के अ ग प्रत्यगों को जिनको उपमा दिये जाने का सौभाग्य है, जैसे बिम्ब, कमल, उनको बार बार नमस्कार ॥५॥

गणेश भगवान पर सिंह की क्रूर दृष्टि को रोकने के लिए माता पार्वती ने अपने वात्सल्य भाव की अधिकता से अपने वस्त्र से बीच मे अन्त पट दे दिया। इस पर विघ्नराज (गणेश) महासेन (कुमार) तथा त्रिपुरान्तक (भगवान) ने म द २ स्मित किया। यह ऊपर से नहीं किन्तु उनके नेत्रो से झलकने लगा। [भवानी क्रुद्ध न हो जाय इस भय से ये भीतर भीतर ही मुस्कुराए] पच मुख शकर, पच मुख गणेश, षण मुख सोमकार्तिक फिर उनके सारे ललाटों के नेत्र मिलकर शिव के द्वादश ज्योतिर्लिंग के तथा सूर्यों के

मात्रोऽस्तनो नित्य पित्रोर्भ्रात्रो-र्जनन्यास्च ॥८॥
रत्नाकरऽधिवासश्च भजते सन्निधिं श्रियाः ।
अनागत-विधातृत्व श्वश्रेयः साम्प्रत विभो' ॥९॥
हाला-हल त्रिशूलञ्च फणिना सहतिस्तथा ।
वक्रश्चन्द्रो धुनी दिव्या भगस्य कल्प-साधकाः ॥१०॥
आविष्कृत व्रजे चैक घनश्याम कदम्बकम् ।
अन्तरिक्षे तथा भूमौ चपलेन्द्रधनुर्युतम् ॥११॥

समान इस प्रकार अनेक नेत्र चमक उठे। इन सब माता पिता भाई-के नेत्र हमारी रक्षा करें ॥६-८॥

भगवान् विष्णु (जगत् के पालनकर्त्ता) ने अपनी सम्पन्नता अभी से बना रखी है, क्योकि ये रत्नाकर म तो शयन करते हैं, महालक्ष्मी को अपने पास रखते हैं। यह उनकी दूर दृष्टि (अनागत विधातापन) का प्रमाण है ॥९॥

भगवान् शकर का काय सृष्टिका लय करना है। उनके साधन के लिए हालाहल विष, त्रिशूल विषधर सर्पोंका समूह, टेढा चन्द्रमा तथा गगा उनके पास हैं ॥१०॥

व्रज में घनश्यामो का समूह निकल आया है। पृथ्वी पर भी तथा आकाश में भो फैला हुआ है। और इनमें बिजली तथा इन्द्रधनुष भी

विषधरान्प्रलम्बं वै शितिकण्ठोऽकरोद्गले ।
मणिभिर्दिव्यतापूर्ति विषस्य विषमौषधम् ॥१६॥
त्रिलोचनः स्वरारिश्च मघवाभूत्सहस्रदृक् ।
संख्या-गुण-चरित्राणां भेदः कामस्य कारणम् ॥१७॥
भवाब्धि-गोवत्सपदं कर्तु-मलिपदद्वपदोऽब्धौ ।
बालतुल्यनिसर्गाः किं चित्रं लङ्काप्तये सेतुबन्धः ॥१८॥

शितिकण्ठ भगवान् शंकर गले में सर्पों की माला धारण करे हुए हैं। या तो अपने दिव्य स्वरूप में विष से त्रुटि न आजाय इस लिए, इसकी मणियों से पूर्ति करने को या विष की दवा विष ही है इसलिए ऐसा कर रहे हैं ॥१६॥

भगवान् शंकर त्रिलोचन हैं, इन्द्र सहस्राक्ष है। इन नेत्रों की संख्या गुण तथा इनके चरित्रों के भेद का कारण काम है। शंकर ने काम को भस्म किया इन्द्र काम के वशीभूत हुआ और उसने शाप में भग (अक्षि) पाई ॥१७॥

भगवान रामके वानराने सागर में पत्थर डाले तो क्या हुआ — बालक तथा वानर एकसे स्वभाव के होते हैं। भक्तों द्वारा तो भव सागर बछड़े के खुर के गड्ढे के समान किया जा सकता है। लंका में पहुंचने के वास्ते सेतु के बांधने का काम तो ऐसा ही था।

हितवाक्यपराङ्मुखस्य दर्पाभिभूतस्य कोणपस्य ।
रामश्चकार निमित्त शस्तु श्रवणघ्राणानि प्राक् छिदा ।१६।

कृत न मन्येयमिति प्रभूरय,
स्रज दधातीह हर. फणानवाम् ।
गलेषु गाप्योपकृति-प्रमाण धृता,
शिति सिन्धुप्रमन्थने ताम् ।।२०।।

दीप्तिमन्त तनु बिभ्रद् दीप्तिमन्त सुधाकरम् ।
दीप्तियुक्ता धुनीं दिव्यां मणिधरान् दीप्तिहरकान् ।।२१।।

रावण राक्षस अपने हित को बात नही मान रहा था और अपने घमण्ड में चूर था । अत उसका अपशकुन करने के लिए ही राम ने पहले ही उसकी बहिन की नाक तथा कान काट डाले । मानो उसके कान निरर्थक थे तथा उसकी नाक भी कटेगी ।।१८-१६।।

अपने किये हुए उपकार की विज्ञप्ति नही करनी चाहिए यह सोचकर शभु सर्पों की माला पहनते हैं, ताकि उसका चिह्न जो समुद्र म थन के फल उत्प न विप को पीने का है छिपा रहे। (उसे देख कर लोगो को उनके परम उपकार की बार बार याद आती है।) शकर का विग्रह दीप्तिमान् शीश पर च द्रमा दीप्ति वाला है, वही दीप्तिमान् गगा है । इसकी पूर्ति मणिधर सप कर देते हैं ।।२० २१।

प्रसिद्ध चौरोऽपि सनन्दनन्दनो,
विराजते शोभन आपणे क्षणे ।
धनार्जनस्य क्षमता वणिग्जने,
स्पृहालुता स्यात् कमलापते' स्वयम् ॥२२॥

तुलाच सत्य शपथ च भाषित,
जहौ स पण्ये वणिजश्च चेष्टितम् ।
इद हि मन्ये स्वजन प्रसादन--
मपेक्षते भक्तजनस्य शुद्धधीः ॥२३॥

वह प्रसिद्ध चोर नन्दन दन दीपावलि उत्सव पर सु दर हाट में विराजते हैं। इसका कारण वणिक में धन कमाने की क्षमता के प्रति स्वय लक्ष्मी पति मे स्पृहा-लालच-पैदा कर देना है। परन्तु तौल से, मोन से सत्य से, शपथ से, भाषण से बनिये में पैसा मारने की प्रवृत्ति है उसको उन्होने छोड दिया। हाट मे बैठकर भी वह यह सब नही करते। इसको मैं उनकी भक्त वत्सलता ही मानता हू अत उस भक्त (बनिये) को चाहिए कि वह इन बातो को छोड कर शुद्ध बुद्धि रखे ॥२२-२३॥

नमस्तेऽस्तु गजेन्द्रारे गजेन्द्रारिनिषूदन ।
निभरीं भक्तिमार्तस्य यच्छ गर्हं मद हर ॥२४॥

गरुडध्वज सर्पारे सर्पालङ्कृतिवल्लभ ।
त्वच्चरित्रे दृढां प्रीतिं यच्छ जिह्मगतिं हर ॥२५॥

गोपालक व्रजे वेणोर्दधद् वेणोश्च वादक ।
जन प्रेरय सन्मार्गे तद्वाणीं कुरु वल्गुताम् ॥२६॥

हे कुवलयापीड गजेन्द्र के शत्रु गजेन्द्र को मोक्ष देने के लिए ग्राह को मारने वाले तुम्हें नमस्कार है। गजेन्द्र की भांति मुझ आर्त को निभरा भक्ति प्रदान करो और हाथी को जो निन्दनीय मद होता है उसी प्रकार का मद मुझ से हरलो ॥२४॥

हे गरुड़ध्वज, कालिय सर्प के शत्रु सर्पों के भूषण वाले शंकर के प्रिय, आपके चरित्र में दृढ प्रेम प्रदान कीजिए और सर्प कीसी टेढी चाल (कपट आदि) को मेरे हृदय से हर लीजिए ॥२५॥

हे गोपाल व्रज में लकुटी धारण करने वाले, वंशी बजाने वाले, अपने भक्तों को (गौओं की भांति) सन्मार्ग में लगा तथा उनकी वाणी को वंशी की भांति मधुर (तथा सत्य) बना। भगवान् आप गिरिराज पर विहार करते हैं, गिरिराज को धारण करने वाले हैं। मैं आपकी

नगे विहारशील-स्त्व नगोद्धरण-सक्षमः ।

वन्देऽहं भगवन्देहि दृढतां च सहिष्णुताम् ॥२७॥

नीलकण्ठप्रिय वन्दे शिखा-चन्द्रक-भूषणम् ।

नीलकण्ठमहं वन्दे शिखा-चन्द्रक-भूषणम् ॥२८॥

युयुत्सवः कुरुक्षेत्रे शङ्खान्दध्मु रुपक्रमे ।

पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनञ्जय. ॥२६॥

वन्दना करता हूँ आप मुझे पर्वत जैसी दृढता तथा सहिष्णुता प्रदान कीजिए ॥२६-२७॥

नीलकण्ठ शंकर के प्रिय, शीश पर मोरमुकुट धारण करने वाले, तथा शीश पर चन्द्रमा को धारण करने वाले नीलकण्ठ शंकर को मैं प्रमाण करता हूं ॥२८॥

कुरु क्षेत्र में युद्ध के उत्सुक लोगो ने अपने अपने शंखो की ध्वनि की। कृष्ण ने पाचजन्य (पञ्चजनन्नर से प्राप्त) तथा धनञ्जय अर्जुन ने देवदत्त (भगवान् का दिया) शंख बजाए। यह युग-युग से चली आई (नरनारायण से लेकर) परम्परागत मैत्री का स्मरण है। जब पितामह ने सबसे पहले शंख बजाया तब पार्थ (अर्जुन) तथा उसके सारथी ने भी बजाया। (मानो भगवान

लक्षणानि च सख्यस्य शाश्वतस्य युगावधौ ।
दध्मौ पितामह. शख स्वकीयौ पार्थसारथी ॥३०॥
अयुयुत्सु नियन्ता स यन्ताऽखिल महायुध ।
नियन्ताखिल विश्वस्य सर्वथाप्यनियन्त्रित. ॥३१॥
काकेनगीतचरितः काकापकृतक्षान्त शाशकश्च ।
काकपक्षधरः सैव काकश्रोतृध्वज-स्वर्थंच ॥३२॥
विभुर्भक्त-पराधीनोऽनीश' सर्वेश्वरस्तथा ।
इय च सूनृता वाणी न च काकुः कदापि सा ॥३३॥

ने उस परम्परा की पुष्टि की) ॥२६-३०॥

भगवान् युद्ध मे भाग नही ले रहे थे परन्तु सारे महायुद्ध के चालक थे। अखिल विश्व के नियामक थे पर तु किसी से नियन्त्रित नहीं थे—सर्वतन्त्र स्वतन्त्र थे ॥३१॥

भगवान् का चरित्र काकभुशुण्डि ने गाया, जयन्त (काक) ने उनका अपकार किया (श्री सीता के चरण कमल पर चोचमारी)। भगवान् ने उसे क्षमा कर प्राणदण्ड नही दिया। परन्तु उसे काना करके दण्ड भी दिया। वे काकपक्ष धारण करते हैं तथा काक भुशुण्डि का श्रोता गरुड उनका वाहन तथा ध्वजा का चिह्न है ॥३२॥

वे विभु होकर भक्त के अधीन हैं, अनीश सबके ईश्वर हैं। यह सर्वथा सत्य बात है, इसमें लागलपेट किसी तरह की नहीहै ॥३३॥

श्रीदाम्न. पृथुकं पत्नी पूर्वस्मृत्या-मुपाहरत् ।
पृथुकत्रयसयोगो वयस्कौ पृथुकावुभौ ॥३४॥
चेष्टितानि विभिन्नानि हस्ताब्जानाञ्च संहतिः ।
श्रीदाम्नो गोपनीयत्व चतुर्बाहो र्दृढाग्रहः ॥३५॥
प्रतिषेधोमहालक्ष्म्या अजनि प्राज्य-कौतुकम् ।
अर्थानां भिन्नता चैव कारण प्रतिपाद्यते ॥३६॥
श्रीदामाकिंचन भूरि महार्घं द्वारकाधिपः ।
श्रीरत्यन्त श्रियाजुष्ट पृथुक च विवेद तम् ॥३७॥

भगवान् के पास जाने को श्रीदामा को विदा करते हुए उसकी पत्नी ने पुरानी बात याद कर, भगवान् के लिए उपहार रूप से पृथुक (चिउडा) दिया। वहा पृथुकों की तिकडी बन गई, क्योंकि भगवान् तथा सुदामा दोनों बालमित्र थे। वहा प्रत्येक व्यवहार भिन्न २ रहा और हाथो का समूह जुटगया। श्रीदामाने उसे छिपाना चाहा, चतुर्भुज भगवान् उसको झपटना चाहते थे और दृढ आग्रह कर रहे थे। लक्ष्मी भगवान् को रोक रही थी कि अब बस कीजिए। इस सबसे बडा तमाशा बन गया। इन लोगों के भिन्न २ अभिप्राय थे। श्रीदामा तो उसको नाकुछ चीज समझते थे, द्वारकाधीश बहुमूल्य, लक्ष्मीजी अत्यन्त ही श्रीसम्पन्न ॥३४ ३७।

खर्व—स्त्रिविक्रमो विप्रो व्याहृतिपूल्लिलेख तम् ।
शब्दब्रह्मैन्द्रचाप च पदभ्यां वाल्य कुतरङ्गलम् ॥३८॥
फणाग्र—पत्रोपरि पन्नगस्य—
तथोर्मिजाले रविकन्यकायाः ।
अवर्णनीय कविभि सुविज्ञै—
र्बभूव कृष्णस्य विचित्रनृत्यम् ॥३९॥
एकाकिनश्चञ्चल विम्बमूर्तिभि—
रेकोत्तर धृद्धिगत सुमण्डलम् ।
विद्याधरै—र्गीति सुवाद्यमुत्स्वन,
लोकोत्तर प्राणभृतां प्रहर्षणम् ॥४०॥

छोटे से वामन त्रिविक्रम ब्रह्मचारी ने भू भुव स्व व्याहृतियों में शब्दब्रह्म आकार तथा इन्द्रधनुष ही अपने पैरों से लिखा यह उनकी बाल्य क्रीडा ही थी। इसमें बलि को छलने की क्या बात थी ॥३८॥

श्री यमुना की तरंगों के जलपर सर्प के फणों के छत्ते पर कृष्ण भगवान् का अद्भुत नृत्य हुआ जो कवियों विद्वानों के द्वारा अवर्णनीय था। वह अकेले भगवान् के चञ्चल बिम्बों की मूर्तियों से उत्तरोत्तर बढ़ता हुआ मण्डल बन गया। उसके साथ २ विद्याधरों के सुन्दर गीत बाजों के स्वरों से लोकोत्तर हृदय हो गया

सानन्दमानुनिजदिव्य–भानुमि–
वैवस्वतो दण्डनियामक–कर्म' ।
छाया च सज्ञा निजप्राकृतै-गु णै–
रभ्यर्चय–न्विश्वविमोहन हरिम् ॥४१॥

प्रभवतु रविकन्या निर्विषा स्वादुतोया–
पिवतु जलमनल्प गोकुल स्वैरमस्या' ।
विहरतु च तटेऽस्या निर्भय गोपवृन्दः
प्रवितरतु शुभ न सन्तत बालकृष्ण' ॥४२॥

और उससे वहां के प्राणी नरनारी पशुपक्षि को हर्ष हुआ। उससे सूय को, यम को, छाया तथा सज्ञा (क्रमश यमुना के पिता भाई तथा दोनो माताओ को आनन्द हुआ अत उन्होने अपनी किरणो, अपने नियामक शासन, प्रतिबिम्ब तथा चेतना से विश्व को मोहने वाले भगवान् की अर्चना कर उनके नृत्य का वैभव बढाया। अब भगवान् की इस कृपा से (कालिय के यहा से निकल जाने से) यमुना का जल निर्विष तथा स्वादिष्ट हो। गोकुल मन चाहा जल पीए गोपलोग उसके तटपर निर्भय विहार करे और बाल कृष्ण भगवान् हमारा निरन्तर शुभ करें॥३९–४१॥

तुतला बोलने वाले घुटरुओं से चलते हुए नन्दराय के आगन में मिट्टी खाने के बहाने से माता के आदेश पर बालक हरि ने

वक्तुण्डवान् जानुभ्यां क्रीडन्नदस्य प्राङ्गणे।
मृद्-भक्षणव्यपदेशेन मात्रादिष्टो हरि शिशु ॥४३॥
मुखाम्भोजपुटे स्वीये विश्वरूपमदर्शयत् ।
दुर्हृदा प्रेरित कृष्णः कौरवाणा च ससदि ॥४४॥
धृतराष्ट्र विश्वरूप तत्सुतानाञ्च शासनम् ।
परम गुह्यमध्यात्म ज्ञान दत्त्वार्जुनं ततः ॥४५॥
चक्षुषाऽभ्यर्थितो रूप दिव्येनादर्शयच्च तम् ।
असुर च बलिं पश्चात् प्रत्यन्त लोकविस्ततम् ॥४६॥
प्रादर्शयन्निग्रहकर रूप त्रैविक्रम निजम् ।
रसानुभाव-बाहुल्य वात्सल्य प्रमुख तत' ॥४७॥

अपना मुख कमल खोलकर उन्हे विश्वरूप दिखाया। दुष्ट दुर्योधन की प्रेरणा से कृष्णने कौरवो की सभा में विश्वरूप धृतराष्ट्र को दिखाया, तथा उसके पुत्रो का शासन किया। फिर अर्जुन को परमगुप्त अध्यात्म ज्ञान देते हुए उसकी प्रार्थना पर उसे दिव्य चक्षु देकर विराट्रूप दिखाया। पीछे बलि असुर को लोक विस्तृत त्रिविक्रम दिखाया तथा उसकी अनुचित अभिलाषा का निग्रह किया। इन सब लीलाओ में भिन्न २ रसो का अनुभाव था परन्तु सबमें वात्सल्य रस प्रमुख था ॥४२-४७॥

देशकालेऽनुसन्धेये अन्तर्वाणिगणैरिह ।
स विग्रहो भगवतो विग्रहस्यैव कारणम् ॥४८॥
स चैव विग्रहोऽन्यत्र विग्रहस्य निवारकः ।
सन्देह-पोषको नूनं मोहो सन्देहवारकः ॥४९॥
भारतस्येतिवृत्ते ऽस्मिन्विजयेऽद्यतन शुभे ।
जयभारतादर्शकर्तारं जन गोस्वामि फाल्गुनम् ॥५०॥
अहैतुकीकृपासिन्धो व्याजेन येन केन वा ।
अनुकम्पाकण-मात्रेण कृतार्थं कुरु सर्वदा ॥५१॥

इस संदर्भ में शास्त्रज्ञों को देशकाल का अनुसंधान करना चाहिए। वहाँ वह भगवान् का विग्रह, विग्रह (युद्ध) का कारण हुआ (कुरुक्षेत्र में)। दूसरी जगह युद्ध को टालने वाला (कौरव सभा में) दुर्योधन के भगवान कृष्ण को कैद करने को सोचने पर धृतराष्ट्र का सन्देह कि भगवान् निग्रह में आवेंगे या नहीं, इस की सफाई हो गई। अर्जुन का सन्देह था कि मैं अपने कुटुम्बियों की हत्या का भागी होऊंगा, वह मिट गया। माता यशोदा का कृष्ण द्वारा मिट्टी खाने का सन्देह दूर हो गया ॥४८-४९॥

भारत के इस इतिहास में भारत की इस समय की शानदार विजय सम्बन्धी जय भारतादर्श निर्माता' गोस्वामि फाल्गुन को, हे अहैतुकी कृपासिन्धु भगवान, जिस किसी बहाने से अपनी अनुकम्पा के अणुमात्र से हमेशा कृतार्थ कीजिए ॥५०-५१॥

श्रीरामकृष्णौ विजयेते

अब्जेचणो घनश्याम' पीतवासा धनुर्धरः ।
मोक्षदानगरी वासी द्वीपवासी प्रजापतिः ॥१॥

ऋषिभि कृतसस्कारः सरित्तटपरिक्रमः ।
महिलोद्धारको विष्णु' स्वयवरसुमाधकः ॥२॥

अभिषिक्तासुरो देवो यज्ञसरचणक्षम ।
इन्द्रजिन्मान सहर्ता गुप्तशत्रुनिवहणः ॥३॥

भगवान् श्रीराम श्रीकृष्ण की जय

कमलनयन श्यामस्वरूप पीताम्बर, धनुधर, अयोध्या, द्वारका मोक्षदात्रीनगरी के निवासी लका तथा द्वारका वासी, प्रजापालक ॥१॥

वसिष्ठ, गर्ग द्वारा सस्कार किए हुए, सरयू यमुना के तटपर विहार करने वाले, श्री सीता, द्रौपदी, रुक्मिणी आदि के उद्धारक, विष्णु सीता, द्रौपदी के स्वयवरों को सम्पन्न कराने वाले ॥२॥

विभीषण प्रह्लाद, बलिके राज्याभिषेक के कर्ता विश्वामित्र, युधिष्ठिर के यज्ञो के सरक्षक, मेघनाद, इ द्र को जीतने तथा उसका मान भग करने वाले बाली तथा कालियवन के नाशक ॥३॥

महीभृदुप-सम्धाता महीभ्रापगम-क्षमः ।
प्रपन्नार्तिहरो विष्णुः पक्षिदत्त-सुखासनः ॥४॥
नृपार्हव्यञ्जनत्यक्त्वा प्रीतिसयुक्त शाकभुक् ।
द्विषत्पक्षसमायातस्यातिथ्येऽपि पर सुहृद् ॥५॥
नवनीतवदान्यो यः नवनीत-प्रिय, परम् ।
दारिद्रयस्य प्रदाता यः क्षिप्र दारिद्र्य-नाशकः ॥६॥
अखण्डभूभृता राजा द्वीपजेता सनातनः ।

चित्रकूट, गिरिराज पर विराजमान, द्रोणाचल, गोवर्द्धन को उठाने के कारण। शरणागत के दुःख हरने वाले, जिष्णु (विजयी) जटायु को गोद में बिठाया, गरुडासन ॥४॥

गुहादिके भोजन त्याग कर शवरी के बेरो से तृप्त, दुर्योधन की मेवा त्याग विदुर के शाक पात आरोगे। रावण के यहा से आए विभीषण, कस द्वारा भेजे अक्रूर का परम सौहार्द से आतिथ्य सत्कार किया ॥५॥

मक्खन के दान करने वाले, मक्खन-प्रिय, दरिद्र के दाता, तथा दरिद्रको शीघ्र दूर करने वाले ॥६॥

निर्दोष राजाओ के अधिराज, लका, द्वारकाकी विजय करने वाले सनातन स्वरूप वनवासियों, वानरो आदि के

वनौकसां परित्राता कुब्जायाश्च प्रपोषकः ॥७॥
शैशवेऽपि महावीरः महिलामार्ग-मागणः ।
विप्रयोगकरः पित्रोः पित्रो' परमवल्लभः ॥८॥
शेषावतारानुजन्मा मित्रामित्रान्तकः परः ।
अनाद्यनन्त विश्वात्माऽनन्तशायी प्रजापतिः ॥९॥
बन्धोरपराधहेतु' प्रियस्यामर्षकारणः ।
अनकमातृदेवो यस्तदुपालमकारणः ॥१०॥

रक्षक, कुब्जा (मन्थरा), कसकी कुब्जा का पोषण करने वाले ॥७॥

बालवीर, सीता, राधा, गोपियों को ढूंढने वाले, पिता माता से वियोग करने वाले-वनगमन, द्वारका गमन द्वारा। पिता माता के परम वल्लभ ॥८॥

बलदेव के अनुज लक्ष्मण के अग्रज, मित्र के शत्रु बाली, दुर्योधन कंस आदि के परम शत्रु अनादि अनंत, विश्व की आत्मा, शेषशायी, प्रजापालक थे ॥९॥

बन्धु (लक्ष्मण बलभद्र) के उपालम्भ के पात्र, उनके क्षोभ के कारण, अपनी जो एक से अधिक माताएं थीं, उनका उपालम्भ उठाया (वनवास, माखन चोरी के कारण)। उन पर पिता माता का अत्यंत

पित्रो–रत्यन्त–वात्सल्यः प्रजाना परमप्रिय' ।
अमित्रबन्धो' सद्भक्त्या, श्रद्धायाश्चास्पद परम् ॥११॥

बन्धोभ्र्यसुपदेष्टा बन्धोरुपरामकारणम् ।
मित्रस्य शत्रुमघाते पूर्णतश्च सहायकः ॥१२॥

विरथशस्त्र-सहर्ता महासग्रामनायकः ।
प्रियविश्लेषविधुरा सान्त्वनाया प्रदायकः ॥१३॥

प्रेम था। वे प्रजाके अत्यन्त प्रिय थे। शत्रु के बन्धु विभीषण, अक्रूर के वे श्रद्धाभक्ति के परम भाजन थे ॥१०–११॥

वे बन्धुओं (भरत आदि बलराम, पाण्डव) को कल्याण-प्रद उपदेश देने वाले। जिनके कारण इन लोगों को उपराम हुआ। मित्र के शत्रु बाली, रावण, कौरवो के नाश में परम सहायक, पैदल रथ के बिना शस्त्र चलाकर महा सग्राम के नायक थे, अपने प्रिय के विछोह पर तारा, सुभद्रा आदि को इन्होंने सान्त्वना दी ॥१२१३॥

सभा पर्व

भारत–भूमिः

श्रीभगवानुवाच–

"इय स्वर्णमयीलङ्का न मे लक्ष्मण रोचते ।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" ॥१॥
नारायण श्चतुर्बाहुः शूलपाणि र्गिरीश्वरः ।
उदीच्या रक्षितारौ नो हिमाद्रिस्थौ सुरेश्वरौ ॥२॥
अवाच्यां वसतो देवौ रामेशानन्तशायिनौ ।
वैधनाथ जगन्नाथौ प्राची वास्तव्य दैवते ॥३॥

सभा पर्व

॥ भारत भूमि ॥

भगवान् श्रीराम ने कहा—

हे लक्ष्मण यह सोने की लङ्का मुझे अच्छी नही लगती जननी तथा जन्मभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ होती है ॥१॥

चतुर्भुज नारायण, त्रिशूलधारी कैलाशपति शकर-दोनों-देवतात्मा हिमालय के स्वामी हमारी उत्तर दिशाकी रक्षा करते हैं। दक्षिण दिशा में श्री रामेश्वर तथा शेषशायी भगवान पूर्व में वैद्यनाथ,

प्रतीच्यां सोमनाथश्च द्वाराधिपति केशवः ।
मध्ये वसन्ति विश्वेश राघवेन्द्र व्रजेश्वराः ॥४॥
भारती वल्लभेय भू-र्वसुधाब्जासनप्रिया ।
आर्या दाक्षायणी चास्ति रुद्राणी चण्डिका तथा ॥५॥
अस्या रत्नाकरः पाद विन्ध्य-मेकल मेखला ।
हिमाद्रि-र्देवतात्मा च किरीटः शोभन. शुभः ॥६॥
सुरधुन्यर्कतनये रेवा मेकल-कन्यके ।
अस्याः सृजन्ति स्रग्जाल दिव्यरत्नविभूषितम् ॥७॥

जग नाथ, पश्चिम में सोमनाथ तथा द्वारकाधीश विद्यमान हैं । मध्यमें विश्वनाथ, राघवेन्द्र, रामचन्द्र तथा ब्रजाधीश्वर श्रीकृष्ण विराजते हैं । हमारी यह भारती भूमि ब्रह्मा की प्रिया, वसुधा नामसे प्रसिद्ध है । आर्या, दाक्षायणी रुद्राणी, चण्डिका इसी के नाम हैं, या यहा ये निवास करती हैं । रत्नाकर समुद्र इसके पाव पखारता हैं तथा विन्ध्याचल, मेकल इसकी करधनी हैं । दिव्य आत्मा हिमाचल इसका सुन्दर मुकुट है । गगा, यमुना, रेवा, गोदावरी दिव्य रत्नो से सजा हार बनाती हैं ॥२-७॥

दुकूल हरित सस्य सन्नद्ध पुष्पपकजैः ।
त्रिवेणी-पुष्करे नेत्रेऽसितासृक्सित-रजिते ॥८॥

हालाहल-सुधामादा सहिता सम्पद्यते यतः ।
ज्वालामुखी स्वलीकाचि-द्विपद्दहन-सत्तमा ॥९॥

भगवन्तौ रामकृष्णौ चतुर्विंशति विग्रहा॰ ।
भूमाररूपदस्यून्तान्संजन्तु-र्वधार्हखान् ॥१०॥

दौष्यन्ति॰ सर्वदमनो राघवो भरतोऽथवा ।
भरतो वा त्रयीख्यातो भारतस्य प्रवर्तकः ॥११।

पुष्प तथा कमलो से सजी हरियाली इसका दुकून है । त्रिवेणी (गगा, यमुना, सरस्वती का सगम) तथा तीर्थराज पुष्कर इसके नेत्र हैं, (जो अमिय-हलाहल-मद भरे श्वेत श्याम रतनार हैं) । इसका ललाट पर तीसरा नैत्र ज्वालामुखी है जो शत्रुश्रो को भस्म कर सकता है ॥८-९॥

श्री राम तथा कृष्ण भगवान् आदि चौबास अवतार पृथ्वी के भार हरने को आततायी दस्युश्रो का सहार कर गये । इस देश का भारत नाम दुष्यन्त के पुत्र सर्वदमन भरत या राघवेन्द्र भरत, अथवा वेदो में वर्णित भरत के नामसे रखा गया ॥१०-११॥

इन्दुवंशप्रशास्तस्य इन्दुर्नाम प्रचख्यते ।
अपभ्रंशोऽथवा सिन्धो हिन्दुरित्यभिधीयते ॥१२॥
तपोधन-महर्षीणां सुधांशो-श्चण्डदीधिते. ।
वैश्याना श्रेष्ठिना चैव हुतभुग्विश्वकर्मणः ॥१३॥
एतादृशी विभूतीना मधितिष्ठति सन्तति. ।
वीरप्रसुवश्च वीरा बालाः स्थविर-बालकाः ॥१४॥
एडकाश्च तुरगाश्च शौर्यसम्पन्न-चेष्टिताः ।
पतत्रिणोऽन्यपशवो विक्रान्ता रणमूर्द्ध नि ॥१५॥
"एतद्देश-प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ।
स्व स्व चरित्र शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः" मनुः ।

यह चन्द्र वशी राजाओ के नाम से इन्दु (इण्डिया) अथवा सिन्धु का अपभ्रंश हिन्दू कहलाया । तपस्वी लोगो, सूर्य, चन्द्र, अग्नि, विश्वकर्मा, वैश्य श्रेष्ठी जैसी विभूतियो की सन्तति यहा निवास करती है ॥१२-१३॥

वीरो को जन्म देने वालो, वीरांगनाए, अबला वृद्ध, बालक वीरों ने यहा जन्म लिया । यहा के मेमने, घोडे, पक्षी तथा दूसरे पशु सब शूरवीर धीर हुए हैं ॥१४-१५॥

"एतदेव हि देवा गायन्ति—
अहो अमीषा किमकारि शोभन प्रसन्न एषां स्विदुत स्वय हरिः।
यैर्जन्म लब्ध नृषु भारताजिरे मुकुन्द सेवौपयिक स्पृहा हि नः ॥
कल्प युषा स्थानजयात्पुनर्भवात् क्षणायुषा भारतभूजयो वरम्।
क्षणेन मर्त्येन कृत मनस्विनः सन्यस्य सयान्त्यभयम् पदं
हरे ॥ श्री भा ५/१६/२१,२३

पृथ्वी के सारे मानवो ने यहा के ज मे ब्राह्मणो से शिक्षा लेकर अपना चरित्र निर्माण किया।

देवता भी यह गाते है—

अहो इन लोगो ने ऐसा कौन सा पुण्य काय किया है जिसके फल स्वरूप इन्होंने भारत भूमि मे मनुष्य योनि में ज म लिया, जहां भगवान् मुकुन्द की सेवा का इन्हें अवसर मिला जिसकी हमें भी स्पृहा रहती है। अथवा बिना साधन के भी इन पर भगवान की कृपा रहती है।

जिसमें पुनज म आवश्यक ऐसे कल्प तक लम्बी आयु वाले लोक (ब्रह्म) की अपेक्षा अल्प आयु वाले भारत में ज म लेना श्रेष्ठ है जहा क्षण भगुर देह से भी थोडा सा सत्कर्म भगवत्समर्पण कर मनस्वी हरि का अभय धाम प्राप्त कर लेता है और पुनज म से छुटकारा पा लेता है।

दैवीसम्पद्रूपाः षड्ऋतवः

तेजोऽभय तु ग्रीष्मस्य तथैव च दमस्तपः ।
पर्यायाः प्रावृषस्त्यागोऽलोलुपत्व तथार्जवः ॥१॥
शौच शान्तिस्तथा सत्वसशुद्धिः शरदः ऋतोः ।
तस्यैव तु स्मृता लोके ज्ञानयोग-व्यवस्थिति' ॥२॥
अचापल धृति र्ह्रीश्च मार्दव नातिमानिता ।
हेमन्तस्य गुणा एते विद्वद्भिः प्रतिपादिता. ॥३॥
सत्य दान च स्वाध्यायो यज्ञः कुसुमसम्भवे ।
अहिंसा धृतिरक्रोध' क्षमा शीते प्रतिष्ठिताः ॥४॥

दैवी सम्पत्तिरूप छ' ऋतुए

ग्रीष्म् ऋतु के तेज, अभय, इसी प्रकार दम तथा तप, वर्षा ऋतु के त्याग, अलोभ तथा सरलता दैवी सम्पत्ति हैं ॥१॥

शरद् ऋतु के शौचाचार, शान्ति तथा सत्व (बल की शुद्धता) इसी में ज्ञान योग की स्थिरता होती है। हेमन्त ऋतु में अ चपलता, धैर्य, लज्जा तथा मृदुता विद्वानों द्वारा गुण माने गये हैं । वसन्त ऋतु के सत्य, दान, वेदाध्ययन तथा यज्ञ यागादिक गुण माने गये

सकला सपदा दैवी ह्यार्य-भूम्यां स्थिरीकृता ।
समवायोऽपि सर्वेषा-मेकीभूतः प्रपद्यते ॥५॥
एते गुणा. प्रदातव्या' सुपात्रेभ्यो यथोचितम् ।
नीतिविद्भि. सुशास्त्रज्ञै-र्विहिता नीतिरुत्तमा ॥६॥

है । शीत ऋतु में अहिंसा धैर्य, अक्रोध, क्षमा प्रतिष्ठित है । सारी दैवी सम्पत्तियां आर्यभूमि मे स्थिर करदी गई हैं । सबा का समूह एकी भाव में सिद्ध किया जाता है । ये गुण यथोचित सुपात्रो को प्रदान करने चाहिए क्योंकि यही नीति विद्वानो नितिज्ञो ने उत्तम बतलाई है ॥२-६॥

पञ्च शीलानि

अन्ताराष्ट्रिय-वार्तासु पराक्षेप विवर्जनम् ।
राष्ट्रस्य सार्वभौमत्व-मैकत्व च स्वक स्वकम् ॥१॥
सीमा भौगोलिकाक्षुण्णा मान्या राष्ट्रस्य सर्वथा ।
सामान्य सयुताचार, लाभप्रदसुवृत्तय ॥२॥
विहित ह्यानाक्रमण शान्तियुक्ता सहस्थिति: ।
पञ्चशीलमयी नीति-रन्ताराष्ट्रियसमता ॥३॥

पच शील

अतरराष्ट्रीय बातो में दूसरे पर आक्षेप नही किया जाय। भिन्न २ राष्ट्रो की अपनी सार्वभौम शक्ति, तथा उनका अपना अपना पृथक् एकत्व माना जाय। राष्ट्र राष्ट्र की भूगोलिक सीमा सर्वथा अक्षुण्ण मानी जाय। सब लाभ देने वाली वृत्तियो मे सामान्य मिला जुला आचरण हो ॥१-२॥ अनाक्रमण का नियम तथा शांति पूर्वक सहस्थिति ॥३॥

सुरत्न देशभक्तानां रत्न मन्त्रि–गणे तथा ।
रत्न भारतराष्ट्रस्य नाम्ना *रत्नसमुच्चयः ॥४॥
उदाहरत्पञ्चरत्न तच्चावेन्लाग्युपाहरत् ।
पञ्चतामनयत्तानि ×षष्ठस्थाने स्थितोऽबुध ॥५॥

यह पचशील की नीति भ तर्राष्ट्रीय मानी गई । भारत देश के भक्तो में रत्न, उसके मन्त्रिगण का रत्न भारतरत्न उपाधि स विभूषित भारत राष्ट्र मे रत्न तथा नाम से भी रत्नो के समूह अर्थात् जवाहिर लाल ने यह शीलो का पञ्चरत्न आविष्कृत किया। इसे चाऊ एन लाई ने भी माना परन्तु इसके सिद्धान्तो को भाड में झौंक दिया और आप छठे स्थान म बैठ गया यह उसका अज्ञान है ॥४ ५॥

*जवाहिर लाल । ×षष्ठ स्थान शत्रो । छठा स्थान शत्रु का है ।

वन पर्व

राजनीति

महाहवे यूरूपभूमि खण्डे प्रचण्ड दुर्दण्डरिपोर्विपक्षे ।
ब्रितेन-देशो विजय निनाय सहायता तत्र हि भारतस्य ॥१॥

विधेयमेकं कृतवान् हि राजा सहारवद्रोलट-नामधेयम् ।
न याचिका तत्र न चाधिवक्ता स्वतन्त्रराज्याधिप-दण्डधारी ।२।

कृतघ्नताया हि प्रतिक्रियायां प्रवृद्ध-सक्षोभ समन्वितः सः ।
भ्रताग्रहेणासहयोगनाम्ना राज्यांग आन्दोलयति स्म राष्ट्रे ।३।

वन पर्व

राजनीति

यूरप भू खण्ड में (प्रथम) महायुद्ध में प्रचण्ड दुर्दण्ड शत्रु से लड़कर ब्रिटेन ने विजय पाई। इसमे भारत की ओर से उसको बड़ी भारी सहायता दी गई। इसके पश्चात् अंग्रेज ने भारत में 'रोलेट' नाम का कानून जारी किया जिसको सहारक शस्त्र कहा जा सकता है। इसके सम्मुख न वकील, न दलील, न अपील, कुछ भी सहायक नही हो सकती थी। सरकार का दमन सवभाति शक्ति-

सरोनटानां च विधेयकानां नृशसतापूर्ण-निदेशकानाम् ।
विहाय हिंसामथ शामपूर्ण मतिक्रम दण्ड सहिष्णुमिश्र ।४।
विभीषिकां बन्धनजां च हित्वा व्यथां प्रहारस्य तथैव यष्ट्याः ।
गणास्त्रप्रविक्षिप्तधनञ्जयस्य तितिक्षुरेव विनयोपपन्न. ॥५॥
वराशिरस्त्राणि विमर्तु सर्वः स्वदेशि खादी मथितानि देशे ।
पट परित्यज्य विदेशजन्य नियोजयेत्तत्तु निमानमो वै ॥६॥
स्वदेशि-वस्तूनि सदैव लोका धरन्तु नित्य यदि जन्मभूम्याः।

शाली बना दिया गया। सरकार की इस कृतघ्नता से तिलमिलाकर भारत की प्रजा ने सत्याग्रह नामक आंदोलन का सहारा लिया। इसके अनुसार रोलेट विधेयक के साथ २ सारे नृशसता भरे आदेशो का अहिंसात्मक शांतिपूर्ण अतिक्रमण किया जाना निश्चित हुआ। इसके जवाब में सरकार द्वारा दिये जाने वाले दण्ड को सहना, कैद के भय से न घबड़ाना लाठी आदि की मार को सहना इसके ऊपर गोलियो की बौछार को भी झेलना और तब भी विनय न छोड़ना ॥१-५॥

सब लोग खादी कहलाने वाले मोटे वस्त्र पहने जो स्वदेशी होते हैं। विदेशी बढ़िया वस्त्रो को त्याग कर उनकी होली जलावे। यदि आप अपनी जन्मभूमि की स्वतन्त्रता के इच्छुक हैं तो

स्वतन्त्रताप्राप्तिचिकीर्षवस्ते उपक्रमोऽसौ निहितः सभायाम् ।७
विदेशिवस्त्रस्य हलिप्रियाया निरोद्धुकामा च कृता हि पण्ये ।
उपस्थितिर्दार्ढ्य-समन्विता सा यदृच्छकैः सेवकसघमुख्यैः ।८।
सुनिश्चितेय सुदृढा प्रचर्या विधान शिक्षालय-सद्दति वै ।
धुर नृपाणा नयशासनञ्च सम्मान सेवे ह्यधिवक्तृता च ।।६
त्यजन्तु सर्वानिह राष्ट्रलोका निरकुशाना गतिरोधमेतत् ।
अमोघशस्त्र प्रतिशासन तत् परा हि काष्ठाऽपहृतिः कराणाम् ।१०।
असहयोग–मन्थान नेत्र सत्यस्य चाग्रहम् ।

स्वदेशी वस्तुओं का ही व्यवहार करें। यह राष्ट्रीय महासभा ने प्रस्ताव पास किया ।।६–७।।

देश के स्वय सेवको ने विदेशी वस्त्र और शराब की बिक्री को रोकने के लिए बाजार में इनकी दुकानो पर धरना देना प्रारम्भ कर दिया ।।८।।

राष्ट्र द्वारा यह प्रोग्राम भी सुदृढ माना कि विधान सभाए, शिक्षण सस्थाए, न्यायशासन (अदालतें) राजकीय खिताब वकालत आदि को, जो सरकार की गाडी की धुरी है, राष्ट्र के सब लोग त्याग करदें। इससे निरकुश शासको का गतिरोध होगा। यह अमोघ शस्त्र है और इसकी पराकाष्ठा राज्य का कर न देना है ।।६–१०।।

असहयोग रूपी मन्थान (रई), सत्याग्रह की रस्सी से साम्राज्य

कृत्वा पञ्चजनाः सिन्धु-साम्राज्य निर्ममन्थिरे ॥११॥
फलप्रदा लभन्ते स्म पीयूष स्वैरतामृतम् ।
निश्लेपे कृतनिष्ठास्ते अनिन्दन्केवल पय. ॥१२॥
धृतराष्ट्रोऽसितमुखो नीरक्षीर विवेकवान् ।
वीक्ष्य स्वर्णशकुन्तस्य पजरान्तस्य मोक्षणम् ॥१३॥
परार्थहा-श्व स्वार्थाय तस्य पत्र समाच्छिदत् ।
निमित्त तत्र राष्ट्रद्विट्-क्रतदासा महीक्षित' ।।१४।।
खगोऽनामयो भविता पत्रस्य रक्षका विधि ।
यदि स्यात् पक्षि सश्लिष्ट' कुशल तस्य निश्चितम् ॥१५।

रूपी समुद्र को मथा गया । इसमे स्वतन्त्रता रूपी नवनीत (अमृत) प्राप्त किया गया। जिन लोगो ने अलग होने का सिद्धात रखा उनके हाथ केवल पय (दूध या पानी) लगा ॥११-१२॥

पिंजरे में फसी सोने की चिडिया भारत को हाथ से निकलती देख दूध पानी को अलग करने मे चतुर काले मुह वाले धृतराष्ट्र (हस) ने उस चिडिया का पख काट डाला। उसे अपना स्वार्थ साधना था चाहे दूसरे का स्वार्थ नष्ट हो जाय। राष्ट्र के शत्रु, पैसे से खरीदे हुए राज्य पाने के लालची इसके निमित्त बने ॥१३ १४॥

आशा है वह चिडिया तो स्वस्थ हो जायगी परन्तु, कटे हुए पख का रखवाला विधाता ही है। यदि वह चिडिया के साथ फिर जुड जाय तो निश्चय उसकी कुशल है ॥१५॥

चीनाधिपानां विडम्बना

श्रुत्वायूबमुखेन लाघवपरं शौर्यं च धैर्यं तथा ।
विक्रान्तस्य बलस्य व्यूहरचनां शस्त्रौघ–सन्धानताम् ॥
राजोलच्य–विभेदन निरुपम यानस्य वैहायस. ।
चाग्रो–मानस–शीतता–मतिनल प्रापा चिर दुर्भराम् ॥१॥
मेष शीतविवर्त्तन-स्तद्भवा ऊर्णा-स्तथा रांकवम् ।
मत्वा स्तन्यविलेपन शिथिलता–भङ्गस्य निर्वापणम् ॥
याच्ञा मेषकदम्बकस्य हि कृता व्याजेन दण्डस्य वै ।
अकानोञ्च गति विपर्यय कृता वस्वभ्रचन्द्रायुता ॥२॥

चीनाधिपों की विडम्बना

भारती सेना की परम स्फूर्ति, शौर्य, धैर्य तथा जवानो की मार्चाबन्दी, शस्त्रो के चलाने की कुशलता आकाश म विमानो को लक्ष्य बनाने की राजू की निरुपम निपुणता को श्रयूब के मुख से सुनकर चाऊ को जोरदार हृदकम्प हो गया, जिसको वह सह नही सका । भेड शीत को मिटाती हैं, उसकी ऊन तथा कम्बल यही काम करती हैं । यह मानकर हर्जाने के बहाने चाऊ ने भेडो की

अष्टोत्तरशत-सख्या शुभा मान्या जनैरिह ।
विपर्ययोऽष्टशतैकमशुभो नत्वन्यथा मतः ॥३॥

शीतेन पीडित चाऊ ज्ञात्वा सहृदयाः जना ।
तत्सख्यक मेषगण चीनदूताश्रमेऽनयन् ॥४॥

अर्पित तत्तु चावर्थे पर नाङ्गीकृत गणम् ।
स्तन्य-पात्र तु तत्रैव कृतरिक्त विसर्जितम् ॥५॥

एवज की भारत से याचना की क्योंकि अकडे हुए शरीर के अग प्रत्यगो में भेड के दूध की मालिश भी लाभदायक है। परन्तु १०८ शुभ सख्या के स्थान में उसने उसको उलटी ८०१ भेडो की माग की जो सख्या अशुभ ही है । १ ३॥

भारत के सहृदय लोगो ने यह जानकर कि बेचारे चाऊ को शीत हो गया है उतनी भेडे चीन के दूतावास को भेज दी । वे चाऊ के लिए भेजी थी परन्तु दूतावास ने स्वीकार नही की । साथ में दूध का चरू भी भेजा था । चीनी दूत द्वारा अस्वीकार होने पर भेडें तो लौटा ली गइ परन्तु दूध वही छोड दिया गया । ४-५॥

अपत्रपिष्णुर्दूतश्च राजा तु निरपत्रपः ।
मत्वोपकृताऽपकृत विरोध प्रेषयत्यहो ॥६॥
न चाऊ-रूर्णता याति मोघ तचस्य दौहृदम् ।
छागीकेशः स्मृतश्चाऊ भाषाया मगवासिनाम् ॥७॥
मेपः प्राण-व्यये सहते नीरुव गलकृन्तनम् ।
स्वीया प्रकृत्यां प्रकृति-मीहते स नराधमः ॥८॥
मेप-प्रियस्तथा चाऊ यतो मेपीयते प्रजाः ।
सर्व सहा निगृहीता प्रत्याख्यान-प्रवञ्चिता' ॥६॥

चीनी दूत को भेड़ लेने मे शर्म आई, परन्तु उसका राजा तो निलज्ज था । यहा से तो उसका उपकार किया था, उसने उसे उलटा समझ कर विरोध का पत्र भेजा । चाऊ कभी ऊन को प्राप्त नही कर सकता, इसके लिए उसकी लालसा व्यर्थ है । पहाड़ी लोगो की भाषा म बकरी के केशो को चाऊ कहते है। निदयता के साथ गला काटने पर भी भेड मरते मरते भी मिमियाती नही । वह दुष्ट ऐसे स्वभाव को प्रजा पर थोपना चाहता है । इसी लिए उसे भेड प्यारी है । अपनी प्रजा को भी भेड बनाना चाहता है ताकि वह सब अत्याचार सहकर दबी हुई भी चू न करे । ॥६-६॥

पत्र व्याघ्र

मारत' पत्रव्याघ्रोऽस्ति ब्रूते पाक्यच पति' ।
अत्युत्कृष्टप्रयत्नोऽपि कच्छे मग्नमनोरथ ॥१॥
अनूपदेशे कच्छे वा शत्रुणाक्रमण कृतम् ।
निष्कारण दुराचार' प्रागेव सुविचारित' ॥२॥
दुर्विनीताऽतिकुटला नीति दस्युफलप्रदा ।
राजनीति-फल लेभे न सख्यास्ति नियामिका ॥३॥

कागजी शेर

अत्यत जोरदार यत्न करने पर भी जो कच्छ में अपना मनोरथ न साध सका वह पाक्य सेनापति कहता है कि भारत कागजी शेर (चित्र लिखित शेर) है । मह देश तथा कच्छ में पहले से ही योजना बना कर बिना कारण दुराचार रूप मे शत्रु ने आक्रमण किया । उसको यह बुरी नीति कुटिल लुटेरे को लाभ देने वाली जैसी थी । सख्या के कारण न सही पर उसकी

निवारितोऽपि दात्रा स शस्त्रास्त्राणां नियोजने ।
ऋते हि साम्यवादिभ्य इतरै विमुख न हि ॥४॥

न कथ चिद् कुलटोमो वबृजे कलुषात्मनम् ।
शिवाजित्कश्छत्रपति दिल्लीशोऽवरगुजिबः ॥५॥

अवाच्यां च ह्यु दीच्या वै चाम्ता चक्रे श्वरावुभौ ।
शिवाजित्कस्य स्नालेख्य सद्योऽमोघविरेचकम् ॥६॥

मत्वा प्रस्थापित गेहे किलैषास्ति जनश्रु तिः ।
नाम्ना नेट–मशक. स पत्र पञ्चास्य-शावकः ॥७॥

राजनीति ने उसे फल दिया । शस्त्रास्त्र के दाता अमेरिका ने घोषित किया कि साम्यवादी राज्यो को छोड कर दूसरे के विमुख उनको काम में नही लाया जायगा। पर तु किसी प्रकार भी उस पापात्मा को अकलटोम (अमेरिका) न रोक सका ।

छत्रपति शिवाजी दक्षिण में था तथा दिल्ली का मालिक औरगजेब उत्तर म था । दोनों चक्रवर्ती थे । (औरगजेब ने कहा था कि मैंने शिवाजी का चित्र अपने शौचालय में लगा रखा है)

सेत्रजेट–गजेन्द्रघ्न हेलया स्मर्यते त्वया ।
स चैव पत्रपञ्चास्यः फिल्लोरारणमूर्द्धनि ॥८॥

असंख्यातानि टैंकानि जघान महिषानिव ।
पत्र महिषमर्दिन्या एकाकी गणसूदनः ॥६॥

इस पर किसी ने कहा कि इसलिये कि उसके भय से आपको टट्टी जल्दी लग जाती है । भारत का नैट (मच्छर) नामका विमान पत्र व्याघ्र है । वह खेल खेल में ही सेत्रजेट हाथी को मारने वाला है । उसी पत्र व्याघ्र ने फिल्लोरा के मैदान में असंख्य टैंक रूपी भैंसों को यमपुर भेज दिया । महिषमर्दिनी भारत की देवी का वाहन (पत्र) इकला ही सेना को मारने में समर्थ है ॥१–६॥

वंग विच्छेद

वंग देशे तु विश्लिष्टे तेनै क्रूरजनेन वै ।
सुसन्नद्धोऽखिल-देशो विरुद्ध: क्रूरकर्मणाम् ॥१॥
गांगाधरि: श्रीतिलको लाला लज्जापति-स्तथा ।
योगी घोषोऽरविन्दश्च पालो विपिन-चन्द्रमा: ॥२॥
लोकमान्या देशभक्ता: कोविदा: कर्मयोगिन: ।
दु:शासन-विनाशार्थं जागरूका मनस्विन: ॥३॥
स्वदेशी बॉयकॉट्टे तिचाग्ल-पण्य-बहिष्कृति ।
इत्थं राष्ट्रस्य निर्दिष्टा नीति: स्वातन्त्र्यलक्षणा ॥४॥

बङ्ग विच्छेद

उस क्रूरजन (कर्जन) ने बंगाल के दो टुकडे कर दिये । क्रूर-कर्म करने वाले के विरुद्ध सारा देश विरोध में खड़ा हो गया । बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, विपिन चन्द्रपाल (बाल, पाल, लाल) तथा अरविन्द घोष योगीराज जो लोक में मान्य, देशभक्त, विद्वान् कर्मयोगी थे, इस प्रकार के शासन को हटाने को तत्पर हो गये । इन्होंने स्वदेशी, बायकाट, अंगरेजी माल का बहिष्कार का आन्दोलन चलाया । इसे स्वतन्त्रता प्राप्ति के लक्ष्य

विच्छेद प्रक्रिया गर्ह्या भेदनीति–पराऽङ्मुखा ।
प्रजाया द्वेषवपन बद्धमूल तत परम् ॥५॥
इति सचिन्त्य विद्वान् स देश स्वातन्त्र्यसोद्यम' ।
जन्मसिद्धोऽधिकारो मे स्वराज्यस्य जुघोष स ।६।
लोकमान्य इतिख्यात आंग्लै-र्निर्वासित सुधी ।
जना अन्येऽपि बहवः कारावासादि दण्डिता ॥७॥
पौण्डिचर्यां योगिराज उषित, पोण्डर्यसौरभः ।
दिष्ट्या कलुषिता वृत्ति-र्भेदनीति पुरस्कृता ॥८॥

को पहुचने की नीति निर्दिष्ट की । प्रदेश के टुकडे करना भेदनीति परक होने के कारण निन्दनीय था इससे भारतवासियो म परस्पर मे द्वेषभावना जड पकड जायगी ऐसा सिद्ध किया । ऐसा विचार कर तिलक महाराज ने घोषणा की कि स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है । अत देश को स्वतन्त्रता के लिए वे उद्यम करने लगे । उन लोकमान्य नेता को अग्रेज सरकार ने देश निकाला दे दिया । और कई लोगो को जल के सीखचो में डाल दिया । गुलाब के सौरभ की भाति कीर्तिमान् योगीराज अरविन्द पौण्डिचरी(फ्रास के अधीन नगर) में जा बसे । सौभाग्य से अग्रेज

साम्प्रदायपरो भावो न मनसि प्रतिष्ठितः ।
दुर्भगा भेदनीति सा पाक्यस्थानस्य जन्मदा ॥९॥
पाक्यस्थान यथानामा पाक्यस्थान मेव तत् ।
भ्रातृभावो हि राष्ट्रे स हन्त कुत्र पलायित ॥१०॥
पुरातनस्यैक्य-भावस्य शुभ फलमजायत ।
मश्लिष्टो वगदेशोऽभूद्राष्ट्रे जागरण तथा ॥११॥

की बुरी भेदनीति की चाल बगवासियो के मन को कलुषित नही कर सकी और हिन्दु मुसलमानो में साम्प्रदायिक दुर्भावना न उभरी। दुर्भाग्य की बात है कि यह पाकिस्तान को ज म देने वाली हुई। पाक्य-स्थान पाक्य-स्थान ही है और वह भ्रातृभाव की मनोवृत्ति अब कहा भाग गई ? उस पुरातन समय म ऐक्यभाव का शुभ फल हुआ और बगाल को वापिस जोडना पडा तथा भारत राष्ट्र में राजनीतिक जाग्रति हुई ॥९-११॥

रिच्छेद-प्रक्रिया गर्ता मेदनीति-पराऽग्रमा ।
प्रजाया द्वेषवपन बद्धमूल तत परम् ॥५॥
इति सचिन्त्य विद्वान् स देश स्वातन्त्र्यसोद्यम ।
जन्मसिद्धोऽधिकारो मे स्वराज्यस्य जुघोष स ॥६॥
लोकमान्य इतिख्यात आंग्लै-निर्वासित सुधी ।
जना अन्येऽपि बहव. कारावासादि दण्डिता॰ ॥७॥
पौण्डिच्चर्यां योगिराज उषित॰ पौष्पर्यसौरभः ।
दिष्ट्या कलुषिता श्रुति-र्मेदनीति पुरस्कृता ॥८॥

को पहुचने की नीति निर्दिष्ट की । प्रदेश के टुकड़े करना भेदनीति परक होने के कारण निन्दनीय था इससे भारतवासियो में परस्पर में द्वेषभावना जड पकड़ जायगी एसा सिद्ध किया । ऐसा विचार कर तिलक महाराज ने घोषणा की कि स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है । अत देश को स्वतन्त्रता के लिए वे उद्यम करने लगे । उन लोकमान्य नेता को अंग्रेज सरकार ने देश निकाला दे दिया । और कई लोगो को जेल के सीकचो में डाल दिया । गुलाब के सौरभ की भाति कीर्तिमान् योगीराज अरविन्द पौण्डिचरी(फ्रास के अधीन नगर) में जा बसे । सौभाग्य से अंग्रेज

साम्प्रदायपरो भावो न मनसि प्रतिष्ठितः ।
दुभगा भेदनीति. सा पाक्यस्थानस्य जन्मदा ॥९॥
पाक्यस्थान यथानामा पाक्यस्थान मेव तत् ।
आत्मभावो हि राष्ट्रे स हन्त कुत्र पलायित ॥१०॥
पुरातनस्यैक्य-भावस्य शुभ फलमजायत ।
सश्लिष्टो वगदेशोऽभूद्राष्ट्रे जागरण तथा ॥११॥

की बुरी भेदनीति की चाल बगवासियो के मन को कलुषित नही कर सकी और हिन्दु मुसलमानो में साम्प्रदायिक दुभावना न उभरी। दुर्भाग्य की बात है कि यह पाकिस्तान को जन्म देने वाली हुई। पाक्य-स्थान पाक्य-स्थान ही है और वह आत्मभाव की मनोवृत्ति अब कहा भाग गई ? उस पुरातन समय में ऐक्यभाव का शुभ फल हुआ और बगाल को वापिस जोडना पडा तथा भारत राष्ट्र में राजनीतिक जाग्रति हुई ॥९-११॥

अनार्याय आर्योपायनम्

निशीथे तु त्यक्तशिशुः कांदिशीको बभूव यो भुट्ट ।
आयान्तगतो ज्ञाता कथं नु शिशुपालपतेऽधुना ॥१॥
भटमान्यस्तु भुट्टोऽहि भुट्टोऽपि मक्कामिधान-धान्यस्य ।

आर्यों की भेंट

श्री जुल्फिकार अली भुट्टो दिवाने खारिजा पाकिस्तान को

— o —

इन्होंने सुरक्षा परिषद् में भारतीय प्रतिनिधियों को गालियां दी थी। शिशुपाल ने भगवान् कृष्ण को अपशब्द कहे थे। भगवान् ने १०० संख्या तक क्षमा किया। १०१ होने पर उसको यमपुर भेज दिया।

भुट्टो साहब जूनागढ़ से आधी रात को अपने बच्चे को छोड़ कर भाग निकले। शिशुपाल जैसी अपनी पहले की तथा अब की गति जानते हुए, स्वयं शिशुपाल का आचरण कैसे करने लगे? ॥१॥

वे अपने आपको वीर कहते नहीं अघाते। भुट्टा तो मक्का धान का होता है। उन्होंने कहा कि ताज बीबी का रोजा हमने

त्वमसि ताज–निर्माता पिता तु सैन्धवो हिन्दुः ॥२।
उपकरणानि बहूनि निशान्त निर्मातृणां शिल्पीनाञ्च ।
अन्यानि वर्जयित्वा चूर्णेष्टिकान्तिका तु मान्या ॥३॥
सहस्र शरदां योद्धा पृथगात्मा क्षणभगुरो देहः ।
सप्तमेऽहनि चुक्रोश त्राहि मां त्वा प्रपन्न चीन ॥४॥
पुनरपि परिषदि गुञ्जत्यालभृङ्ग सम्यान्सुमनसा भ्रान्त्या ।

बनाया । 'त्वमसिताजनि' तेरा ज म काला अर्थात् अस्पष्ट है । उनकी माता चाण्डाली तथा पिता सिंधी हि दू हैं ॥२॥

ताज बनाने का कारण, मकान बनाने के भट्टे ईट चूना के भी होते हैं । इनमें से किसी का भट्टा आप रहे होगे, ऐसा तो नही ? मकान बनाने के उपकरण ये ही वस्तुए होती हैं ॥३॥

आप जनाब हजारो वर्ष तक लडते रहने की डीग हाकते हैं । एक क्षण भगुर देह वाला प्राणी जो भारतवष के अपनी रक्षा म शस्त्र उठाने के सातवें दिन ही पुकारने लगे कि " हमतो मेरे भाई चीन हमे बचाओ हम तो तुम्हारी शरण मे हैं" ॥४॥

ऐसी दशा म मिया साहब सुरक्षा परिषद् में अलि (भवरे) की भाति गू जते रहे। तुम इस भ्रम मे हो कि ये शुद्ध मन वाले

बहुशो परार्थघटका निजस्वार्थ–साधकानयज्ञा ॥५॥

अमृतवाणीमिवाश्रृणोत्परभृत. परभृतस्य कूजितम् ।
मत्वा पचानन च ग्रामसिंहस्यादरमकुर्वन् ॥६॥

कच्छ प्रिय.किटीद्वेषो एषा लोक विडम्बना बृहती ।
जूनागढ़ात्प्रदुद्राव रावलपिण्ड्या कृतावासः ॥७॥

त्यजन्नेवार्यभूमिं युगपत्तत्याजार्य–विनयम् ।
कृतिनस्तु तद्विहीना॰ सहजानार्यजुष्टचरितानि ॥८॥

हैं । ये तो दूसरे की भलाई करने वाले नही अपना उल्लू सीधा करना ये जानते हैं । इनमे न्याय बुद्धि कहा ॥५॥

कौए की काव काव को कोयल की कूक–अमृत वाणी–मान कर सुनी और उस ग्रामसिह (कुकर) को सिह की भांति आदर दिया । कच्छ (कीचड) से प्रेम करें और सूकर से द्वेष करें यह ससार में बडी विडम्बना हैं । वे जूनागढ से भाग कर रावल–पिण्डी मे जा बसे । उन्होने आर्य भूमि को छोडा साथ म आर्य सदाचार से भी मुह मोड लिया । बडे २ लोग भी इस प्रकार के आचरण म हीन हैं और उनका चाल चलन अनाडीपन का है ॥६–८॥

सम्राड् भारतसचिवो वायसरायस्तत् सचिव जनाश्च ।
तेषा हि सेविदन्लः क्रीतदासानुदासो लपति ॥९॥
अलपिना शिरोमणि वर्षाण्यष्टशत जल्पतीशत्व हि ।
प्राप्नोति न तत्सरया गणन यदि चक्रवृद्ध यापि ॥१०॥
अयूबपदापदेश इति शत्रुवद् यूपस्तद्बन्धनगः ।
भुजिष्य ईश इति निरव आप्तवाक्येनाप्यकृतार्थः ॥११॥
अस्पृश्यजोऽलिर्यदास्पृष्टः कथ न दशेत्स्वभावेन ।
वामा शिखण्डस्योपमालिवृन्द यतो नाम तत् ॥१२॥

अग्रेज सम्राट भारत सचिव, वायसराय, उनके सेक्रेटरियो के चरण चूमने वाला उनका गुलाम बकवास करता है ॥९॥

कहते हैं कि हमने ८०० वर्ष तक बादशाहो की ऐसे झूठो के सरदार हैं । यदि चक्रवृद्धि से हिसाब लगाया जाय तो भी इतनी सख्या नही आती । अयूब के पद के व्याज (मिस) से डीग हाकी जाती है। वह यज्ञ के यूप में बधे के समान हैं। गुलाम होकर अपने आपको प्रभु कहे उसको ससार भर में प्रमाण नही माना जाता। अत इसमें भी उसे कृतकृत्यता प्राप्त नही होती ॥१०-११॥

अलि (बिच्छू) को छूना ठीक नही, छूते ही वह डक तो मारेगा। उसका यह आदत ही है । स्त्रियो को जुल्फ को भवरो को उपमा दी जाती है । इसीसे इन महाशय का यह नाम है ॥१२॥

रेफः प्रथमत्र प्राप्तो मूर्द्धान-मधिरोहति ।
पुनः प्राप्तोऽनरत्र स भजते पादसेवनम् ॥१३॥
सोविदल्लोऽपि गुरुता विकल्पेनैव यच्छति ।
एकाकिनो गुणा एते द्विरेफस्य तु का कथा ॥१४॥
पृष्ठिध जात्वपरो याति स्वात्मीय नाधिरोहति ।
सर्वावस्था गतो रेफो वक्रत्व न जहाति म. ॥१५॥

रेफ (रकार) जिस वर्ण के पहले आवे उसी के सिर पर वह चढ जाता है । फिर वह पीछे आवे तो पैरो में लिपट जाता है ।

इसी प्रकार से गुलाम भी विकल्प से ही गुरुता देता है । इसी कारण रेफ के अकेले के ये गुण हैं । फिर द्विरेफ (भ्रमर, अलि) की तो बात ही क्या ? रेफ चाहे जिस स्थिति मे हो (सिर पर या पैर पर) वह अपनी कुटिलता नही छोडता ॥१४-१५॥

सम्पूर्णकैतवं तीव्राघातश्च

(पाक्य मुखेनैव)

सपत्नमत्या पाक्य. स विद्वेषाग्नौ सदा ज्वलन् ।
भारतस्यापकार हि नित्य स कर्तुं व्यवस्यते ॥१॥
उपद्रवति नित्य स दुराचाराँश्च प्रेषवे ।
प्रत्यूह वापि दौर्जन्य देशेऽस्मिञ्जनयत्यलम् ॥२॥
उल्लङ्घ्य सीमां देशस्य द्वार तीव्र विघर्षयन् ।
समाचरत्खलः क्षिप्रं युद्धोन्माद ससर्ज तत् ॥३॥

भरपूर छलकपट तथा करारी चोट

(पाक्यमुख से ही)

वैर की भावना से ही पाक्य सदा द्वेषाग्नि जलाना रहता है। इसी कारण भारत की बुराई नित्यप्रति करता रहता है ॥१॥

नित्य उपद्रव करना दुराचारियो को भारत लुके छिपे भेजना और इस देश म विघ्न खडे करना तथा दुर्जनता फैलाना ही उसका काम है ॥२॥

देश की सीमा उलाघ कर उसके बीच गडबड करना, ताकि युद्ध का उन्माद पैदा हो जाय ॥३॥

शान्तिप्रियोऽपि देशोऽयं शाठ्यं हि सहते कथम् ।
प्रतिशाठ्यमकृत्वापि नोपेक्ष्य स्वसुरक्षणम् ॥४॥
कृपाभगस्त्रपाभग' शपनस्य सदैव हि ।
सन्धिशान्त्यो' सदाभगो भग' सौहार्दशीलयो. ॥५॥
सीमाभगो निदेशस्य सम्मानस्यात्मनाऽशुभ' ।
वाग्भगो धर्मनिष्ठायाः पूज्यस्थानस्य चैव हि ॥६॥
न कथं चाप्नुयात्पापो रणे भग निरन्तरम् ।
सैन्य-सस्त्रास्त्र सहस्या प्रोत्साहेष्यमनीषिण म् ॥७॥

शाति प्रिय भारत भी आखिर कहा तक उसकी शठता का सहन करे। दुष्ट के साथ दुष्टता न करे तो भी अपनी सुरक्षा की उपेक्षा कैसे की जाय ॥४।

कृपा, लाज, शपथ, सधि, शाति सौहाद, शील, विदेश की सीमा, *अपना वचन, धर्मनिष्ठा, पूज्यस्थान* अपना सम्मान सब भग करने वाले पापी पाकिस्तान का रण में निरन्तर भग (पराजय) क्यों न हो। सेना, शस्त्रास्त्र भण्डार नासमझ लोगों की शह (प्रेरणा) पाकर उसने विचारा कि मैं शीघ्र ही भारत पर आक्रमण

अम्यवस्कन्दन निप्र करिष्येऽह निचार्य सः ।
छम्बाञ्चल स्वसेनाभिराक्रामद्नहुमि. शठ' ॥८॥
सन्दधान प्रकाराश्च वरूथिन्याः पृथक् पृथक् ।
सेब्रनेटान्विमानान्स्तान्युयुत्सून् स्टार सञ्ज्ञकान् ॥९॥
विविधान्तोप' –सन्दोहानरातिलवसंस्मृतान्² ।
पेट्टनृटैंक–सघातान् स्कन्धावारांश्च सर्वशः ॥१०॥
छम्बे सर्वैर्नमासार³ भारतीयो निराकरोत् ।
आर्यारिचाकुरन् मोघ पाकयस्याक्रमणत्रयम् ॥११॥

करेगा। बस बहुत सी सेना के साथ छम्ब पर चढाई कर दी।४–८।

अपनी सेना के भिन्न २ प्रकारो को उसने जुटाया जैसे सेब्रजेट तथा लडाकू स्टार विमान अनेक प्रकार के तोपखाने, पेट्टन टैंको के समूह (स्क्वाड्रन)। इस प्रकार छम्ब पर बमबारी का भारतीयो ने व्यथ किया। उन्होने पाकय क ३ आक्रमणो को निरर्थक कर दिया।९–१०।

पहले ताहुतो-मेलुत पर अलग २ हार खा कर उसने फिर एक साथ दोनो पर चढाई की क्योंकि उसका प्रयोजन अभी भारत

१ तोपति हन्ति इति तोप । २ अराते र्लव कतन यस्मात् तद् आटिलरी इति आग्लभाषायाम् । ३ बम=बम्ब ।

ताड़ितो–मेलुतः पूर्वं ग्रामाभ्यां च पृथक् पृथक् ।
ताभ्यां पराभवात् पश्चादुभयो. सकुल तत' ॥१२॥
आर्यशक्त्यनुमधान साप्रत तु प्रयोजनम् ।
पृथुर्द शस्य लिप्माया–र्मायान तुरीयकम् ॥१३॥
स्कन्धावार–सुमन्नदुध–युग्मेनाथ समन्वितम् ।
शतेन पेट्टनटेंकानां मोटराणा कदम्बकै' ॥१४॥
बृहन्मध्यम तोपानां गणे साधु विदारणः ।
आक्रान्ते भारती सैन्ये पृथ्वेकगण–सख्यकम् ॥१५॥
भारता युयुधुः शत्रु–मध्यवसाय पूर्वकम् ।
अत्यूनेन सहायेन शस्त्रो–र्निष्वक् तथैव च ॥१६॥

की ताकत को कूतना था। फिर करारी चोट करने की ठान कर चौथा आक्रमण किया ॥११–१३॥

खूब सज विमानो के दो स्काड्रन १०० पेट्टन टेंक, मोटरो का ढेर, भारी तथा मध्यम तोप खाने के साथ, जो शत्रु सेना पर तीखी मार कर सकें, उसने भारत की सेना पर–जो थोडी सी सख्या म थी–आक्रमण किया ॥१४–१५॥

भारती जवान बडी सावधानी व लगन से लडे। उनके सहायक बहुत थोडे थे। इसी भाति शस्त्र भी कम, फिर भी उन्होने शत्रु के

अब्धिटैंक-वलिं दत्वा चाहता निहता द्विपः ।
अजयत्व हि पेट्टाना तद्दिन वितथ ह्यभूत् ॥१७॥
पाक्य सैन्यस्य बाहुल्य विचिन्त्याक्रम्य रहसः ।
प्रार्थयद्वायुसेनायाः सहाय्य द्विट्पराभवे ॥१८॥
अपाक्रमत्तत' पीर जमाल सैन्य-नायकः ।
धराधरो यथासौ च धारासपातमायुधैः ॥१६॥
धाराधर-सपत्नस्य ममर्ष ज्वलन दृट ॥१६३ ॥
आरुह्य वीराः शुभपुष्पकाणि देशाधिपाना कृतिनः समस्ता' ।
आप्त्वा निदेश घटिकावधाना आजग्मुरद्धा समिदन्तरिक्षे ।२०।

चार टैंको को समाप्त कर दिया। पेट्टन टैंक अजेय हैं, यह उसी दिन झूठ सिद्ध हो गया। उनके तेज आक्रमण के साथ २ शत्रु सेना का जोर देखकर शत्रु को मात देने के उद्देश्य से अपनी वायु सेना की सहायता की माग की। और पीर जमालु पर चढाई कर दी। अपने अस्त्रो से मूसलाधार वर्षा की तरह आग बरसाते हुए दुश्मन की गोलियोकी बौछार को उ होने पहाडकी तरह दृढ होकर सहन किया ॥१६-१६३॥

देश के अधिकारियो द्वारा आदेश पाते ही हमारे हवाबाज वीर पलक मारते ही लडाई के मैदान पर आ डटे। उनके वहा स्काडन के ज`म का उत्सव मनाया जा रहा था। उसे छोडकर

त्यष्कृत्वोत्सव स्काइन-जन्मनोऽपि युद्धोत्सव प्राप सुवीरहृग
सैन्योमरुत्सूनुरिव प्रकृष्ट समाचरच्छत्रुबलस्य मन्थनम् ।२१

मापत्रिणि' कृतकृत्ये तुषारपातो बभूव पाकाजे ।
पापत्रिएणप्यकरोद्' बम्बासार जौरियान ॥२२॥

पञ्चाशन्नागरिकान् हत्वा ध्वमन् महस्जित तेषाम् ।
स पराभवादुद्विग्न' पिञ्जलः स्यात्कथ न कृपण ॥२३॥

वे वीरो के हृदय हुलसाने वाले युद्धोत्सव म पहुच गये । पवन-कुमार महावीर की तरह उन्होने शत्रु की सेना की अच्छी तरह मथना प्रारम्भ कर दिया ॥२१॥

भारतीय सेना के कृतकृत्य होते ही पाक्य सेना रूपी कमल पर पाला पड गया । पाक्य हवाबाजो ने जोरियान पर बम्ब वर्षा की । वहा ५० नागरिक मारे गये और उनकी मस्जिद ध्वस्त हो गई । हार पर हार खाकर वह कृपण तिलमिला उठा। जोरियन को अधीन कर हमारे जवानो ने विश्राम किया । फिर पाक्य आक्रमण को भी परास्त किया ।

१ भारतस्य वायुयानानि । २ पाक्यस्य वायुयानानि ।

जोरियाने कृताधीने भारतैः सस्थिति. कृता।
मुहुराक्रमण पाक्य निराकुर्वन्त भारताः ॥२४॥
योत्स्यमान हि मापत्रिन् मशकैः[1] सेत्रकान्प्रति[2] ।
अवारुधत्पाक्य-सैन्य यावत् सख्यविमर्जनम् ॥२५॥
अखनूर-जयेप्सापि पाक्यस्याभून्मरीचिका ।
शुद्धमतौ सुहृद्‌दूत्वे पापस्य निष्कृतिं प्रति ॥२६॥
अगाड्राष्ट्रमामीद्‌वाड् मनसगोचरम् ।
चीनस्यामित्रवच्चेष्टा चेन्यीभुट्टोसमागम' ॥२७॥

भारती हवाबाज अपने नेट (मच्छड) विमानो से शत्रु के सैत्रो से भिड पडे, और पाक्य सेना को तब तक रोक रखा जब तक युद्ध समाप्त न हुआ। पाकिस्तान को अखनूर जीतने की लालसा भी मृगतृष्णा ही रही। मित्रता का भाव रखने वाले शुद्धमति के साथ पापी द्वारा दुराचरण के प्रति राष्ट्रपतियो ने चुप्पी साध ली। यह बात मन तथा वाणी के अगोचर है। चीन द्वारा शत्रु की भांति आचरण का प्रमाण चेन यी तथा भुट्टो की उस समय की भेंट है। राष्ट्रसघ के प्रधान ऊथाट महोदय ने उस

१ भारतस्य Gnat मशक विमान । २ सेत्रजेट पाक्य विमान ।

प्रधानसचिवोराष्ट्र-सघस्योत्थान्त-सज्जनः ।
आर्थयद्राष्ट्रयुगल योत्स्यमानमत[1] परम् ॥२८॥
प्रहार सृज्यत मैच्छद्[1] अन्तर्वेलां प्रतीक्षताम् ।
भारत 'आम्' इति प्राह पाक्यो मा स्मान्नु वक्ति ति ।२६॥
चित्र यत स ऊत्थान्तोऽयथास्त्र नः स्म वाञ्छते ।
हाजीपीराऽतिधन्याने द्वौ शृङ्गौ हिमभूभृदि ॥३०॥
कार्यागिलटिव्थवाले स हातु स्मार्यानपेक्षते ।
यमक-भारतस्याङ्ग[2] स्पष्ट रसयोद्घोषितम् ॥३१॥

समय (भारत पाक) राष्ट्रो से-जा लड रहे थे-प्रहार रोकने की प्रायना की । तथा बीच के समय में प्रतीक्षा करने को । भारत मान गया परन्तु पाक चुप रहा । यह दु ख की बात है कि उत्थाट भी यथापूर्व स्थिति नही चाहते थे ॥२६॥

सुगम माग वाला हाजी पोर दर्रा तथा हिमालय पर कार्यागल टियवाल की चोटियो को वे भारत से छुडाना चाहते थे । जम्मू-काश्मीर को रसिया ने भारत का अभिन्न अग घोषित किया था ।

१ Cease fire युद्ध विराम । २ जम्मू काश्मीर ।

यमकस्याश-भूतानि स्थानान्येतानि साम्प्रतम् ।
परिषद' सुरक्षायाः पाण्डुलिप्या हि प्रक्रमः ॥३२॥
नाम्यशसत् पाक्य साप्यग्रघर्षण-पापिनम् ।
आस्माकीन' प्रदेशोऽय छम्ब इत्यवधारणा ॥३३ ।
मुख्याना तद्वरूथिन्या मर्मस्थाने सुनिश्चितम् ।
विचार्येत्थ सपत्नो नः छेत्तु जातु व्यवस्यति ॥३४॥
शठे शाठय विना कर्तुं तद्भङ्गो नैव सम्भवः ।
तस्य मर्मस्थल भेत्तु ऊहापोहो न वर्तते ॥३५॥

ये भी इसी कारण से भारत के ही अ ग थे । सुरक्षा परिषद् में प्रस्ताव की पाण्डुलिपि कुछ और ही थी, परन्तु पापी पाक्य आक्रामक है यह बात उससे निकाल दी गयी ॥३२॥

हमारे सेना नायक को निश्चय धारणा थी कि छम्ब हमारा मम स्थान है । यह विचार कर शत्रु उसे हमसे काटने का यत्न करे। तो जैसे के साथ तैसा करने के बिना उसे ठडा नही किया जा सकता । उसके मर्मस्थल पर चोट करने मे सोच विचार की आवश्यकता नही है ॥३५॥

धन्या दिवीक्रमाऽस्माक प्रधानामात्य शास्त्रिण' ।
शूराश्चलालका मातु' सत्य नाम बहादुरा ॥३६॥
स्पष्ट-दत्तनिदेशास्ते वीरोत्साह विवर्द्धना.
श्रहोरात्रैकमात्रेण भारतस्य वरूथिनी ३७
जगाम यमक चैव पजाब युगपद्द्रतम्
यत्रपनीतोऽयूवस्यान् स्वीये मर्मस्थले युधि ३८
जिष्णुत्र. प्रभविष्यामस्तत्सैन्येऽत्रप्रकम्पिते
दुरात्मा विप्रकृतको विप्रकृष्टो मदा वरः ३९
उल्लघनमत' सीम्न' स्वसैन्यचलितस्य वै

हमारे प्रधान मत्री लाल बहादुर थे । उनका बहादुर नाम सचमुच ठीक था । उ होने वीरो का उत्साह बढाने वाला आदेश दिया । तब एक दिन भर मे भारती सेना जम्मू-काश्मीर तथा पजाब दोनो जगह एक साथ तत्काल पहुच गई । इमसे अयूब को अपने ही मर्मस्थल पर खिच कर आना पडा । उसकी सेना के उधर बिखर जाने से हमारी जीत होगी । बुराई करने वाले को दूर हटाना ही ठीक होता है ।।३६।।

इस प्रकार हमारी सेना के द्वारा सीमा लाघकर आगे बढने पर उसके सम्ब ध मे दिगविजय की अभिलाषा की आशका नही

मा स्म दिग्जय सकाशा यात्रा रक्षार्थमात्मनः ॥४०॥
रयातमयतने लोके शास्त्रे च साम्परायिके ।
डम्बर घर्षणस्यैव सुरक्षायाः किलात्मनः ॥४१॥
देशस्य देश–सैन्यस्य चात्मसम्मानरक्षणे ।
प्रक्रमोऽय तु विशदो न्याययुक्तः सुनिश्चितः ॥४२॥
कर्मठा कृतिनः सैन्याः न सान्व्याम्बरडम्बरम् ।
थानिष्कर्ताऽन्यक्षेत्रस्य निराकर्ता रिपोर्भरम् ॥४३॥

करनी चाहिए। यह हमारी अपनी सुरक्षा के निमित्त किया गया। सग्राम के शास्त्र में तथा आज जगत् म यह बात प्रसिद्ध है कि सघर्षण करने की प्रक्रिया भी अपनी सुरक्षा के लिये भी हो सकती है ॥४१॥

देश की देश की सेना की तथा अपने सम्मान की रक्षा के लिये यही उपाय शुद्ध, न्याययुक्त तथा सुनिश्चित है। हमारे जवान कर्मठ, तथा कृती थे साफ के अम्बर डम्बर नही। उस दूसरे मोर्चे को ढूढ निकालने वाले ने शत्रु का जोर ढीला कर दिया ॥४३

उद्योग पर्व,

जेट–विमानादीनि

तामस–रदान्या अमेरिका पाक्यस्थानाय आततायिनां अग्रेसराय शस्त्रास्त्रमैच प्रभूत अददात् । अशान्ति–कलह प्रति प्रद्रवत' मसारस्य जवस्य आहर्ता जवाहरेण अमेरिकाधिप' तत् प्रति सावधान' कृत । एतत् कार्य भारतस्य शान्ति सौख्य प्रति दुराघातसम्भव शत्रो अभियान–प्रेरकमिति तेन

जेट विमान आदि

आततायियो के सरदार पाकिस्तान को तमोगुणी दानी अमेरिका ने शस्त्रास्त्रो की भीख बडे परिमाण मे दी । अशान्ति तथा झगडे को घुड्दोड मे तेजी से भागते हुए ससार के वेग को रोकने मे प्रयत्नशील जवाहिर न अमेरिका के राष्ट्रपति को सावधान किया । उन्होने कहा कि अमरिका का यह काम भारत की शांति सुख के प्रति आघात पहुचाने वाला है । हमारे प्रधानमंत्री को अमेरिका के राष्ट्रपति तथा परराष्ट्रमंत्र ने आश्वासन दिया कि इन

आख्यातम् । अमेरिकाया राष्ट्रपतिना परराष्ट्रमन्त्रिणा च इमानि शस्त्राणि भारताक्रमणार्थं न प्रयोज्यानि इति स नः प्रधानमन्त्री स्वाश्वस्तः । प्रतिश्रुतश्च यदि कदाचित् पाक्या भारताक्रमणे एतानि प्रयोजयेयुः वय युष्माकं साहाय्ये उपस्था: स्यामहे । साम्प्रत तु तत् प्रतिश्रवण मोघ जातम् । इद चत्र विस्मयकर यत् अमेरिकायाः प्रतिश्रवणे सति पाक्यराष्ट्रपतिना सममेव प्रख्यात यत् पाक्यस्य एभिः शस्त्रै-र्भारत प्रति योद्धु सर्वाधिकारः । एतदपि आमेरिक-राष्ट्रपतिना न प्रत्याख्यातम् ।

शस्त्रास्त्रों को भारत के विरुद्ध काम मे नही लाया जायगा । और साथ ही यह प्रतिज्ञा की कि यदि कभी पाकिस्तान भारत पर आक्रमण मे इन्हे बर्तेगा तो हम आपकी सहायता के लिये आ उपस्थित होगे । यह प्रतिज्ञा साम्प्रत निरर्थक रही ।

यह बडी भारी विस्मय देने वाली विचित्र बात है कि उक्त कथन के साथ २ बराबर पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने पुकार २ कर कहा कि इन शस्त्रा को हमें भारत के साथ युद्ध में काम में लेने का पूरा अधिकार है । अमेरिका के राष्ट्रपति ने अयूब को इस कथन पर नहीं टोका । खैर ।

अस्तु, अजेयानि सेब्रजेटानि वायुयानानि अभेद्यानि पेट्टनटैंकानि (टकानि वा), शस्त्रसन्नद्धानि गन्त्रीणि शस्त्राण्य न्यानि पाक्यस्थान आप्त्वा दर्पाभिभूतो भारतघर्षणाभिलाषी अन्ताराष्ट्रिय सीमान समुल्लङ्घ्य च्छम्बप्रदेशे प्राविशत् ।

वीरप्रसो–र्भारतभुवः शूरा सुप्तकेसरिण इव जाग्रता घनगर्जसिंहनाद निनादन्त' सांयुगीना विक्रान्ता अभिषेणन–परस्य शत्रो रदनानि प्रभञ्जयन्त' अजेयताभिमान चूर्णयन्तो राघवस्य लाघवेन पिनाकिनः पिनाकमिव विध्वंसयन्तः शिति-

अजेय सेब्रजेट विमान। अभेद्य पेट्टनटेंका, बख्तरबद गाडियो तथा दूसरे शस्त्रो से सजकर गर्व के साथ भारत को कुचलने के लिए अतर् राष्ट्रीय सीमा को लाघ कर पाकस्थान छम्ब प्रदेश में आ घमका।

वीरों को ज म देने वाली भारतभूमि के पूत सूते हुए सिह के समान जागकर, बादल की तरह दहाडते हुए वीर, आक्रामक शत्रु के दातो को तोडते हुए, उनके अपनी अजेयता के अभिमान को चूरते हुए, जिस प्रकार भगवान् रघुनाथ ने पिनाकी शकर के पिनाक धनुषका विध्वस किया, नितिकण्ठ शकर के वरदान में दिये

-कण्ठवरप्राप्तानि दशकण्ठस्य कण्ठानि सुकण्ठेनेव विलु ठय-न्तः प्रतिभटाना कण्ठानि च्छेदयन्त अग्रेसरा बभूवुः ।

यथा सुवेलाचलादुदपतत्सुकण्ठो दशकण्ठ मल्लयुद्धे जित्वा प्रत्यागतः तथैनार्य-वीराः प्रतिभटान् धर्षयित्वा विजय प्रापु' । रामाभिरामः एकाकी रामानुज-साहाय्य विना पि भूरपूणाविव प्रभूतखरदूषण भटमन्य भुट यूपबन्धनार्हं अपूर्न बिल प्रविशन्त मूषकमित्र मूसां अपयशगानार्हं कृत्वा स्वयशोज्वल-वितानमतानिषु ।

हुए दशकण्ठ रावण के दशों कण्ठो को सुकण्ठ ने धरती मे लुढकाया, उसी तरह शत्रु की गर्दन छेदते हुए आगे बढे ।

जिस प्रकार सुकण्ठ (सुग्रीव) सुबेल पवत से कूदकर दशमुख रावण को मल्लयुद्ध में पछाड कर वापिस लौट आया उसी प्रकार भारत के जवानो ने शत्रुओ को परास्त कर विजय प्राप्त की।

रामानुज लक्ष्मण की सहायता बिना ही अकेले रामाभिराम राम ने खर दूषण को यमपुर भेज दिया योद्धा सी डीग हाकने वाले भुट्टो तथा बालपशु की भांति यूप में बाधने योग्य अयूब, एव बिल म घुसने वाले मूषक की भांति मूसा को कलक का पात्र बनाकर भारत के जवानो ने अपने यश की चादनी छिटका दी ।

छम्बस्तोत्रम्

प्रतियोद्धुं द्विषच्चक्रं जयेन्द्रः प्राप्तशासनः ।
साहसी च युवा सिंहोपाह्व पञ्च-दशानुगः ॥१॥

जातु विंशति वा तेषां प्राप्तादेशाश्च पतेः ।
द्वितीयो लपनान्त्य, स धरोपरि कृतासनः ॥२॥

शत्रुः समारभद् घोरं ज्वलनं गोलकान्वितम् ।
सपत्नस्य बले वृद्धि-र्नाभूदुच्चलने ततः ॥३॥

जयेन्द्रोऽनाशयच्छस्त्र-सन्नद्धं शकटत्रयम् ।
तदा सकौशलं वीरोऽपचक्राम निजासनात् ॥४॥

छम्ब स्तोत्र

शत्रु की चढाई को रोकने के लिए जयेन्द्र को आदेश मिला। वह साहसी युवा, पुरुषसिंह सेनापति की आज्ञा पर १५ या-२० साथियों को लेकर एक पहाड़ी पर डट गया। वह सकण्ड लफ्टिनेंट था। शत्रु ने गोलियों और आग की घोर वर्षा शुरु कर दी। परन्तु शत्रु की फौज आगे न बढ़ सकी जयेन्द्र ने तीन बख्तर-बंद गाड़ियों का काम तमाम कर दिया। तब वह चतुराई से अपने

अपर च घर भित्वा दृढस्तत्र व्यवस्थितः ।
सपत्नस्तु पराभूत मत्वा सोऽग्रसरोऽभवत् ॥५॥
अस्त्रापाते परे प्राप्ते शस्त्राघात समारभत् ।
सेनामुखं तु वीराणामावृत सर्वतोदिशम् ॥६॥
तत्याजासन स्वस्य मर्त्ते मशप्तका ध्रुवाः ।
जयेन्द्र आहत' सख्ये गोलकैः शत्रुणाऽष्टभिः ॥७॥
सर्वे वीरगति प्रापु-र्जन्मभूम्या सुरक्षणे ।
जनन्य''सुप्रजास्तेषां देशो गौरवमार्जनम् ॥८॥
वास्तव्यो भुभुनुपुरे नाम्ना चायुबखानिति ।
अनशट्टंक युगल सः शत्रोर्विस्मयकारणम् ॥९॥

मोर्चे से खसक गया और दूसरी टेकरी पर जा जमा । शत्रु ने समझा वह भाग निकला और वह आगे बढा । आपस में शस्त्रास्त्रो के चलने से मार पडने लगी । अपनी सेना के वीरो की टुकडी चारो तरफ स घिर गई । पर तु वे पीछे हटने वाले थोडे ही थे । उन्होंने अपना मोर्चा नही छोडा जयन्द्र को उस समय आठ गोलियां लगी और सब जवान जन्मभूमि की रक्षा करते करते वीर गति को प्राप्त हुए । इनकी माताऍ धन्य हैं । इन से देश का गौरव बढा । भूभनु के निवासी अयूब खा ने शत्रु अयूब खा क दो टेंको के टुकडे कर दिये । यह आश्चय की बात है ।

जोधपुरे पाक्याक्रमणम्

'नेत्रतु'वारमाक्रान्तं योद्धानां शत्रुणा पुरम् ।
इदं वैमानिकं स्थानं केवलं शिक्षणस्थलम् ॥१॥
जेटसञ्चालका' पाक्या प्रायेणाऽन्तेनिवासिन ।
नानीकस्थानि यानान्यासन्नैवास्त्राणि तत्र वै ॥२॥
न रक्षिवर्गशस्त्राणि प्रावर्तन्त रणाङ्गणे ।
शात्रवाः प्राक्षिपन्बम्बान् 'रसनन्देन्दु सख्यकान् ॥३॥
शत्रोमन्यु कदाचस्तु लक्ष्ये वै सर्वतोऽधिकम् ।

जोधपुर पर पाक आक्रमण

जोधपुर पर पाकिस्तानने ६२ बार आक्रमण किया यहा का हवाई अड्डा केवल हवाबाजी सिखाने का स्थान है ॥१॥ पाकिस्तान के जेट विमान चालक प्राय यहीं के शिष्य हैं । न तो यह सुरक्षा का स्थान है न यहा विमान विध्वसक शस्त्र हैं ॥२॥ न रखवाली करने वाले यहा रहते हैं न रणक्षेत्र के अस्त्र यहा रखे हुए हैं। यहा शत्रुने १९६ बम्ब गिराए ॥३॥ इस लक्ष्य पर शत्रुने अपना सबसे बढकर रोष

अकेपु सख्या १ ६२ २ १९६

अस्त्राणि प्राक्षिपच्छत्रुः सर्यान विविधानि वै ।।४।।
[3]अम्बिन्दूनि चाम्बाले [4]चाब्ध्यग्निर्मादमेपुरे ।
[5]पठानपुर्यभ्ररस हलवाडे [6]वियद्वसुः ।।५।।
चित्र चोल्लासजनक लक्ष्यभ्रष्टानि सर्वशः ।
ऋते कारां पितृवन सामयाना निकेतनम् ।।६।।
अपराद्धपृषत्कानां गतिं सर्वे गता-स्ततः ।
चामुण्डे त्व भगवति ह्यधितिष्ठति पत्तनम् ।।७।।

निकाला । शत्रु ने अपने अस्त्र स्थानो स्थानो पर भिन्न २ सख्या में डाले ।।४। अम्बाले में १६ आत्मपुर मे ३४, पठानकोट मे ६० हलवाड़ा में ८० ।।५।।

यह बात विचित्र तथा उल्लास देने वाली है कि (जोधपुर पर) सारे बम्ब लक्ष्यभ्रष्ट पड़े । जेलखाना, श्मशान-भूमि अस्पताल के अतिरक्त वे सब जगह पर लक्ष्य चूक कर पड़े । हे चामुण्डा माता, तू इस नगर की अधिष्ठात्री देवो है ।।७।। हे चण्ड मुण्ड को बध करने वाली, तूने ही रणमें शत्रु का भग किया । जोधपुर के नागरिको ने चूड़ियो की सुदर पारसल बनाकर युद्ध म कुशल कहलाने वाले शत्रुके सेनापतिके पास उपहार के रूप में भेजी । और कहलाया कि चूड़िया पहिन कर

अंकेषु सख्या ३ १६ ४ ३४ ५ ६० ६ ८०

तेषां बम्बपृषत्कास्तेऽपरेषु दृषदः किल ।
दृषदृहृदो दुहृदस्ते ह्यपेक्षन्ते दृषत्परम् ॥८॥

चण्डमुण्डान्तके देवि रणे मंगमरे' कृतम् ।
उपाहरन्नागरिका' शुभ्रां वलयपोटलीम् ॥६॥

पाक्य-सेनाधिप वीर रणकौशलगर्वितम् ।
वलयालङ्कृतो भूत्वा स्थान गन्त्वावरोधनम् ॥१०॥

त्व हि मासि मर्टमन्यस्तत्रैव वसति कुरु ।
चामुण्डे त्व जगन्मात जय दुष्ट निबर्हणे ॥११॥

जनाने मे विराजिए बम्ब के अपराधियो (निशाने चूक बम्ब वाजो) ने पत्थर का ही अपराध किया, वे पाषाण हृदय दुष्ट थे उनके साथ तो ईट के बदले पत्थर की नीति की आवश्यकता थी । आप अपने आपको योद्धा मानते हैं आप वहो निवास कीजिए । हे चामुण्डाजी जगत् की माता दुष्ट दलन करने वाली आपका जय हो ॥८-११॥

उस आक्रमण के समय अचर पशु, पक्षी मनुष्यो को उल्लास हुआ । शेर दहाडने लगे, मार बोलने लगे मिरोन वजने लगे । वच्चो के खिलवाड होने लगे । वह नगर वच्चो के खेलका मैदान बन गया (यह छन्दभी माणवकाक्रीड) है ॥१२॥

तत्समये तत्रस्थानां अवरपशुपक्षिमानवानां उल्लासः–
'सिंहशिखिस्वन्निलका – गर्जनकेकानिनदम् ।
मानवकानां रमणं मानवकाक्रीडमिदम् ॥१२॥
आक्रमणे पाक्यकृतेऽमर-ज्जोधपुराक्रीडम् ।
मानसहर्षोत्सरः प्राणभृतां वै सहसा ॥१३॥
केकाः सख्यस्य संलापः गर्जनं विग्रहस्य च ।
सूत्ररूपेण निनदो ध्वनिबोधाय बालानाम् ॥१४॥
केका प्रणययुक्ताश्च योधार्थं सिंहगर्जनम् ।
कम्बुनादं गिरीनम्य चक्रुर्वै तुमुलध्वनिम् ॥१५॥

प्राणधारी व मनुष्यों के लिए हर्ष एवं प्रसन्नता का अवसर बन गया ॥१३॥ मोर की कूक मित्रता की आवाज थी, सिंह की दहाड़ युद्ध की द्योतक। इस प्रकार अज्ञानियों को समझाने की ये सूत्ररूप आवाजें (नारे) थी ॥१४॥ प्रेमयुक्त तो मोर की कूक, योद्धाओंके लिए सिंह की गर्जना शंखध्वनि के समान सिरीन की तुमुल ध्वनि हुई। इन तीनों के शब्द विविध तथा अलग २ थे। मयूर द्विजिह्व (सर्पों तथा अशिष्ट बोलने वालों), जिह्मग (सर्पों की टेढी चाल चलने वालों), बिलेश (सर्प पिल्लवक्ष आदि बिलों में रहने वालों) को लेकर आकाशमें उड़कर भूमिपर पटक

१ स्वनं इर्लात इति स्वन्निलका, सिरीन इति आंग्ल भाषायाम् ।

वभूवुश्च त्रयो घोषा त्रिविधास्तु पृथक् पृथक् ।
भुजगभुग् द्विजिह्वानां जिह्मगानां परो रिपुः ॥१६॥
गगनाद् भुवि निक्षेपाद् यो हिनस्ति विलेशयान् ।
मेघनादानुलासी च राष्ट्रपक्षि प्रतिष्ठितः ॥१७॥
मृगेन्द्रः स्थलचारीशो राष्ट्र-लक्ष्म चतुर्मुखः ।
जलजन्तु जले वासी भीसहज. सख्यप्रक्रम' ॥१८॥
यदृच्छया रुवन्ति स्म पशवश्च पतत्रिण ।
सेनानीवाहनो-बर्हि श्चामुण्डावाहनो हरिः ॥१९॥

कर मारता हैं। मघ की गर्जना से प्रसन्न होने वाला यह पक्षि हमार राष्ट्र पक्षि माना गया है। स्थलचरो के राजा सिंह के चार मुखो की मूर्ति राष्ट्रका चिह्न है। जलचर जलज तु शख लक्ष्मी का भाई है तथा सख्या वाची है। ये सब स्वत बोल उठे पशु, पक्षी स्वत बोलने लगे सोमकार्तिक भगवान् का वाहन मोर है। चामुण्डा माताका वाहन सिंह है। शख जनादन भगवान् का आयुध है तथा युद्ध का श्रीगणेश करने वाला तथा शुभ है। वीरप्रसू भारत माताकी ये स तान आकाश, पृथ्वी तथा जलके ज तु हैं। इन्हो ने शत्रुओ को रणोत्सव मे आमं त्रत किया।

जनार्दनायुधः शखः सख्ये प्रत्युक्रमः शुभः ।
वीरप्रसू-प्रसूता ये नमो भूजलजन्तवः ॥२०॥
सपत्ना-नाह्वयन्तिस्म वीरा इव रणोत्सवे ।
रणे प्रत्यागतः शत्रुः शाणं वीर्यस्य मन्यते ॥२१॥
आर्य-शौयकषारेखा जुगुपुः पश्यतोहराः ॥२१३ ॥

रण में सामने आया शत्रु वीरता (पराक्रम) की कसौटी होता है आर्यों के शौर्य की कसौटी पर रेखा को देखने वाले लोगो ने छिपा लिया जैसे पश्यतोहर (स्वर्णकार) करता है ॥१५ २१३॥

अमृतसरे पाक्याक्रमणम्

धृष्ट च पेठन पक्ष पाक्यस्थानस्य मारते ।
दुर्धर्षं च नृशस च वीरैर्वार्येण सुवृतम् ॥१॥
प्रत्यक्ष-द्रष्टोराचेद वृवगुद्धर्षण महत् ।
वियद्भिज्जयघोष च गणास्त्र निमानभिद् ॥२॥
कृष्णास्वयवरे मत्स्य विम्बलक्ष्य ययार्जुन ।
लक्ष्यभिद् वायुयानभिद् राजु. शस्त्रभृतां वरः ॥३॥

॥ अमृतसर पर पाक-आक्रमण ॥

भारतवष मे पाकिस्तान ने विनाशो युद्ध चाले को जि ह् घुसपेठ कहा गया है। वे दुर्धप तथा नशस थी। यहां के वीरा ने उनका वीरताने सामना किया। लोगो न (अमनसर पर) आक्रमण का आखो देखा साहस बढाने वाला वणन किया है। वहा आकाश का चीरने वाला जयघोष तथा विमानो को मारगिराने वाले गणास्त्रो की आवाज गूज रही थी ॥१ २॥ द्रौपदी के स्वयवरमें (तिलकुण्ड मे) छाया को देखकर जिस प्रकार अर्जुन ने ऊपर चकरो म फिरता मछली वाणसे भेदी थी उसी तरह लक्ष्यभेदी शस्त्रधारियो में श्रेष्ठ राजु था ॥३॥ विमानो को

अमी वीरर्षभो राजु र्वायुवाहन भञ्जन. ।
अत्राहता वायुयाना उल्काकल्पा धरां गताः ॥४॥
छिन्ना भिन्ना स्तथा खिन्ना आततायिद्विपद्गणाः ।
सुधामरौकसो लोका निघ्नौघजल-कच्छपाः ॥५॥
शत्रोर्वैमानिके धपे मुदाट्टोपरिसंस्थिता ।
अद्राक्षुः सम्भ्रमतो विमानपतनस्थलम् ॥६॥
तस्य शेष निरभस प्रद्रवन्ति दिदृक्षवः ।
कीदृशा मामका योधा विपाका दुष्कृतस्य च ॥७॥

मार गिराने मे कुशल यह राजु वीरो म अग्रणी था। उसके मारे हुए वायुयान उल्काओ की तरह गिर कर पृथ्वी पर आते थे। ४। वे छिन्न भिन्न हो जाते थे और आततायी शत्रु खिन्न हो जाते। ये अमृतसर के निवासी विघ्नरूपी सरोवर के जलमे कछुओ की भाति थे ॥५॥ शत्रु के विमानो को आते देख कर वे अटारियो पर चढ जाते थे। जब उसे गोला लगती थी तो उसकी गति को देखने के लिए वे कौतुक के साथ विमान के गिरने के स्थान पर शस्त्र की मारस नही बचने वाला उसका शेष देखने की इच्छासे दौड कर जाते थे कि हमार योधा का कौशल कैसा है और शत्रु के दुराचार का क्या फल उसे भोगना पड़ा ॥७॥ उन्हें यह कुतूहल भी होता था कि राजू को शस्त्र चलाने की प्रवीणता, धीरता तथा हाथ की सफाई कैसी है।

राजोः प्रनीणता शस्त्रे धीरता हस्तलाघवम् ।
अथातः श्रूयतामङ्ग स्वागत सापरायिकम् ॥८॥
व्यञ्जनानि सुपक्वानि फलानि मधुराणिच ।
पयसः पूर्णपात्राणि द्रप्सस्य च प्रियस्य च ॥६॥
फुल्लकायानि तप्तानि शाकाः द्विदलसयुता ।
मातृवत्पितृवत्स्नेहा-द् ल्वणादभिनन्दनम् ॥१०॥
समर्पिता अनीकिन्यै भटोत्साह विवर्धनैः ।
गृहागतेभ्यो रैलेन स्नेहश्लिष्टोपहारनत् ॥११॥
सम्भृता सर्वतो रथ्या आतिथेयैः सुवस्तुभिः ।
उल्लासो जयघोषश्चाभूदपूर्वो मुहुर्मुहुः ॥१२॥

अब अपने योद्धाओं के स्वागत की बात सुन लीजिए । अच्छी तरह सिद्ध किए पकान्न, मीठे फल दूध तथा प्यारी लस्सी को पजाबी गिलास । गरम गरम फुलके, शाक दालसे माता पिता जसे स्नेह से उनका पूर्ण अभिन दन करते थे ॥८-१०॥ ये सब पदार्थ अपने जवानो के उत्साह बढाने के लिए अपने २ घर से लाकर, रेल से आए योधाओं को हृदय से लगाकर अर्पित करते थे ॥११॥ आतिथिसत्कार वस्तुओं से उनकेडिब्बो को भर दिया । इस प्रकार स्टेशन पर अभूतपूर्व उल्लास तथा जयघोष होता रहा ।

नेता लाल बहादुरो जयतु न बहादर, सुप्रजा,
माता भारत-भूमिरस्य जननी वीरप्रसूते उभे ।
भूम्या लालकरत्न-युद्ध निरता धीराश्च वीराः पराः ।
भूपासुम्सकलाः सुरा रिपु यथा जिष्णु रणे जिष्णवः ॥१३॥
मार्पपाऽमृतसर्मि प्रचोदिता वै निस्वान, सितगरुतः प्रहर्षणीर।
स्वेडा सा रिपुदल कर्णगोचरा च सान्त्व वा बहुरुशतीति
व्यत्ययोऽसौ ॥१४॥

परम आदरणीय हमारे नेता लाल बहादुर की जय हो। उनकी जन्मभूमि तथा जननी दोनो वीर प्रसू हैं। इस भूमि के श्रेष्ठ लाल, जो धीर तथा वीर हैं युद्ध में रत हैं। वे उस प्रकार विजयी हुए जिस प्रकार इन्द्रने राक्षसा पर विजय पाई। १३॥ अमृतसर में प्रचारित इस प्रकार की ध्वनि हंसो की वाणी के समान हर्ष बढाने वाली थी। उधर शत्रु सैन्य के कानो पर पडती हुई विपरीत भाव उत्पन्न करती इधर बहुत सान्त्वना देने वाली आवाज अमगल करने वाली आवाज॥१४॥

सौराष्ट्र-राजस्थानयो पाक्याक्रमणम्

युद्ध प्रख्यापित पाक्य–मयूबेन दुरात्मना ।
शान्ति प्रियेण देशेन सम मैत्र्यामिलाषिणा ॥१॥

शस्त्राघातस्य तल्लक्ष्य कृत दूरस्थित पुरम् ।
नौकाश्रय प्रतिष्ठान विमानाना तथैव तत् ॥२॥

नगरे जामनृपते र्बम्बासार सभारमत् ।
आर्यावर्तस्य सेनाया द्विविध प्रक्रियास्थलम् ॥३॥

मत्वात्मन॰ कुचेष्टाया शरव्य सुलभ तत ।
अथवा प्रकटी कर्तु स्मृति जूनागढस्य वै ॥४॥

सौराष्ट्र राजस्थान पर पाक्याक्रमण

उससे मित्रता की अभिलाषा रखने वाले शांति प्रिय देश के साथ दुरात्मा अयूब ने युद्ध की घोषणा कर दी । अपने शस्त्रो से आघात पहुचाने के लिए दूरके नगर को लक्ष्य बनाया । यह नगर ब दरगाह तथा विमानो का अड्डा है । अर्थात् आर्यावर्त की सेना का दोहरी चेष्टाओ का के द्र है । उसने अपनी कुचेष्टा का शिकार उसे ही बनाया, अथवा जूनागढ की याद को दुहराने के लिये ऐसा किया ॥ १–४॥ उसके खोटे निशानेबाजो के बम्ब

अयूबस्य भारतस्य शक्त्यनु सन्धानम्
गुरुशिष्य परम्परा

स्वदेशरक्षणे चैव पराक्रमासादने पुनः ।
चीनस्य पदशिष्यत्व पाकपरथा जगृहुर्वम् ॥१॥
उपकारिणि विश्रब्धे शुद्धमत्युपवर्तने ।
प्रागल्भच्चाउ सौभ्रात्रमुभयो हिन्दचीनयोः ॥२॥
आरवेवाभ्यचस्कन्द नगाधीशस्यवर्त्मसु ।
हिमाद्रि शिखरे चाऊ कच्छेऽयूबो हि जग्मतु ॥३॥

भारत की शक्ति की जांच

अपने देश की रक्षा तथा दूसरे पर घात लगाना-दोनों बातो मे पाकिस्तान ने चीन का पट्ट शिष्य बनना ठीक समझा ॥१॥ उपकारी तथा विश्वास करने वाले देश के साथ, झासा मारकर चाऊ ने हिन्द चीन की मित्रता व भाईचारे की घोषणा की । पवतो के राजा हिमालय के रास्ते से शीघ्र ही चीन ने आक्रमण किया । हिमालय की चोटी पर चाऊ ने आक्रमण किया तथा कच्छ म अयूब घुस आया ।

उमयोः कैतवेलोके अभ्र लिहतललिहे।
अपानीता ए्वा नीतिः कूटनीतिः समाश्रिताः ॥४॥
"विद्या विवादाय धन मदाय शक्तिः परेषां परिपीडनाय"।
दुष्टस्य साधो विंपरीत–मेतज्ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय ॥५॥
पजाबे यमके स्वस्य चेष्टितानामुपक्रमैः।
पाक्या दुष्कृतिनो नित्य सज्जीचक्रुरनेकशः ॥६॥
उष्णेन पयसा दग्ध–स्तक्र पिबति निःश्वसन्।
अथुन व्यश्वसच्चीनै निदग्धो दग्ध एनसा ॥७॥

इन दोनो का छल कपट आकाश को छूने वाला तथा सबसे नीचे गिरा हुआ था। इन्होने स्थिर नीति को तिलाजलि दी और कूटनीति अपनाई ॥२ ४॥

दुष्ट पुरुष की विद्या वाद विवाद के लिये, धन घमण्ड के लिए, शक्ति दूसरो को तग करने को, पर तु साधु पुरुष की इसके विपरीत, यानि विद्या ज्ञान के लिए, धन दान के लिए, तथा शक्ति रक्षा के लिए हानी है ॥५।

पजाब तथा जम्मू कश्मीर म अपनी चाल बाजियों के लिए पाक दुराचारी हमेशा अनेक प्रकार से तय्यारी करने लगे ॥६॥

दूध का जला छाछ को फूक २ कर पीता है। चीन से जले

कच्छारकोटे निरीक्षा हि भारता रक्षिमि कृताम् ।
साधिकारा समीचीना मयूबो विरुरोध ताम् ॥८॥
वयं स्म नावगच्छाम. पाक्याधीश-दुरात्मनः ।
पृथु च्छद्मान्युपेत नि चेष्टितानि बहूनि यै ॥६॥
खलस्य तस्य स्वामित्व व्यमृशन्नधिकारिण. ।
वयाद्वृतैः समित्यां च देशयो-रुभयोरपि ॥१०॥
निदान चाक्रमकः पाकप' प्राहरद् गणगोलकान् ।
उपाक्रमत्तथा सद्यो घोर ज्वलन-वर्षणम् ॥११॥

हुए ने भी मयूब का विश्वास कर लिया। भारत की पुलिस ने कच्छार कोट का निरीक्षण किया । यह उसका अधिकार था तथा था कर्तव्य भी। परन्तु अयूब ने उसका विरोध किया ॥७ ८॥

दुष्ट पाकमाधीश की बड़ी छल भरी चालो को हमने नही समझा ॥६॥ उस खल की इस प्रदेश पर अपने स्वामित्व की बात पर दोनो देश के अधिकारियो ने विचार विनिमय किया, लिखा पढ़ी की तथा मिल कर बात चीत भी की थी । पर तु आखिर आक्रामक पाकप ने गोली चला दी । तथा घोर आग वर्षाना भी शुरू कर दिया ॥१० ११

असांयुगीन-मार्योणा-मारचिदल केरलम् ।
पराक्रमेण शत्रु त युयोध बहुसख्यकम् ॥१२॥

लत्ताहों तृप्यते नैव वार्तामिन्तु कथंचन ।
दण्डहस्तो यथा बालो य क चापि प्रताडयेत् ॥१३॥

तथा नखशिख शस्त्रैः सन्नद्धोऽपेक्षते कलिम् ।
शान्तिप्रिय. शुद्धमति स्तमेव समुपेक्षते ॥१४॥

एतस्मिन्नेव सन्दर्भे अनूपे सांपरायिके ।
कामचारोऽप्ययूब स्त कञ्जरकोट-मपाहरत् ॥१५॥

हमारा वहा असैनिक पुलिस दल हो था। पर तु उसने भी पूरे पराक्रम क साथ अधिक सख्या वाले नत्रु के से य दल का सामना किया ।।१२।। लातो के देवता कभी भी बातो स नहीं मानते । जैसे बालक के हाथ में डण्डा आजाय तो वह चाहे जो भी हो उसे हा मार देता है । उसी प्रकार एडी से चोटी तक शस्त्रो मे लदा युद्ध पर ही उतारू होता है। उधर शांति प्रिय शुद्ध बुद्धि-वाला पुरुष उसकी उपेक्षा कर जाता है ॥१३ १४॥ इसी स दर्भ में वीरो के मरु देश में मनचाही करने वाले अयूब ने कजर कोट में धावा कर दिया। उसने कोटा वाली पलटन का एक डिवीजन सात सहायक टुकडियो के साथ कच्छ

विमाजन पदातीना कोटा–मध्ये व्यवस्थितम् ।
समाहरत् कृच्छ्र देशे सप्तानुप्लव–समितम् ॥१६॥
पृथुना पाक्य–मैन्येन सा कोगा–पत्ति सहतिः ।
यन्त्रतोप विमानैश्च सुसन्नद्धानुप्लवेन च ॥१७॥
आख्याता धमत्रातारो मुदानिद्या मुजाहिदाः ।
रजः कारा कुविख्याता रजो गुण समुद्भवा. ॥१८॥
घोराततायिनः सर्वे पाक्यसैन्य सहायकाः ।
कञ्जरकोट विगोकोट स्थल वेदारन(८४) मग्यकम् ॥१६॥
सरदाराख्य मन्यच्च ब्यारवेट तु पञ्चमम् ।
क्रोशाद्वर्गानां शत दूरान्निर्जले निर्जनाञ्चले ॥२०॥

देश में धकेल दिया । इस बडी भारी सेना मे मशीनगन युक्त विमान, सबद्ध महायक टुकडी, धमरक्षक नामधारी मुजाहिद कुविख्यात रजाकार जिन्हें रजोगुणी समझना चाहिए, सब बडे आततायी सैनिक भरे हुए थे । ये कजर काट, बिगोको, ८४ न०, सरदारचौकी, ब्यारबेट मे आ घुमे ॥१६॥ उधर ५० मील दूर निर्जन प्रदेश में सुरगा के निमित्त एक ही पत्ति (कम्पनी) थी । उसी को शत्रु मे मुठभेड की आज्ञा मिली ॥

एकैव भारती-पंक्तिः स्वरक्षार्थं परिस्थिता ।
आदिष्टा सम्प्रयातु मा विमुखे परिपन्थिनः ॥२१॥
आक्रमस्य सुरक्षाया विभिन्ने प्रक्रिये मते ।
मोबाइल् इति ख्याता जगमा चपलाऽपि वा ॥२२॥
गतिस्तयो-रभूदेषा चरिष्णु-योत्स्यमानयोः ।
प्रक्रिया योधनस्यापि भिन्ना प्राक्तनतो बहु ॥२३॥
शैली चापि न विज्ञाताऽनभिज्ञैः कोविदैर्विना ।
युयुत्सूनां गतिः सैव कच्छदेशरणेऽभवत् ॥२४॥
सपादशतयोधाश्च भारतो वितताम तान् ।
प्रत्येकेऽभिमम्पातेऽभिन्नार्यैः शौर्यं प्रदर्शितम् ॥२५॥

सुरक्षा तथा आक्रमण की अलग अलग प्रक्रियाए है । चलने वाली तेज को मोबाइल कहा जाता है । चलती हुई तथा लड़ने वाली की गति अपनी अपनी होती है । आजकल की युद्ध की प्रक्रिया भी पुरानी रीति से भिन्न है । इस को विद्वान ही जानते हैं अन्य नहीं । योद्धाओं की कच्छ के युद्ध से इसी भांति की गति थी । भारत केवल सवा सौ जवान भेज सका ।।२४।।

इस मुठभेड़ में प्रत्येक भारती जवान ने वीरता का परिचय

भीष्म पर्व

डोगराई समरांगणम्

समरोन्माद-शीलेना-पदेशेन सुरक्षणे ।
लाहोर डोगराईति षट् क्रोशार्द्धं च दूरत. ।।१।।
आयता च गभीरा च निर्मितेच्छोगिला-सरित् ।
आयता वेद-शून्यार्कै-र्निम्ना पञ्चदशस्फुटाम् ।।२।।
द्विपंचाशच्च क्रोशार्द्धा पुररक्षण सक्षमाम् ।
पाक्यै-र्दृढीकृत पूर दुर्गै प्रच्छन्नरूपिभिः ।।३।।

डोगराई युद्ध क्षेत्र

जाटों दी फतह

युद्ध के उन्माद वाले (अयूब खां) ने अपने देश की सुरक्षा के बहाने से लाहोर को घेर कर शहर से छः मील दूर डोगराई स्थल पर खूब लम्बी चौड़ी तथा गहरी इच्छोगिल नाम की नहर बनवाई । वह ६०४ फुट चौड़ी १५ फुट गहरी तथा ५२ मील लम्बी है। इससे लाहोर नगर की रक्षा होती है। पाकिस्तान ने उसके तट पर मजबूत छिपे हुए पिल्लबक्स नाम के किले बनवाए।

पिल्लवचै दृंढतरै रापणाकृति-पूर्वकैः ।
स्वल्पाहारकुटी वक्त्रै दृंष्टार भूरि-भ्रांतिदैः ॥४॥
सुरंगा विस्तृता-स्तत्र पिल्लवचसमन्तत ।
विध्वसका. समस्ताना टेंकमानव गन्त्रिणाम् ॥५॥
सकंटकायसस्तारै कृत्स्न क्षेत्र च वेष्टितम् ।
प्रथुमध्यमतोपैश्च रचित सर्वतो दिशम् ॥६॥
असीमग्न्युद्विर्पस्य शक्तिस्तत्र सुसचिता ।
ग्रामस्यान्तिके युगलं पिल्लवचस्य वर्तते ॥७॥

उनका चेहरा स्वल्पाहार (जलपान की स्टालों) की भांति बनाया गया जिन को देखने के बाद भारी भ्रम हो जाता है, क्योंकि उनका किला होना बिलकुल नही जचता ।१-४।

टेंक, मनुष्य शस्त्रगन्त्रियो सब को नाश करने वाले (आयुध) सारा खेत कांटेदार लोहे के तारों से घिरा, उसमें बड़ी मध्यम तोपें सब तरफ लगाई हुई । इस प्रकार असीम आग वर्षाने के साधन वहा बटोर कर एकत्र की हुए थे । उस (डोगराई) गांव क पास दो पिल्लवक्स बने हुए थे, मानो रास्ते के मुहाने पर दो पहलवान स्तम्भों की भांति डटे हुए थे जो उस क्षेत्र की

दोस्तम्भाविवमार्गस्य स्थितावूर्जस्विनां खलु ।
म्रतेऽभुजीकृत मार्गं डोग्राईपाणि-पीडनम् ॥८॥

अद्धा न शक्य त मत्वा शरव्य चैव तत्कृतम् ।
ताञ्चोद्वोढु तदा कन्यां डोग्रामन्यो रणे वृत ॥९॥

अतारीतोऽग्निवर्षेण ह्यरातिलव-तोपकै ।
सैन्यो निपेषित'-प्राप रुण्ड पन्यान-मञ्जसा ॥१०॥

दो भुजाए हो । अपने जवानो ने सोचा कि डोगराई रूपी दुलहिन को ब्याहने के लिए इस राक्षस की दोनो भुजाओ को काटे बिना काम नही बनेगा । इसलिए उ होने इन्हे ही अपने अस्त्रो का लक्ष्य बनाया । तब उस क या (डोगराई) को वरने के लिए डोग्रा सेनापति को दुल्हा चुना । बस अतारी से उस पर बमबारी प्रारम्भ कर दी और शत्रु को ठडा कर के उस मार्ग को बिना हाथ पैर के रुण्ड की भाति कर दिया । अपने शस्त्रो के चलाने की विधि ऐसी थी कि उसमे पराक्रम तथा फुर्ती थी जिससे शत्रु सतप्त हो उठा । उसके पैरो के नीचे की धरती खिसक गई और वह नौ दो ग्यारह हो गया ।

जाटानां श्रयनम्—

कृतामिषेणना जाटा: ग्रामकमपरायणा: ।
इच्छोगिला गता जातु पिल्लवबस्तु नाशकन् ॥११॥

विक्रान्ता भारतीया-स्ते प्रहृता ह्यग्न्यजिह्मगै: ।
प्रक्षिप्तास्तै-र्महाघोरै: सौविदै-राततायिभि: ॥१२॥

गुप्त-प्रहरणाघात ज्ञात्वा जाटचमूपति: ।
पूर्वं कौतूहल प्रापाचिर भेद-मवागमत् ॥१३॥

सैनिका: पिल्लवचैस्तै: प्रक्षिपन्ति हि गोलकान् ।
क्लिष्ट-कर्म-विपन्नास्ते प्रच्छन्ना: पिल्लवबके ॥१४॥

जाट सेना का श्रयन -ज्यों ही हमारी जाट सेना लाहौर की ओर बढ़ी और इच्छोगिल पर पहुची तो उसे पिल्लबक्सों की जानकारी नही हुई । उन बोरों को इन किलों से चलाई गई गोलाबारी लगी । आततायी पाकिस्तानी सैनिक छिपे छिपे वार वार आग बरसा रहे थे । जाट टुकड़ी के अधिपति को इन छिपे प्रहारों से कुतूहल हुआ कि यह आग कौन बरसा रहा है । परन्तु उसे तुरन्त सारा भेद मालूम हो गया । उसने जान लिया कि इन पिल्लबक्सों में से ही दुष्ट शत्रु छिपे २ बन्दूकें दाग रहे हैं ।

आहतोऽपि गणास्त्रेण त्यजतिस्म न साहसम् ।
श्रोतव्यः सिंहनादोऽप आशारामस्य त्यागिन॰ ॥१५॥
पाकिस्तानस्य शाठ्यं शमयामीह साम्प्रतम् ।
पदाहत् करिष्यामि तद्दर्पमलज्जितम् ॥१६॥
अस्माक तेन विज्ञ किं मेषच्छागादिकनजम् ।
इत सिपान्दुर्दन्तान् तस्य दुस्साहसं परम् ॥१७॥
अथाह त्रोटयिष्यामि दन्तपङ्क्ति रिपोः चणात् ।
एकैकं दर्पघटकं भञ्जयामि सुनिश्चितम् ॥१८॥ -

गोलियों की मार खाते हुए भी उसने साहस नहीं त्यागा । उसने सिंह नाद किया जो सुनने लायक है ॥ १५ ॥

आशाराम त्यागी ने ललकारा कि ' मैं पाकिस्तान की इस धूर्तता को अभी ठण्डा करता हूँ । उसके घमण्ड का तुरत पैर तले रौंदता हू । क्या उसने हमें भेड़ बकरियां समझा है । हमारी ओर बढ़ाए उसके दांतों को-उसके दुस्साहस को-अभी चकना चूर करता हू उसके गर्व के घड़ों को एक २ करके निश्चय ही फोड़ डालूगा । मैं पड़ा हुआ हू परन्तु यदि दुश्मन ने एक भी पैर

भूलुण्ठितोऽप्यह स्थान प्रोद्यतैक-पदोद्विपद् ।
यदि जन्तोत दुर्नीट तस्यास्य भजयाम्यहम् ॥१९॥

दर्शनाच्छत्रुटैंकस्य सहसा वीर उत्थित. ।
क्रोधावेगेन मयुक्तो जवेन च बलेन च ॥२०॥

प्राहरद्धस्तगोलेन त टैंक परिपन्थिनः ।
शत्रून्शैरायुधै-र्हत्वा जाटानां जय-घोषकृत् ॥२१॥

फणिनश्च गतिं गत्वा वीराशंसन-पूर्वकम् ।
अह पूर्व-महपूर्वं सैन्या जग्मुरनुक्रमात् ॥२२॥

आगे बढ़ाया और बक्वास किया तो मैं उसका मुँह तोड़ दूंगा' ।१९।

इतने में शत्रु का टैंक उसकी दृष्टि में आया । वह वीर तुरन्त उठ खड़ा हुआ । और क्रोध में भरकर तेजी तथा बलपूर्वक उसने शत्रु के टैंक पर हथगोला दे मारा । और अपने शस्त्रों से शत्रुओं का काम तमाम कर जाटों की जय घोषणा की । वह और उसके जवान धर युद्ध में पेट के बल (सर्पों की चाल) चलकर, 'मैं मारता हूँ' 'मैं बढ़ता हूं' ऐसी गजना करते हुए एक २ के पीछे बढ़ने लगे । उन जवानों ने भी शत्रु के टैंकों के टुकड़े उड़ा

तस्यानुगामिनोऽप्येव टेकाऽङ्कगो न्यंपूदयन् ।
कालेनेतावता वीर आहतो पञ्चगोलकं ॥२३॥
भुजङ्गप्रयातो 'भुजगप्रपातान्निपूय प्रहारैं-रमोघै-ररातेः ।
कृत मोघमाशु प्रयत्न रणेऽस्मिन्तत कण्टक
कण्टकेनतिरीत्या ॥२४।

परिष्वजन्वीरगति विक्रान्तो जाटभूषण' ।
नाभूत्परासुर्याविद्धि कांदिशिको गतो रिपु ॥२५॥

दिए । इतने में वीर प्राणाराम को पांच गोलियां लगी । तब भी पिल्लवश रूपी बिलो मे छिपे उन विषधर रूपी शत्रुओं को सर्प की चाल चलकर अपने अमोघ नस्त्रो से धरासायी करते हुए उस वीर ने इस रण म शत्रु की चालो को मोघ (निष्फल) कर दिया तथा काटे से काटे को निकालने वाली कहावत को चरितार्थ कर दिया ॥२०–२४॥

जाटो का भूषण वह वीर प्राणाराम त्यागो वीर गति को प्राप्त हुआ परन्तु उसने प्राण तब तक नहीं छोडे जब तक शत्रु भाग नही गया । उसने अपना त्यागी' नाम सत्य कर दिखाया ।

१ पिल्लवश बिलशयान

ससारं नश्वर चेत्र जेत्रो जाटचमूपतिः ।
आशारामोऽत्यजत्तत्र, सत्य त्यागीति विश्रुतः ॥२६॥

उल्लङ्घ्यजरस वीगे मेजरो निर्जरोऽमवत् ।
विनियुज्य भुवि प्राणान् सूक्ष्मदेह त्रिविष्टपे ॥२७॥

गोलकान् पिल्लवक्षस्सु चतञ्याधिं च दुर्भराम् ।
कार्पण्य शस्त्र-मघाते पदुगति रणमूर्द्ध नि ॥२८॥

द्विपदी विजितां भूमिं तत्र सस्थापित ध्वजम् ।
असूनपिरणोत्सगे कीर्तिंच विश्वविस्तृताम् ॥२९॥

उस जाट सेनापति ने विजय प्राप्त की नश्वर शरीर को तजा, रणक्षेत्र से विदा हुआ बुढ़ापे को लाघा, मेजर पद से निर्जर (देवता) पद प्राप्त किया, प्राणो को भूलोक में छोड़कर स्वर्ग में सूक्ष्म देह पाया पिल्लवक्षा मे हथगोने पधराये, घावो की दुर्भर पीड़ा की परवाह न की, लोहा लेने म कृपणता स हाथ धोया, रणक्षेत्र में (पेट के बल चलकर) पैर से चलना छोड़ा, शत्रु से जीती भूमि से विदा ली अपने हाथ से ,अपनी जन्मभूमि की ध्वजा को वहा फहराया, प्राणो को रण की गोद में और ससार में फैली विशद कीर्ति छोड़ी उस त्यागी ने इन वस्तुओ का

यथार्होनुपहारान्म त्यागी तु विचिचे ततः ।
जननीजन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ॥३०॥

अन्तिम. सदेश—

प्राणोत्सर्जनत' पूर्वं सोल्लास जय घोषितम् ।
'जाटानां जय' इत्युक्त्वा वीरो वीरां गति गत ॥३१॥

देहि मां मातुरुत्सगे पूर्वं वै वह्निरोहणात् ।
वपुर्जनिभुवं नीत्वा स्वाश्वस्तां जननीं कुरु ॥३२॥

यथोचित मूल्याकन कर उपहारो के रूप म वितरण किया और जननी तथा ज मभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है यह सिद्ध कर दिया ॥२५-३० ,

उसका अन्तिम स देश – प्राण छोड़ने के पहले उसने उल्लास पूर्वक जयघोष किया, यथा जाटा दी फतह' यह कह कर वह वीर वीरगति को प्राप्त हुआ । उसने कहा मेरा 'शरीर मेरी ज मभूमि मे ले जाकर चिता पर चढाने के पहले मेरी माताजी को विश्वास दिलाने के लिये मेरे शव को उनकी गोद में रखना और कहना कि घोर भयकर संग्राम मे भी मैंने शत्रु के सम्मुख पीठ नही

वीराशमनके मातः सम्मुख सर्वदा रिपोः ।
किञ्चित् चत न पृष्ठ मे स्तन्य' ते श्लाघ्यमेवतत् ॥३३॥

शिष्याना अयनम्—
लाहोर-खालडामार्गे ग्रामो बर्कीति सस्थितः ।
खालडा सप्तक्रोशादूर्ध्व लाहोर त्रिघनपञ्च च ॥३४॥
लपनान्त्यः कल्पनरः आनन्द', सिंहसयुत' ।
शिष्य सैन्याधिप-स्तत्र चक्रोपक्रममारभत् ॥३५॥
स प्रदोषान्तर प्राप तस्य ग्रामस्य सन्निधिम् ।
प्रत्येकांगुष्ठमात्र भूर्वह्निवर्षेण पूरिता ॥३६॥

दिखाई । देखलो मेरी पीठ पर कोई आघात नही है । तेरे दूध की ही यह बडाई है उसको मैंने लजाया नही।"

सिक्खो का अयन –लाहोर, और खालडा के बीच बर्की गाव है। वहा से खालडा पाच मील तथा लाहोर १५ मील है । लेफ्टिनेंट कर्नल आनन्दसिंह सेनाधिप ने अपनी टुकडी द्वारा आक्रमण प्रारंभ किया । वह उस गाव के पास सध्या के उपरान्त पहुचा । वहा भूमि का अगूठे के बराबर भाग भी आग की लपेट में था क्योंकि

आयुधैश्च सपत्नानां वरिष्ठैः पृथुमध्यमैः ।
विनिघ्नैस्तोप-बम्बैश्च शस्त्राद्युर्घोद्गिलनचर्मः ॥३७॥
आनन्दसिंहो नवनैश्च भूमिः-सैन्यैः पपात द्विपदश्च काराम्
छद्माभिभूतो न तु कातरत्वाच्छुभ्रावदातेषु कथा विचित्रा ॥३
'एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्क
वस्तुतस्तु भयाविष्टा पाक्या. पापण्डमाचरन् ।
तेषां सौहार्दगाथायाः शिष्यैः सह विकत्थनम् ॥३९॥
न प्रासन्नयतो धीरान् तान्स्व-कर्तव्य-निष्ठितान् ।
सेऽस्यमित्र्या., स्थल वर्कान्निग्रहु मिपतो द्विपाम् ॥४०॥

उसमें बड़े तथा मध्यविचले शस्त्रास्त्र, तोपें, बम्ब आग वर्षा रहे थी।

वहां वह अपने १२६ जवानों के साथ शत्रु क जाल म फस गया ऐसा उनकी कायरता के कारण नहीं हुआ परन्तु वह कपट को शिकार हो गया। शुभ्र चरित्र लोगों की यह दशा होना एक विचित्र कहानी है ॥३-॥

गुणों के समूह मे एक दोष इस प्रकार छिप जाता है जैसे चन्द्रमा की किरणों मे उसका कलक। सच बात तो यह थी कि पाकिस्तान के लोग भयभीत हो गये और उन्होंने पाखण्ड रचा।

तेषां हि बान्धवाः सैन्या, पञ्जाबस्था दृढाः स्थिराः।
अशून्यमात्मन-श्रक्ः समादिष्ट-नियोजनम् ॥४१॥
सा वसति बर्की ख्याता ह्यर्घ पारिणेतु रेवतत् ।
पञ्जाबीनां तु कुल्यैव लक्ष्यमिच्छोगिल वरम् ॥४२॥

पाक्यानां विकत्थनम्—

मूसा सेनाधिप, स्वसैन्य उवाच—
प्रागेवेच्छोगिलां कुल्या मार्गे नः कण्टक विना।
नष्यामो निश्चित शत्रो' कसूर नगर ततः ॥४३॥

उन्होंने सिक्खा के साथ मित्रता का भाव बघारा। वे अपने कर्तव्य में दृढ थे अत विचलित नहीं हुए। वे शत्रु के सामने हटने वाले नही थे और शत्रु के देखते २ उन्होंने बर्की को धर दबाया ॥४०॥ उनके भाई पञ्जाबी जवान दृढ तथा स्थिर थे और उन्होंने अपने उद्देश्य को जिसकी उन्हें आज्ञा मिली थी पूरा किया ॥४१ बर्की गाव तो दूल्हा को भेंट (अपनी सम्पति), के समान थी। पजाबियो का लक्ष्य तो इच्छोगिल नहर ही था। पाक्यो की डींगे

मूसा सेनापति ने अपनी सेना से कहा—

इच्छोगिल नहर से पहले पहले तो अपना रास्ता

वाघाध्वना वय तावद्विशामो हि सुधामरम् ।
परिकल्कन मेव तद्यथार्थे परिकल्पनम् ॥४४।
स्तोकासु घटिकास्वेव सोऽभूदुमग्न मनोरथ ।
अत्याहित तु पाक्पानां वायूज्झित–वलाहकः ॥४५॥
व्याजहु रेतज्जगतो वलनिन्याम–कोविदा' ।
अन्यथा वृत्त–मन्यस्याभिसम्पातस्य चाभवत् ॥४६॥
पाक्य सैन्यस्य सम्भार सम्भृत यानमेव च ।
पूर्वमार्यैर्न विज्ञात यावद्–वर्की समागता ॥४७॥

निष्कण्टक है। उसके बाद हम शत्रु के नगर कसूर को निश्चय ही जीत लेंगे ॥४३॥ फिर वाघा के रास्ते हम अमृतसर मे घुस जायगे" यह उनका अन्दाज यथार्थ मे प्रवञ्चना (ठगाई की बात) थी ॥४४॥ थोडी सी घडियो में उसका मनोरथ चूर चूर हो गया। पाकिस्तान का मूर्खता पूर्ण दु साहस पवन के झोके में बदलो के समान उड गया। ससार के सेना की व्यूह रचना के प्रवीण लोगो की यह सम्मति थी। यदि इस प्रकार का कोई दूसरा युद्ध होता तो उसकी कथा और ही होती ॥४५–४६॥ पाक सेना की तैयारी सजावट तथा चालढाल का भान आर्यों को बर्की पहुचने के पहले नहीं हुआ ॥४७॥

षष्ठयां सितम्बरस्याब्दे तत्वतु-निधि-भूमिते ।
आर्य-यानं समारेभे लाहोराभिमुखं व्रजन् ॥४८॥

मूसा सैन्यपति-निर्कत्थनपर: सुत्राम युग्मानुगान् ।
वाञ्छन्नाहितलक्षणान् शशगणाञ्छाद् लवच्चेष्टितान् ॥
तेषां च श्रवणेषु गह्वर इव सर्वोनिदेशो गत: ।
वाणी सैन्यपत पर ममभवन्मोघ स्वयं साम्प्रतम् ॥४६॥

पाक्यस्य बलविन्यासे इच्छोगिल-सरित्तटे ।
वाहिनी द्विशिखे भूत्वा गन्तु चक्रामे चाध्वगे ॥५०।

सन् १९६५ के ६ सितम्बर को आर्य सेना का लाहोर की ओर कूच हुआ ॥४८॥ मूसा सेनापति डींग हाकने में उस्ताद था पर उसके जवान डरपोक थे। उन खरगोशो से उसने यह आशा बांधी थी कि वे शेरो की भाति पराक्रम दिखाए गे। अत मूसा का बकवास बहरो के कान रूपी बिलो में डाली आवाज की भाति उनके कानों पर पडी। इसलिए उस सेनापति की बातें तत्काल निष्फल हुई ॥४६॥

इच्छोगिल नहर के तट पर पाक सेना की दो फाकें होकर चलीं इस तरह उन्होंने अपना मोर्चा बांधा। एक कसूर की ओर

एका-शाखा कसूराख्य बाधामन्या-ययौ तत. ।
प्राक्ष्य सेनाधिपो मूसा प्रत्युवाच स्वसैनिकान् ॥५१॥
"साधु वीरा नरव्याघ्रा गच्छत-शत्रुम्बक प्रति ।
प्राप्यामूतसर चिप्र जष्याम-स्तत्र वै ध्रुवम् ॥५२॥
गच्छन्तोऽग्रे वयतान्नच्छक्नुमो धर्षण द्विष. ।
नोऽप्यनेक-पद गत्वा स्थान नो विजयो भवेत् ॥५३।
नयशान्त्यो-र्वय योधा मर्दयामो रिपु मृदि ।
प्रतियोधाः समीकेऽस्मिन्भारतीया विधर्मिण." ॥५४॥
दर्शनमेव वाहिन्या आर्याणां रणमूर्द्धनि ।

बढ़ी, दूसरी बाधा की ओर मुड़ी ॥५०-५१॥ मूसा साहब ने अपने जवानों को कहा — 'शाबास बहादुर वीरो छम्ब की ओर बढ़े चलो, अमृतसर हम तुरन्त निश्चय ही पहुंच जायगे ॥५२॥ आगे बढ़कर हम जल्द दुश्मन को पीस डालेगे। एक एड ओर मगाई कि हमारी फतह पक्की है ॥५३॥ हम लोग न्याय और शान्ति के सिपाही हैं। हम दुश्मन को मिट्टी में मसल देंगे। हमारे मुकाबले में, इस युद्ध म विधर्मी भारतीय है ॥५३-५४॥

आर्यों की सेना को रण क्षेत्र में देखते ही मूसाजी की सेना

यस्तुतिस्त्य-मानेऽपि पयसो विन्दुमोचनात् ॥५५॥
पृसाविकल्यनोत्सेक-स्तलस्पर्शी बभूव स' ।
विच्छेदात्प्रागुभौ देशौ पयसो देह-धारिणौ ॥५६॥
मात्र मोहमदौ हेतुः प्रतीपार्यो बभूवतुः ।
एक. फेनायते, चाग्नावपर शाम्यते द्रुतम् ॥५७॥
आर्य-सेना-प्रचक्रस्य पुरोगामि गण स्ततः ।
अपराह्ने कलां बर्की-मधिकृत्य विवेश ताम् ॥५८॥
यूनक्रोशे स्थिता बर्की-मुख्या सा नातिदूरतः ।
शत्रु-सैन्यदल पूर्णे सार्द्ध सप्त च नाडिकाः ॥५९॥

फनते हुए दूध में पानी के छींटे पड़ने के भांति तले बैठ गई। श के बटवारे के पहले यहा के दोनो निवासी पव (दूध और नी) की तरह थे ॥५५-५६॥ पाकिस्तानियो में युद्ध का उ माद नके मोह और मदका ही कारण है। आर्य सेना की चढ़ाई की ग्रिम टुकड़ी तीसरे पहर बर्की कला पर कब्जा कर वहा पर म गई। खास बर्की वहां से कोस भर से भी कम थी अत दूर नहीं ती ॥५७-५६॥

शत्रु र्ववर्ष मह्राचिर्वीरताऽऽप जयश्रियम् ।
ममपतन्छत्रो ग्रोम उत्सगे भारतम्य मे ॥६०॥
इच्छोगिल-मतिक्रम्य, पुर लाहोरमाप्यत ।
कुल्याश्चासीत् परे पार शत्रु-सैन्यस्य सग्रह. ॥६१॥
असंख्यातः सुमन्नद्धः सांगोपाग सुरक्षित ॥
तोपाना निवहश्च टैंकनिकरोऽनीकस्य पूर्णा प्लुति. ।
दम्भोलीव ववर्ष भूरिदहन चक्र च शत्रो द्रुतम् ।
आर्याणां पृतना पराक्रमयुता अग्र्या न तत्याज सा ।

शत्रु ने साढे सात घटे तक आग बरसाई, परतु भारतीयो की वीरता ने विजय पाई और शत्रु का वह गाव भारत की गोद में आगया। तब इच्छोगिल का पार कर लाहौर को हथियाना था। नहर के उसपार शत्रु की सेना का बडा भारी जमाव था। वह अगणित, सब शस्त्रो सहित था तथा उसकी रक्षा का प्रबन्ध सागोपाग था ॥६०-६१॥

टैंको के समूह, तोपो का झुण्ड तथा सेना की भरमार के साथ शत्रु ने बिजली की तरह घमासान आग बरसाना प्रारम्भ किया परतु उसके समक्ष हमारी पराक्रमी सना ने आगे बढना न रोका।

धीरत्व समरे गुण सुकृतिना दाढर्य-मजन्तीह ते ॥६२॥

नीराणा मौनिरत्न सोऽभ्यमित्राय वीर्यवान् ।
लपनान्त्य कल्पनरो निक्रान्तैरनुगै सह ॥६३॥

जोशी शतीशचन्द्र स आर्य सेनाधिपस्ततः ।
चस्कन्द निवह शत्रो-स्तोपाना साग्निमण्डलम् ॥६४॥

पतङ्गमण्डल भेत्तु पतङ्गनिकरै-रिव ।
कृत्वाञ्जलिगतान्प्राणा-न्नभिन्दन्नग्नि-मण्डलम् ॥६५॥

मातृ-भूम्यनुरक्तास्ते विचिकित्मोह-वर्जिता ।

कारण कि सुकृति जनो की युद्ध में धीरता ही गुण है और वे दृढता नही छोडते ॥६२॥

शत्रु के समक्ष स्वय आगे बढने वाला वीर्यवान् वीरो का शिरोमणि लेफ्टिनेट कर्नल आर्य सेनापति शतीशचन्द्र जोशी अपने शूरवीर जवानों के साथ शत्रु के तोप खाने के द्वारा उगली आग के सम्मुख झपटा। सूर्य मण्डल को भेदने के लिए, आग में जिस प्रकार पतगे गिरते हैं उसी भाति प्राणों को हथेली में लेकर उन्होने आग के मण्डल को भेद दिया। वे अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम में रगे हुए थे और शौर्य साहस से सम्पन्न थे अत आना कानी

शौर्य-साहस-सम्पन्ना सजग्नु किल शात्रवान् ॥६६॥
युद्धे चापि भयावहे त्रिदिवसं शौर्यण वीर्येण च ।
आर्याणामिह युद्ध-कौशल-धृती श्रेष्ठ प्रकृष्टे उभे ।
शस्त्राघातविधि पराक्रमयुता लक्ष्मी द्विषत्तापिना ॥
भूमिस्तत्पदू सरियता प्रविचलच्छत्रो द्रुव चाक्रोत् ॥६७॥
शत्रु: कसूरवारोऽपि पापी स्वाचार-सस्थित: ।
नलेभे पद पुरयो: स स्वाचारे चाऽन्यत्रसस्थित ॥६८॥

या सोच विचार का कोई अवसर नहीं था और उन्होंने शत्रु पर करारा वार किया ॥६३ ६६॥

यह ३ दिन का युद्ध यद्यपि भयावह था परन्तु इसमें आर्य योद्धाओं की युद्ध कौशल, धैर्य श्रेष्ठ तथा प्रकृष्ट रहे एव शौर्य और वीरता के साथ शस्त्र प्रहार की विधि, उसमें पराक्रम, स्फूर्ति ऐसी रही कि शत्रु संतप्त हो उठा और मानो उसके पर तल की भूमि खसक गई और उस भागने ही बना ॥६७॥

वह कसूर तथा पापी को लेने आया था (स्वयं कसूरवार था क्योंकि आक्रमण कर आया था और अधी पापी था) क्योंकि वह अपने ही दुराचार से युक्त तथा सदाचार हीन था इसलिये उसके इन

बर्की त्वधिकृता स्माभिर्वासरप्रहरत्रये ।
श्रांशसु पुरयो शत्रु-र्वबर्या निष्कामित खलु ॥६६॥
भारतय बले प्राप्ते इच्छोगिल-धुनी तटे ।
पिल्लबक्सु मिन्नेषु स्थानीकस्थे पराजिते ॥७०॥
विनियुज्य लकार वै लाहोरस्यान्तिमाक्षरे ।
पठितव्य त्वया मूढ [1]तल्लाहाल-बलान्तम् ॥७१॥
[2]अन्ततोवाऽन्ततो वाच नः क्षमार्हो भवेत्तदा ।
उपदेश न गृह्णन्ति ये प्रमादि गतायुषः ॥७२॥

नगरो मे पैर नहीं जम पाए। शत्रु को दोनो नगरो को दबोचने की लालसा थी परन्तु हमारे जवानो ने उलटा २ दिन २ पहर में उससे बर्की छीन ली और वहा स शत्रु को धता बताई ॥६८ ६६॥

लाहोर के घेरे की बिल्लबक्स नहर के किनारे हमारी सेना के पहुचने पर तथा पिल्लबक्स को मटियामेट कर उसके रक्षकों को भगाकर मानो उन्होने शत्रु को कहा कि अब लाहोर के अन्तिम 'र' के स्थान में 'ल' रखकर अपनी फौज (बल) के साथ साथ 'लहोल बला' कह कर तोबा करना चाहिए। ऐसा करे तो हमारी क्षमा का पात्र बन सकता है। परन्तु जिनकी आयु बीत चुकी वे भला प्रमाद के कारण उपदेश क्यो माने ॥७०-७२॥

१ लाहोल बिला। २ तौबाह तौबाह।

फलश्रुति'—३०० हतानां पाकप-सैनिकानां शवा प्राप्ता। १०८ सैनिका सेनाधिपेन तोपाध्यक्षेण च सम निगृहीता'। कन्यनरो गोलेवालानाम टैंकान्तरे प्रच्छन्न—स्पृष्ट पारसी कोऽहं' इति तेन समाहृत मोक्षस्य आशायाम्। जाटै रचत्वार स्टैंका हृता। अनेके रायफला' शतश' क्षुद्रशस्त्राणि अपि सपत्नस्य अपहृतानि।

फलश्रुति (परिणाम)

पाकिस्तान क सिपाहियों की ३०० लाशें मिलीं। सेनापति तथा तोपखाने के अध्यक्ष के साथ १०८ सिपाही कैद किये गये। गोले वाला नाम का कर्नल टैंक पीछे छिपा पकड़ा गया। यह सोचकर कि मुझे छोड़ देंगे उसने कहा 'मैं तो पारसी हूं।' ४ टैंक जाटों ने शत्रु से छीन लिए। अनेक राइफल, सैकड़ों छोटे शस्त्र शत्रु के छीन लिए गये।

जाटों के भी कई जवान खेत रहे परन्तु शत्रु की अपेक्षा बहुत कम।

ले कर्नल हाइड महावीर चक्र से विभूषित किया गया। मेजर आशाराम त्यागी भी महावीर चक्र से अलङ्कृत किया गया।

सुचेतगढ-श्यालकोटम्

सुचेतगढ-सस्थान सीमाया उपवर्तने ।
श्यालकोट हि पाकस्य पचक्रोशाद्‌-दूरतः ॥१॥
प्रख्यात पत्तन तत्र मध्यगावुस्तयोः स्थिता ।
उभयोरन्तर क्षुद्र पर्वत तत्र वर्तते ॥२।
ऊचावायन-नामिको ग्रामश्चाऽपि परिस्थित. ।
कुण्डनपुर-बृहद्ग्राम ऋद्धियुक्तश्च सन्निधौ ॥३॥
बलेनार्येण निर्णीतौ ह्यधिकर्तु-मुभौ स्थलौ ।
परस्पर सुरक्षार्थ-मुभयो [1]पिल्लवक्षसैः ॥४॥

सुचेतगढ श्यालकोट धुरी

सीमा प्रदेश में श्यालकोट से दस मील दूर भारत का सुचेत-गढ नगर है। वह प्रसिद्ध स्थान है और यह धुरी इन दो शहरों के बीच में पड़ती है। दोनों के बीच में थोडी दूरी है और वहा छोटी सी पहाडी है। वही ऊचावायन गाव है जिसको हमारे जवान इसी गाव को चौकी कहते हैं। पास ही में कुण्डनपुर नाम

---

१ पिल्ल क्लिन्नाक्ष वक्ष यस्य तत् प्रच्छन्न दुर्ग इति शेष ।

निर्मिता श्वारिणा पूर्वे सुचेताभि-मुखैर्मुखैः
दक्षिणा ककुभ भार्या ह्यभियान समारभन् ॥५॥
श्यालकोट समर्याद तोपा-घातपथि द्विपः ।
यान चामिकमणं च निशीथिन्यां हि नीरवम् ॥६॥
मत सेनाधिपै सर्वे शत्रो' परिभवाय वै ।
साम्परायिक-चातुर्यात् कुण्डनपुर लङ्घनम् ॥७॥
पूर्वं सम्पादनीय स्यात्पश्चाद्चेवनस्य वै ।
कुल्याकाञ्ची-पुत-ग्रामो ह्यम्दलपुर-सञ्ज्ञकम् ॥८॥

का बडा गांव है। भारतीयों ने इन दोनो स्थानो पर अधिकार करना सामरिक दृष्टि से निश्चय किया। पाक ने एक दूसरे की रक्षा के लक्ष्य से सुचेतगढ़ की ओर मुह वाले पिलबक्स बना रखे थे। आर्यों ने दक्षिण की ओर से आभयान प्रारम किया। श्याल कोट तथा उसकी सामाएं शत्रु को तोपा की मार के भीतर थी। अत अपना धावा रात को तथा चुपचाप करना था। हमारे सारे सेनानियों का मत था कि सामरिक चातुर्य तथा शत्रु को परास्त करने के उद्देश्य से पहले कुण्डनपुर को हाथ म करना होगा। उसके बाद ऊचोवायन को। करधनी की तरह से नहर से घिरा

स्थानं प्रायात्रिकं तच्च चक्रस्यार्यैः सुनिश्चितम् ।
प्राक् कुण्डनपुरं जेयं वीरशिष्य-पदातिना ॥६॥

धर्षयिष्यन्ति जाटा वै ग्राममूचेयवायनम् ।
ववर्षज्वलनं शत्रु-रारात्कुण्डनपुरतः ॥१०॥

प्रत्यकुर्वन्तथैवार्या घोर-सख्ये समाचरन् ।
शिष्या विक्रान्तपुरुषा विजयं लेभिरे द्रुतम् ॥११॥

जाटा।अत्रान्तरे प्रापुरूचेवायन-नामकम् ।
कृतकार्या-स्ततः शिष्या जाटमाहाय्य-सत्तमाः ॥१२॥

हुआ प्रबदलपुर पड़ाव का स्थान निश्चय किया गया, जहां से हमला प्रारम्भ हो। सिक्ख पलटन को पहले कुण्डनपुर जीतना था। बाट जवान ऊचेवायन पर कब्जा जमाए।

कुन्दन पुर के निकट पहुचने पर पाक तोपों ने आग वर्षानी शुरू कर दी। आर्यों ने भी यथावत् जवाब दिया। फलत घोर संग्राम छिड़ गया। परन्तु वीर सिक्खों की विजय हुई और जाटों के ऊचावायन पहुचते पहुचते उन्हें सिक्खों की सहायता मिल गई क्योंकि वे अपने उद्देश्य में कृतकार्य हो चुके थे। सेना की दोनों टुकड़िया वीरों की थीं। अत धुवाधार आग बरसने पर भी

जाटानां पृतना चापि शौर्य-वीर्य-समन्विता।
घोरेऽविज्वलनांगारे प्रजग्राहोचवायनम् ॥१३।

ये संस्थिता भारत प्रत्यनीके पैमानिकायस्वलाहराश्च।
सद्य पराभूत नवांगता वै मश्लिष्य सघात कृतप्रयत्ना'। १४॥

मगस्य सशोधा तत्पगम्न शस्त्रास्त्र-यन्त्राभिमुखै सुतोपैः।
वह्नि 'वपु'-निखिला-निशायां विक्रान्तधीरा भरतस्य सैन्या ॥१५॥

तत'परं चाक्रमण रिपूणां पुन पुन-स्टैक-सहाययुक्तम्।
'प्रयामिरजजाट पराक्रमेण जग्राह गाढ र्विजित स्थल यें ॥१६॥

ऊचावायन अधिकार म हो गया। युद्ध म हार की खीभ मिटाने के लिये दुश्मन के बम्बमार हवाबाज आ पहुचे और भारत के विरुद्ध शस्त्रास्त्र तथा तोपो से रात भर आग बरसात रहे, पर तु वे नवागत भी हार खा गये क्योकि भारत के जवान वीर तथा धीर थे। बाद म भी शत्रु ने बार बार हमल किये जिनमे टैंकों की सहायता भी थी। पर तु दृढता स जीते हुए स्थान पर अधिकार किये हुए पराक्रमी जाट टस स मस नही हुए। उलटा भारतीयो ने महद पुर तथा तिउरपुर के दो और स्थानो को जीत लिया। इस तरह

पुरा महद्वीतिलकौ तथापि हृतौ ततश्चापि प्रलेन पाक्ये ।
निरापद जम्बुपुर चकार स्वीय च कोटाञ्चपरार मार्गम् ।१७।

पाक्यसेना यथा पूर्व चुक्षुमे ह्यमलोत्तरे ।
श्याल कोटाञ्चले तस्या दुर्भाग्यमधिकाधिकम् ॥१८॥

चम्वा विभजन तस्य षष्ठ पञ्चत्व-माप्नुयात् ।
युयुत्सुना च टैंकानां युग ह्यग्निघंन गतम् ॥१९॥

स्वधर्म-निष्ठा पाक्यस्य ये प्रलपन्त्यहर्निशम् ।
अन्वमन्त मसाधि ते साधो-रुचायवायन ॥२०॥

उन्होंने जम्बु को निरापद कर दिया और साथ में श्यालकोट चपरार सड़क पर अपना अधिकार जमा लिया। पहले पाक सेना की असलोत्तर में मिट्टी पलीत हुई परन्तु यहां तो उसका अधिकाधिक दुर्भाग्य रहा। उसके छठे विभाजन का नाश हो गया और उसके लड़ाकू दो टैंक युद्धों में यमपुरी को पहुंच गये।

जो लोग पाकिस्तान की धर्मनिष्ठा की डींग हांकते हैं उन्होंने ही अपने साधु पीर की मजार को ऊचेवायन में धूल में मिला दिया। कालधर्म को पहुंचा हुआ वह पीर उस समाधि में सोया

कालधर्मं गतः साधुः समाध्यामशयिष्ट सः।
अनयत्तं कालधर्मं धर्मं कालनिष्क्तनम् ॥२१॥
(२८ भाद्रपद-१८८७। आश्वि० कृ० ६-२०२२ वि०।
१६ सितम्बर १९६५)

हुआ था। उस मजार को भी कालधर्म को पहुंचा दिया और अपने धर्म को काल के गाल में पहुंचा दिया।

२८ भाद्र० १८८७। आश्विन कृष्णा ६ २०२२ वि०। सितम्बर १६, १९६५।

श्यालकोटाञ्चलम्

पठानकोटतो जम्मू मार्गे कालूचले स्थले।
जम्मूसम्बान्तरे मुख्यं कृत सैन्य-निवेशनम् ॥१॥
युग तु पत्तिमहत्याः सन्नद्धं क [1]विभाजनम्।
इदमित्थ वल तत्र ह्यासीत्तस्य निदेशने ॥२॥
विपक्षे बहुला सेना मुजाहिद-रजःकरैः।
धर्मोन्मत्तै रधर्मिष्ठैः पुनः सा प्रचुरा कृता ॥३॥

श्यालकोट अंचल

पठानकोट जम्मू मार्ग पर कालूचल नामके स्थान पर जम्मू तथा सम्ब के बीच सेना का मुख्य शिविर स्थापित किया गया। दो पैदल पलटन तथा सशस्त्र विभाजन (डिविजन) को उस शिविर के कमान में रखा ॥१-२॥

शत्रु पक्ष में बड़ी सेना थी तथा धर्म के उन्मत्त अधर्मी मुजाहिद तथा रजाकारों ने मिलकर उसको भारी भरकम बना दिया ॥३॥ पाक्य द्वारा खरीदे हुए तथा भिक्षा में प्राप्त शस्त्र तथा युद्ध

---

१ डिविजन इति आंग्लभाषायाम्।

रणोपकरणानां च शस्त्राणां पाश्य-सचय
क्रीतानां मैचसघ्नानां सम् तः सर्वतो दिशाम् ॥४॥
कृता 'रयःफलाहेति-स्तग्रस्या जनताऽखिला ।
पाश्यसैन्यामिनिर्याण तोपाघावपुरस्सरम् ॥५॥
मुजाहिदकृते चासीत्तस्य गमलक्षणम् ।
मेनिरे लक्षण ते तु युध, परपलायनम् ॥६॥
इत्थ परिणति प्रापु-र्मतिहीनां विपययाम् ।
यमस्यातिथयोऽभूवँन्स्यालें-कोटाञ्चले स्थले ॥७॥

की अन्य सामग्री का जुट चारों ओर से भरपूर था । यहां की जनता को भी रायफलो से लैस कर दिया था । पाश्य सना तोप खाने को आगे कर सामने बढ़ी चली आ रही थी ॥४-५॥ मुजा-हिदो के आगे बढने का यह निशाना बनाया गया था कि तोप सुनते ही यह समझना कि शत्रु सेना में भगदड मच गई है ॥६॥ परन्तु उन मूर्खों के लिए इसका परिणाम उलटा हो हुआ । क्योंकि उस अचल म वे स्वय यमराज के महमान हो गये । ऐसा होने पर उनकी दूसरी सेना का साहस भी लुढ़क गया । उसका

१ राइफल इति आंग्ल भाषायाम् ।

लुलुण्ठुः साहस सर्व सैन्यस्या–न्यतरस्य च ।
धर्मोन्मादस्ततोऽज्ञान निश्चित तत्र कारणम् ॥८॥
सरलेनाऽध्वना गन्तु शाखैका शस्त्रसज्जिता ।
चक्रामाभिमुख शत्रो फिल्लोरां रामदुर्गतः ॥९॥
श्यालकोट–पगोवाल् बडियानाञ्चले स्थितौ ।
सपत्नसैन्य विच्छेत्तु शङ्कुना दारुखण्डवत् ॥१०॥
सैदावाली–पगोवाल–कलोई चान्तरे स्थितम् ।
ईशितु स्वञ्चल चान्यत् सैन्यो वव्राज़ वेगतः ॥११॥

कारण उनका कोरा धर्म का उन्माद तथा अज्ञान ही निश्चित रूप में हुआ ॥७-८॥ शत्रु की बढती हुई टुकडी के सामने हमारी एक सशस्त्र शाखा सीधे मार्ग से बढी तथा दूसरी श्यालकोट पगोवाल वडियाना अचल वाली शाखा, शत्रु की सेना को लकडी के दो फाड किए जाने के लिए पच्चर की तरह उसको चीरने के लिए रवाने हुई। वह रामदुग स फिल्लौरा की तरफ़ चल पडी। उस अचल को कब्जे में करने के लिए वह वेग के साथ बढी।

लोह की खुली गाडियो पर सवार शत्रु का एक ब्रिगेड वहा उपस्थित था। आकाश में उसके विमान मंडरा रहे थे। इस तरह ऊपर नीचे की दुहरी मार से बचने के लिए हमारी वह सेना वहीं

'लोहस्य 'रिक्तशकटा–रोहाणां' हि युद्धदुर्गणम्।
अभ्रे रा–प्लावनमार्गं शत्रोरभ्रचरैः कृतम् ॥१२॥
अपवार्योमयो–र्वर्षे चिरकारी बभूव तत्।
व्यवाहरद्रिपुसम 'अपार्ष्णिः प्रथमो 'गणः ॥१३॥
द्विपदो विंशतिष्टंका नो द्वादश परासुव।
जित्वा घट्टान्बहून्मार्गेऽमर्पद् वैमानिकान्पुन ॥१४॥
परिपन्थिन आघातानारोहा 'लोह–गन्त्रिणाम्।
ईर्शाचक्रुः स्थल गाट गाढ च विषये द्विपः ॥१५॥

रुकी गई। शत्रु के बीस टैंक नष्ट कर दिये गए परन्तु बारह हमारे भी नष्ट हो गए। मार्ग में कई दुर्गों पर विजय पाकर तथा विमानों की मार को सहते हुए भी लोरो या ट्रकों में लदे शत्रु के जवानों को परास्त करते हुए, भारतीयों ने उसकी गाट इद नाम की चौकी को अधिकार में कर लिया। यह कार्य पहाड़ी गढवाली बटालियन ने सम्पन्न किया।

पगोवाल के अंचल में महाराजके नाम के स्थान पर पाक सेनों के समूह में त्रिशंकु की भांति छेद डालने में सफल होकर भारती टुकड़ी अपने स्थान पर पहुच गई। आर्य वीरों की प्रति (पैदल पलटन) ने पाक की सातमी पलटन को खदेड़ दिया, जिससे

कृतकृत्यो गढ्वालो गुल्मः शिखरिणीकसाम् ।
आर्यैस्त्रिशङ्कुकरण पाक्यस्य सैन्यसंग्रहे ॥१६॥
पगोवालान्वले पाक्ये महाराजकनामके ।
प्रावर्तत यथापूर्व भारतैः परिचालितम् ॥१७॥
पादात सप्तसरयाकुमार्य-विक्रान्तपत्तिभिः ।
विदुद्राव चिरं त्रस्त नमस्कृत्य रणांगणम् ॥१८॥
चाविण्डायुक्त-फिल्लोरे पष्ठ पाक्यस्य सायुधम् ।
केन्द्रीकृत-गण तत्र चिच्छेदार्यं वरूथिनी ॥१९॥
कार्यधर्मस्य लाभाय विवेष्टे ऽन्यतरं तयोः ।
सर्वदिक्षु तयाक्रम्य टैंकघ्नानां मुखे ददौ ॥२०॥

वे रणक्षेत्र को नमस्कार कर भयभीत होकर भाग खड़े हुए । उधर आर्य वरूथिनी ने चाविण्डा तथा फिल्लोरा में जमघट मचाती पाक सेना को तितर बितर कर दिया । जब जब भारती जवानों को मौका मिला शत्रु सेना को फाट कर उसके छोटे भाग को चारों ओर से घेर कर टैंकमारों के मुख में स्वाहा कर दिया । शत्रु के २५ टैंक मौत के घाट पहुंचा दिये गये । गोरखा बटेलियन ने फिल्लोरा छीन लिया । फिल्लोरा क्षेत्र भयानक युद्धस्थल के

स्वयं च व्यनशोत्सम ततो वीरा गतिं गतः ।
उभौ तौ मेजरौ वीरौ पदकेन विभूषितौ ॥२५॥

महावीरेण चक्रेण सम्मानेन पुरस्सरम् ।
अन्यस्तारापुरो शूरोऽलङ्कृत परमेण वै ॥२६॥

वीरचक्रेण संग्रामेऽस्मिन्कृत्स्ने सांपरायिके ।
अल्हर रैलमस्थाने चाविण्डा-निकटे स्थितम् ॥२७॥

सञ्छिद्य रैलसंपर्कं पसरूर-स्यालकोटयो. ।
विजित चार्यवाहिन्या लक्ष्यस्य पूर्ववर्तिनम् ॥२८॥

निर्भीवेष्वभ्यमित्रीय. गढवाली-भटालयः ।
चाविंडां जेतुमानप्त. कृतार्थोऽग्नि परीक्षणे ॥२९॥

चाविण्डा के पास के अल्हर नाम के रेल के स्टेशन को ध्वस्त कर आर्य सेना ने पसरूर स्यालकोट का संपर्क तोड दिया । यह तो उनके लक्ष्य को पहली कड़ी थी ॥२८॥ विघ्नों के समूह में साहस से घुसने वाले गढवाली बेटेलियन को चाविण्डा जीतने की आज्ञा हुई । वह इस अग्नि परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ ॥२९॥

आसारान्निरिणाकृतान्युधि कृतिसाहाय्य-मत्र तत. ।
जेतव्यस्य पुनः स्थलस्य गरिमा सग्राम सम्बन्धिनी ।
ऊहामास प्रयुक्तिमादिकालतो सद्यो वरीवर्तते ।
चाविण्डा मपहाय लब्धुमधुना बूट्टर डोग्रापिण्डकम् ॥३०॥
लपनान्त्यः कल्यसर' पूनासादिदलाधिप' ।
वीरावतसः सुश्लोको गढ़वाली-निदेशकः । ३१॥
डोग्रामटालयश्चऽपि सहायार्थे नियोजित' ।
पृतने गढवालीना प्रातश्चक्रमतुस्त्वरम् ॥३२॥
घोरेऽपि वह्निसपाते जिग्यतुर्वजिरालयम् ।
बूट्टरडोगरापिण्डम्या यज्जरसोरान्तरे स्थितम् ॥३३॥

इसको जीतने की योजना पहले थी उसमे परिवतन किया गया क्योकि शत्रु ने इसको रक्षा के लिए भारी तय्यारी की थी, यथा सब प्रकार के आसार, वायु सेना की सहायता आदि । इसके साथ २ इस स्थान को कब्जे में करने की युद्ध सम्बधी महत्ता थी। इन सब बाता का विचार कर चाविण्डा को छोडकर बूट्टर तथा डोग्राण्डी को लेना आवश्यक समझा गया । लेफ्टिनेन्ट कर्नल, पूना घुडसेनाधिप कीर्तिमान वीरो मे श्रेष्ठ गढवालियों का अध्यक्ष था। तथा डोग्रा बटालियन भी उसको सहायता मे लगाया गया । गढ

तज्जेतु गढवालीना मटालयप्रुग तदा।
चचाल ाभिमुख यह्नः शत्रुणोद्गलितस्य वै ॥३४॥
फिरादोधिपतिः शीघ्र-माहतः प्राणघातिना ।
प्राचलच्चदुपाध्यक्ष, खान्-मेजर-सज्ञकः ॥३५॥
गुल्मेन सहितो वीरोऽस्पृशत्तल्लक्ष्य-मात्मनः ।
प्रतीक्षते स्म तत्रस्थ' साहाय्य स्वीयबन्धुभिः ॥३६॥
विना तेन ततोधीमा-न्प्रत्ययगच्छत्तदासनम् ।
असुस्थेपु नभोवाचो यन्त्रे पु विपदर्णवे ॥३७॥
सुहृत्सम्पर्क-मिन्नऽस्मिन् तेन साधु विनिश्चितम् ।

वालिया की टुकडी प्रात काल शीघ्र ही चल पडी। घोर आगकी वर्षा में भी उसने वजीरावालो पर कब्जा जमा लिया। अब जस्सूरा से पार दूदूर डोग्राण्डी की ओर बरसती आग के मुख में गढवालियो के २ बटालियन आगे बढे। उसके अध्यक्ष फिरोदा को तुरत प्राण घातक चोट लगी। उसके उपाध्यक्ष खान मेजर ने उसका स्थान ले लिया और वह वीर अपनी टुकडी के साथ अपने लक्ष्य को पाने में सफल हुआ। वहा वह अपने साथियो द्वारा सहायता की प्रतीक्षामें डटा रहा। पर उसके पास की आकाश-

पातोत्पातः पुनर्युद्ध संकुल तुमुल तथा ॥३८॥
चलविस्म युयुत्सूना-मुभयोः पक्षविपक्षयोः ।
बजूकाहेतय आर्या आयुधैश्च पुरातनैः ॥३९॥
विमुखे शस्त्र-संस्रावे कथ स्यु पूर्णसक्षमा' ।
आहतानानुगान्नेतु-मुपाध्यक्षः कृतश्रम ॥४०॥
प्राणान्तकर-शस्त्रेणाहत' सोऽपि दिवगतः ।
फिल्लोराजस्सुर्रा बूदुर-डोग्राएह-महाहवे ॥४१॥
इतिहासात्मके तस्मिन् लेख्ये स्वर्णाक्षरेषु च ।

वाणी (रेडियो) ने जवाब दे दिया । ऐसी आपत्ति के समुद्र में अपने मित्रो से सम्पर्क कट जाने पर उसने वहा से लौटना ठीक समझा । दोनों पक्षों का विकट सकुल युद्ध चल पड़ा । आर्यों के पास पुरानी बजूका व दूकें थी । शत्रु के धुमाधार नवीन शस्त्रो की मार के सामने ये बन्दूकें क्या कर सकती थी । अपने आहत जवानो को क्षेत्र से हटाने में वह अध्यक्ष रात जुट गया । परन्तु ऐसा करते हुए ही उसको घातक गोलिया लगी और वह स्वग को पहुच गया । फिल्लोरा, जस्सुरा, बूदर, डोग्राडो का महायुद्ध इतिहासात्मक था और स्वर्णाक्षरों मे लिखने योग्य है । भारती सेना को

ऋतेऽपि व्योमयानेभ्यः साहाय्य भारत बलम् ॥४२॥
चाविंडो पतनासन्नो दिष्टया मोक्षमवापतत् ।
प्रहार-सृजनस्येहा सुहृदा शान्तिमिच्छता ॥४३॥
ग्राहग्रहनिमग्नः स गजेन्द्रो हरिणा समम् ।
अभ्यर्थना समायाता प्रहार सृज्यतां भवान् ॥४४॥

वायु सेना की सहायता नही थी। तब भी चाविण्डा उनके हाथों में पड़ने वाला ही था। विधाता की कृपासे उसका छुटकारा हो गया। शान्ति चाहने वाले मित्रो की यह इच्छा थी कि गोलाबारी बन्द की जाय और उनकी यह प्रार्थना इस प्रकार पहुची जैसे ग्राह की दाढ में पकड़े हुए गजेन्द्र की भगवान् ने मोक्ष की।

चाविराडा फिल्लौरा क्षेत्रम्

पाक्या उपद्रवपरा धृष्टा॰ प्रच्छन्नवर्त्मना ।

प्रवेश प्राप्य देशेऽस्मिन् यमपुर्यां हि प्रेषिता॰ ॥१॥

शत्रूणां वैधिक सैन्य स्थानापन्न कृत तदा ।

भारतस्य बल योद्धु ॰जम्मू-काश्मीर वर्षयो ॥२॥

भङ्ग॰ ॰सख्यविरामस्य सीमाया लङ्घन पुन ।

निवेदित स्ततोऽस्माभि-र्निम्मोऽप्यद्यो नियो जत ॥३॥

चाविण्डा फिल्लौरा क्षेत्र

उपद्रवी पाकिस्तानी ढीठ छिपे २ इस देश मे घुस आए मानो यमराज की नगरी मे पहुच गए। तब शत्रु ने अपनी अमली सेना को उनकी जगह भेजा, ताकि वे जम्मू-कश्मीर मे युद्ध छेड़दें। युद्ध विराम को सीमा को लाघ कर उनके बढने की सूचना इस निमित्त नियुक्त निम्मो को हमने दे दी। उस पर उसन सुरक्षा

---

१ अस्य देशयमक्स्य यपक्नामापि मन्तव्यम्।

२ युद्ध विराम सीज फायर सख्यता प्रहार वा।

निम्भो न्यवेदयत्तत् सुरचाया सदस्ततः ।
पक्षपातपरा पाक्येऽम्यभूवश्च ससदम् ॥४॥
तस्कराः दस्यवस्तावद्दृढा मातृस्वसेयकाः ।
अतः पाकयस्य निकृतिर्न चकाशे यथायथम् ॥५॥
सुज्ञानामज्ञवत्कृत्या-स्क्लीवत्वात्साधिकारिणाम् ।
निस्सीमास्त्रममाहारात् साहम विनिदे रिपुः ॥६॥
आर्यराज्यपरालिप्सा विजयश्रीमरीचिका ।
अयूबस्य रणोन्माद. प्रेरयामास त मृघे ॥७॥
विजिता वज्जरागड्ढी विनायासेन भारतैः ।
शतद्रु वनपालास्ते शतद्रोर्वीचयः समम् ॥८॥

परिपद् को वह बात सूचित कर दो । परन्तु वहा तो पाकिस्तान के पक्षपात का नशा था। तस्कर, दस्यु, भी उनके मौसेरे भाई थे। इस कारण पाक्य की दुष्टता ठीक २ प्रकाश मे नहीं आई । परिपद् के बडे २ विद्वानो की मूर्खों जैसी चाल तथा अधिकारियो की नपुसकता के कारण शत्रु ने साहस पूवक असीम शस्त्र वर्षा की परन्तु आर्य राष्ट्र भारत को जीतने की उसका लालसा मृगतृष्णा ही रही ॥२-६॥

अयूब को तो युद्ध का उन्माद था न, अत वह उसी पर

शतशो दुद्रुवु' शीघ्रं मत्वा शेष, द्रव किल ।
चरवाहा 'महाराजौ, केन्द्री, सचार–कर्मणः ॥६॥
वरुणस्यैन्द्रकाष्ठाभ्यां निष्पेदे नोद्यामक्रमः ।
मगालयावुभौ वीरावादिष्टौ कमतत्परौ ॥१०॥
निष्पन्नौ सुकृती सैन्यौ मद्रासी च कुमायुव. ।
लपनान्त्यः [२]क्रल्यनरो मेहता सैन्यनायक. ॥११॥
मद्रासीना गति वीरा–मत्राप रणमूर्द्धनि ।
धन्यारतस्यानुगा वीराऽयोत्स्यन्त परमौजसा ॥१२॥
जग्रहुः कांक्षित लक्ष्य–मुन्मथ्यैव रिपू तत' ।
शत पाकया हता स्तत्र बहुशः पुनराहताः ॥१३॥

[१]तुल गया। भारतीयो ने बज्जरगढी को अनायास ही दबोच लिया। सैकडो सतलज वनपाल (रेञ्जस) सतलज नदी की नहरो की भाति [१]बह चले और उन्होने समझा कि बाकी भी नौ दो ग्यारह हो गए हैं। पश्चिम तथा पूर्व दोनो ओर से भारत के जवानो का आक्रमण हुआ। वे मद्रासी तथा कुमाऊ के चतुर सुकृति वीरो की दो [१]टुकडिया थीं जो वीर तथा 'काम में तत्पर थे और उनका अध्यक्ष

• १ 'महाराजके इति पूर्णनाम । २ लेफ्टिनेण्ट कर्नल ।

प्रगृहीता रणक्षेत्रे शतमाहव-वन्दिनः ।
महतावीर-चक्रेण मेहतासौ विभूषितः ॥१४॥
पाक्यस्य श्यालकोटस्थः सन्नद्धः सैन्य-सग्रहः ।
पठानकोट-जम्मोश्च प्रत्यूहो वर्त्मनोऽन्तरम् ॥१५॥
विघ्नस्यास्य विनाशार्थं भारताः सैन्य-नायकाः ।
अपेक्षन्ते स्म तद्भङ्ग सुरक्षाया उपक्रमे ॥१६॥
तदर्थ-मभियानात्प्राक् छत्रुदेशे दृढ स्थलम् ।
प्राप्यमावश्यक मत्वा स्वाधारधारणस्थिताः ॥१७॥

लि० कर्नल मेहता था । मद्रासी वीरो ने झपाटे के साथ धावा किया । वे अपने अध्यक्ष के आदेशानुसार परम ओजसे जूझे । उन्होने शत्रु को वहा मसल कर रख दिया और अपना लक्ष्य प्राप्त कर लिया । शत्रु के १०० सिपाही खेत रहे और बहुत स घायल हुए । १०० पाकिस्तानी कैद कर लिए गए । ले क मेहता को बडे वीर चक्र से अलकृत किया गया ॥७-१४॥

पाक्य का स्यालकोट पर सशस्त्र सैन्य सग्रह पठानकोट जम्मू के मार्ग में बडा रोडा (विघ्न) था । इस विघ्न के विनाश के लिए भारत के सेना - नायको ने अपनी सुरक्षा की दृष्टि से उस

तिस्रो 'धुरः प्रवर्तन्ते पार्श्वतो न प्रक्रमे ।
मिकनालान्तरे मार्गे चाभिपेणन-पूर्वकम् ॥१८॥
प्रवेशं शत्रुविषये विचेरु सुविशारदाः ।
गोरख-राजपूत्राणां गढवाल-निवासिनाम् ॥१९॥
'भटालयत्रय चैतद् सङ्कुल हि 'बृहद्गणम् ।
अभिदुद्राव चरवाहां शौर्यवीर्यसमन्वितम् ॥२०॥
पाकयानां ततः सैन्यं युयुत्सूनां समाहृतम् ।
अनुसृत्य कुविख्यातैः 'रजाकारैः सुआर्हितै ॥२१।

के हथियाने की आवश्यकता समझी। परन्तु उस पर वार करने से पहले शत्रु के देश में ही दृढ मोरचा जमा लेना जरूरी है ताकि वहाँ से अभियान किये जा सकें। हमारे आगे बढ़ने में बीच में तीन धुरियां पड़ती हैं। यह सोच कर रणपण्डितों ने मिकनाला के मार्ग से शत्रु के देश में बल पूर्वक प्रवेश करने का विचार किया। गोरखा, राजपूत तथा गढवालियों, तीनों की मिली जुली वाहिनी शौर्य तथा वीरता के साथ चरवाहा पर झपटी ॥१५-२०॥

वहाँ पाकम लड़ाकुओं की सेना जमी हुई थी। इसमें

१ बजरागढी तत्र महाराजके, पिण्डो-चरवाहा इति तिस्रोधुर ।
२ बैटालियन्। ३ ब्रिगेड। ४ रजाकार ।

[1]शल्याऽमेय-सुरु गाभिः सुश्लिष्टाश्च परस्परम् ।
कन्दराः खनितास्तत्र कांदिशीकसुवर्त्मभिः ॥२२॥
खचित पिल्लवचोभिर्मधुरोश इव स्थलम् ।
गोरखका राजपुत्रा जगृहुश्चरवाहकम् ॥२३॥

प्रकृत्या [2]चरवाहस्य स्वामित्व भारतस्य वै ।
पार्श्व-सरक्षण कर्तुं गढवाल्यो नियोजिताः ॥२४॥
अन्यच्च व्यतिरेकेण कृत तै [3]सांपरायिकम् ।
सुरुङ्गोपकरणस्य भार, पएणा महानसाम् ॥२५॥

सहायक टुकडिया कुख्यात रजाकार, मुजाहिद भी थे। तथा इनका आपस मे शस्त्रो से न छेदी जाय ऐसी सुरगो से गठजोड भी था। भागने के मार्ग भी ख दक खोद कर बनाए हुए थे। मधुमक्षी के छत्ते को भाति वहा पिल्लबक्स भी बने हुए थे ॥२१-२३॥

गोरखा तथा राजपूतो ने चरवाहा को कब्जे में कर लिया। वास्तव मे चरवाहा पर भारत का ही स्वामित्व है। गढवालियो को उसके पार्श्वरक्षक बनाया। और २ बातो के अतिरिक्त उन्होंने

१ शल्य वाण विशेष बम्ब वा शेल इति आग्ल भाषायाम् ।
२ चरवाह गोचर भू । ३ कमॅण्डा ओपरेशन ।

जीपानि बहुसंख्यानि बहुला मृध-बन्दिनः ।
लोप्त्र सामरिकं सर्वं विग्रहस्यास्य गण्यते ॥२६॥
पूर्णं नवानसामारं लघूनि ह्यायुधानि च ।
पंच जीपानि शत्रूणां रोगिणां वाहनत्रयम् ॥२७॥
विस्त्रो रयःफला स्ताश्च सर्वा [1]ण्वापरायुता ।
षष्ट्यधिक-शतं बम्बा मोर्टरा अभिधानराः ॥२८॥
वेदासुनेत्र योद्धारः प्रेषिता यमपत्तने ।
समर्पणीकृतार्थं वै शतं समरबन्दिनः ॥२६

साम्परायिक विधि—(कमेण्डो ओपरेशन) को अपनाया । सुरंगों के उपकरणों, छ रसोई घरों का सामान, बहुत संख्या में जीपें, बहुत से युद्धबन्दी। ये सब लड़ाई के सामान झगड़े में जीती वस्तुएं मानी जाती हैं। नौ छकड़ों का सारा भार, छोटे शस्त्रास्त्र, ५जीपें रोगी वाहन (एम्बुलेन्स), ३ रायफल जो सब बिना धक्का देने वाली थी। १६० से अधिक मोटर-बम्ब, ४५२ शत्रु सैनिक यम लोक को चले गये। १०० युद्ध बन्दियों ने आत्म समर्पण किया

१ रिकोइल लेस। धक्का न देने वाली।

एतावद्भारत. यत्न निष्पन्न समरांगणे ।
अतः पर पाक्य-सैन्य यथेष्टस्थानमागतम् ॥२०॥
टैंकानामुरुनिवह पाक्यपाल ममादरत् ।
तादृशायोधन, तत्र सर्वसन्नद्धनात्मकम् ॥२१॥
समभूत्सैन्ययोर्मध्ये वीराशमन-प्रांगणे ।
पूर्वं तु पाक्यसैन्यस्य सर्वथा हि निर्लोपनम् ॥२२॥
ततोऽनदारण कर्तु-मस्माकमवधारणम् ।
श्यालकोट-पस्रूरां-पद्धत्या रैलगन्त्रिण. ॥२३॥

भारत ने इस युद्ध में यह सफलता पाई। इसके ,उपरान्त पाक सेना अपने ठिकाने लग गई ॥२४ ३०॥

पाक्याधिप वहा अपने टैंको का बडाभारी समूह छोडकर भाग गया। वहा इस प्रकार का घोर सग्राम दोनो सेनाओ के बीच हुआ। पहले तो पाक्य सेना का सर्वथा लोप, या फिर उखाड पछाड करना यह हमें निश्चय करना है। पसरूर से श्यालकोट तक रेल मार्ग है। अत उसको काट डालना युद्ध का प्रशस्त मार्ग है। सुकृती राजेन्द्रसिंह हमारी सेना का नायक द्वितीय विश्वयुद्ध म अफ्रिका के रणक्षेत्र में थे। वहा टैंक युद्ध म विचक्षण वीर जनरल रोमेलो

विच्छेदस्य प्रशस्तः स्यान्मार्गो नो रणमूर्द्धनि ।
राजेन्द्रसिंह सुकृती भारतीसैन्यनायकः ॥३४॥

द्वितीये निरवसग्रामे ह्माफ्रिक रणप्रांगणे ।
रोमेलो जर्मनो वीरष्टैंक-युद्ध-विचक्षणः ॥३५॥

जग्राह तस्य वैदग्ध्य-मवधारण-पूर्वकम् ।
एकलव्यसम तेन तज्ज्ञान सनित हृदि ॥३६॥

राजेन्द्रसिंहो जनरलः शास्तृष्वेकतमोपिप ।
भारतीपृतनामध्ये पश्चिमे रणमूर्द्धनि ॥ ३७॥

जर्मनस्य विपक्षेषु ह्माफ्रिके चांग्लशासनात ।
चिच्छेद द्विपदो व्यूह-मशेषु शकुना कृतम् ॥३८॥

था। राजेन्द्रसिंह ने उस के रण कौशल का ध्यान पूर्वक ज्ञान प्राप्त किया। उसने (महाभारत समय के) एकलव्य की भांति उस ज्ञान को अपने हृदय में संचित रखा। शासन करने म एक ही जनरल राजेन्द्रसिंह अ ग्रेजो के शासन में पश्चिमी राष्ट्रों के संघर्ष मे जमनो के विपक्षम भारत से गई सेनायें अफ्रिका मे शत्रु सेना के व्यूह के भागों को शकु (कीली) के समान चीर कर त्रिशंकु जैसी करा मात दिखलाई। इस प्रकार उत्तरोत्तर सफलता प्राप्त कर भारत य

त्रिशकोरास्पद नीयादेकैकमधिकं तया ।
प्रत्येकेऽस्मिन्पातेऽस्मिन्नार्यैः शौर्यं प्रदर्शितम् ॥३६॥

यदा यदा पराभूतः सास्राचिस्तु परोऽभवत् ।
मृषा कुमीर-चरित सानुकम्पान् प्रदर्शयन् ॥४०॥

आंग्लः प्रधानसचिवो दिष्ट्या त्राता समागतः ।
तेनाभ्यर्थिता विरविरामाभ्यां स्वीकृता ततः ॥४१॥

निर्वेदात्मना द्विपदा शान्तिप्रेम्णा च भारतैः ।
अकस्माद्विपदो गुल्मो व्यारवाटाभिधस्थले ॥४२॥

सेना ने शौर्य दिखलाया ॥३१-३६॥

जब २ शत्रु को मात खानी पड़ी, उसने आंसू बहाए। उस पर कृपा रखने वालों को दिखाने के लिए वे आंसू मगर केसे थे। उसके भाग्य से ब्रिटिश प्रधान मन्त्री उसका रक्षक हो गया। उसने युद्ध बन्दी की प्रार्थना की। उसे दोनों पक्षों ने स्वीकार किया भारत ने अपनी शांति प्रियता के कारण और पाकय ने अपनी खीझ मिटाने के लिए। फिर भी दुश्मन की फौज व्यारवाट में आधमकी। वहां भारत की पुलिस अपने सामान्य कर्त्तव्य में जुटी हुई थी। उस पर अकारण धावा कर दिया गया। वृत्तहीन (ब्रिटेन) का प्रधान

भारतस्य प्रदेशस्य परिक्रम–परायणः ।
आरविणो गण तत्र अभ्यवारीदकारणम् ॥४३॥

वृत्तहीनस्य प्रमुखोऽमात्यो हि पोषक पर. ।
पोष्यस्यापि सदोषस्य स भग क्लि प्रोज्झितः ॥४४॥

नेपथ्ये सोत्सुको ह्यासीद् भूत्वा शान्तिकुशीलव ।
प्रदेशकानां धृष्टाना विनियोग सुयोजित ॥४५॥

मारणोच्चाटने मोहो विनियोग कलौ स्तथा ।
चतुर्गुण बल पाक्य शस्त्रास्त्रौघस्तत परम् ॥४६॥

मन्त्री उसका पूरा पोषक था। पावय दोषी था पर तु अपने पालतू का दोष भी छिपाया गया। वह म त्री परदे के पीछे शाति का दूत बना। पाकस्तानियो की धृष्टता का काय योजना युक्त था। उसम मारण, उच्चाटन मोहन तथा कलह की वृत्ति थी। उनकी फौज चौगुणी थी तथा शस्त्रो की भरमार थी जो अपनी सुरक्षा के बहाने एकत्र की थी। यह सब साम्राजयवादी राष्ट्रो की कूटनीति का फल था ॥४०-४६॥

फिल्लोरा नामक रणक्षेत्र म भारत-पाक युद्ध का ससार मे विलक्षण सघर्ष हुआ। शत्रु ने इस मुठभेड मे अपने टेको का बडा दस्ता

सगृहीतोऽविरेणैव रक्षा-व्याजेन शत्रुणा ।
साम्राज्यवादि-राष्ट्राणां कूटनीतिर्हि कारणम् ॥४७॥

फिल्योग इति विश्रुते रणभुवि प्रत्यर्थिटैंकाहवे ।
संसारेऽपि विलक्षणो सुकृतिनो नो वीर-सेनामुखाः ॥
व्यूहं चापि न भूतपूर्व-मधुना ध्वस्ता रिपो-रायुधाः ।
देशानां हि चमूपति-व्रजमिह प्रेक्षा-चिकीर्षुर्गतम् ॥४८॥

तत् समीक्षा—

चित्र मेतद् बृहद्वृत्त-मजेया भग्नतांगताः ।
टैंका आमेरिका ध्वस्ता बहुसख्या इतस्ततः ॥४९॥

भोक दिया। हमारी सेना के चतुर नायकों की अपूर्व व्यूह रचना तथा उनके वीरता-पूर्ण कार्यों की ख्याति होगई। वहां शत्रु के टैंकों का कचूमर निकाल दिया गया। इस अभूतपूर्व रणकौशल तथा शौर्य गाथा को प्रत्यक्ष देखने के लिए विदेशों के सेनापति स्वयं वहां आए। ४७ ४८॥

इनके उद्गार थे कि—

'यह बड़ी अद्भुत बात है कि अमेरिका द्वारा दिए हुए बहु संख्यक अजय टैंकों की यह दुर्गति हुई और उनका कचूमर निकल

विकीर्णाः सर्वतः पाक्याः कांदिशीकाश्च सैनिकाः ।
पेट्टनटेंक-पुर नाम तत्स्थल प्रथित बुधैः ॥५०॥

पराक्रमेण योधानां पतीनां कौशलेन च ।
प्रवृत्ते शस्त्रसपाते पराभूतः परोऽभवत् ॥५१॥

इन्द्रियेषु सबुद्धीषु प्राप्तासु स्तब्धतां तत ।
कर्मचये गतिं काञ्चिदन्यां प्राप न सोऽबुध ॥५२॥

पलायनपरामेकां जग्राह साध्वस समम् ।
इन्द्रियाणां समुदयो बुद्धया सह सुकर्मणा ॥५३॥

गया। ये सब तरफ बिखरे हुए शसक रहे हैं और पाकिस्थानी सिपाही नौ दो ग्यारह हो गए।

बुद्धिमानो ने उस स्थल का नाम ही पेट्टनटेकपुर रख दिया। परस्पर शस्त्रास्त्र चलते ही शत्रु के छक्के छूट गये और वह परास्त हो गया। यह भारतीय जवानो के पराक्रम उनके नेताओ के कौशल की करामात थी। शत्रु की पाचों इन्द्रिया तथा छठी बुद्धि स्तब्ध हो गई (छक्के छूट गये) और वह अकमण्य हो गया तब उस मूर्ख अभागे को रणक्षेत्र मे दौडभागने के अतिरिक्त कोई उपाय न सूझा। पाच कर्मेन्द्रिया तथा छठी बुद्धि के समूह

लोके छक्का इति ख्यातः षट्क इत्यभिधीयते ।
व्यापार-शून्यता तेषां छक्कायाश्छुटन स्मृतम् ॥५४॥
योरोपीये महायुद्धे प्रख्यात टैंक-सयुगम् ।
अफ्रीकाद्वीपे प्रदेशे दक्षिणे ततः ॥५५॥
नष्टाः सप्तति मित्राणां रोमेलस्याश्रयामकम् ।
रोमेलो जर्मनो वीरो ब्रिटेना-स्तद् निपातिणः ॥५६॥
अत्राप्यस्थिरमा शत्रोर्नष्टा न कवला रसाः ।
द्वित्र्यह प्रायशो युद्ध हीदृश हि प्रवर्तते ॥५७॥

को छक्का समझिये । ये जब व्यापार शून्य हो जायं तब छक्का छूटना कहा जाता है

योरोपीय महायुद्ध म अफ्रिका के दक्षिण भाग में प्रसिद्ध टैंक युद्ध हुआ था । उस समय इग्लैण्ड फ्रास आदि मित्र राष्ट्रो के ७० तथा जमन सेनापति रामल क २० टेक नष्ट हुए थे । यहा शत्रु के ६७ तथा हमारे केवल ६ नष्ट हुए टैंको का युद्ध प्राय २ ३ दिन ही चला करता है पर तु हमने तो ऐसा युद्ध एक पखवाडे तक दृढता स लडा । इसमें हमारे सेनाधिपो की व्यूह रचना के लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं । शत्रु का टैंक समूह दोनों सेनाश्रो के बीच

सप्राहाण्म यय तस्मिन्मेकपद्यागधि इदम् ।
अस्माक स्पृहनिर्मीता सायुरादस्य भाजनम् ॥५८॥
द्विपद-ट्टैकनिवहो पयधान पयम्पित ।
अस्त्राहतेपु टैंकपु मारतीयेपु शत्रुणा ॥५९॥
नाशाय-रक्षणे शक्त-स्तट्टैंक नरह स्वयम् ।
गुल्मत्रय रिपचस्य यर्यो यमनिकतनम् ॥६०॥
कांदिशीकस्य द्विपदो ध्वस्ता-ट्टैंका समतत ।
जघर्प तांश्च न: सैन्य रयेलब्ध धन यथा ॥६१॥

म लिया गया। शत्रु भी जब हमारे टैंका पर प्राघात करता तो उसके स्वय के टैंक उनकी मार म प्रा जाते थे। इस तरह शत्रु की तीन टुकडिया यमपुर को चली गई।

भगोडे शत्रु के ध्वस्त टैंक चारो तरफ बिखरे पडे थे। हमारे जवानो ने उन्हे विजय की लूट की भांति घसीट २ कर अपने अधिकार में किया।

मित्रराष्ट्रा इति स्वय गृहीताभिधा ब्रिटेन-प्रासादिभ ।

द्रोण-पर्व

मेजर मेघसिहस्य शौर्यं, चातुर्यं, प्रत्युत्पन्न-मतिश्च

गुल्मस्याधिप-मेघसिंह-प्रथितः स्वाधीन-सेनागणे।
शास्तु' शिष्टिरभूच्च भिन्नफलदा पक्षे विपक्षे तथा।
शत्रोर्भीति-करी पुनश्च सुहृदां सोल्लास-शौर्यप्रदा।
मेघ.सिंहरवो विपक्षशिविरे शार्दूल-विक्रीडितम् ॥१॥

मेजर मेघसिंह का शौर्य, चतुराई तथा तत्काल बुद्धि

मेजर मेघसिंह अपनी सेना की टुकड़ी के अध्यक्ष थे। पाकिस्तान की फौज द्वारा उन पर आक्रमण करने पर अपनी छोटी सी टुकड़ी को उनके कमान (आदेशों) का शत्रुओं तथा अपने ही जवानों पर भिन्न २ प्रभाव पड़ा। उससे शत्रु का दिल दहल गया किन्तु अपने जवानों के हृदय में उल्लास तथा वीरता की लहर उमड़ पड़ी। मेघसिंह की सिंह गर्जना दुश्मन के शिविर में शार्दूल-विक्रीडा बन गई। (यह छन्द शार्दूल विक्रीडित है-अर्थात् सिंह की क्रीडा) ॥१॥

मेघसिंह उवाच—

"नाराचैरागतं शत्रु प्रहरन्तु सुदूरतः ।
साहसेन च शौर्येण सहरन्तु पुरस्सरम् ॥२॥
सन्व्यूहनार्द्धवृत्तेन शत्रुसैन्य विमर्दयन् ।
सहजेन स्ववीर्येण प्रजहातु न धीरताम् ॥३॥
तस्यैव च यमाध्वा र सुगम्य कुरुत द्रुतम् ।"
मेघसिंहमृगेन्द्रस्य गर्जितं श्रुति-गोचरम् ॥४॥ ॥

मेघसिंह ने आदेश दिया—

"बढते हुए शत्रु को दूर से ही गोलों का निशाना बनाओ । पास आने वाले दुश्मन को साहस और शौर्य के साथ मार गिराओ ॥२॥ अर्द्ध वृत्त व्यूह बनाकर शत्रु की सेना को मसलडालो। तुम अपना स्वाभाविक वीर्य तथा धीरता न छोड़ो ॥३॥ दुश्मन के लिए यमपुरी का रास्ता साफ कर दो। सिंह रूप मेघसिंह का इस प्रकार का कमान शत्रु के कानों में पड़ा ॥४॥ भारतीय रणबांकुरे वीरों का बाल बांका करने को कौन समय है ? शूरवीर, धीर, वीरों की सिंह गर्जना रणक्षेत्र में उठी ॥५॥ पाकिस्तानी गीदड़ उसे सह न सके और व भाग खड़े हुए । युद्ध में शौर्य ही कारगर होता है। सिपाहियों की संख्या अथवा शोग कुछ काम नहीं

वीराणां रणवक्राणां वाल वक्र करोति कः ।
सिंहानां शूरवीराणां सिंहनाद रणांगणे ॥५॥
जम्बुका न सहन्ते स्म कादिशीका यतोऽभवन् ।
शौर्यं हि गण्यते युद्धे न सख्या न निकत्थनम् ॥६॥
सश्लिष्य शौर्य–धैर्याभ्यां क्ष्वेडा ससप्तकस्य सा ।
मित्र–द्विजान् मंत्रशक्ति-स्ताल–शक्ति द्विपद्विजान् ॥७॥
चतु.शत रिपुदल–मस्माक खाब्धि–केवलम् ।
तलेषु भूमिस्खलिता परेषां नो दृढा स्थिरा ॥८॥

देतीं ॥६॥ रणक्षेत्र में कभी पीठ न दिखाने वाले हमारे जवानों का सिंह नाद शौर्य तथा धैर्य से सना हुआ था न कि थोथा। उसने भारतीय द्विजो (क्षत्रियों) में मत्र की शक्ति का काम किया चपुन उधर शत्रु द्विजो (यानि चिडियाओ) में ताली बजने का (जिससे

---

४०० सख्या नभोयुग (००) सहिता, वृत्त च नभाभ्या युक्तम् । न पुस्त्व पादयवले स्थिर अन नभोनमसी सम तत्र । द्रुता, विलबिता वा साधारणा गति तस्य नाभीष्टा । अत हरिणीप्लुताऽभवत् ।

पृथिव्या स्तोका शून्ये अधिका सा गति पलायनावसरेऽपि हरिण्या प्रकृति क्षण स्थित्वा व्याधस्य सिंहस्य वा सामीप्य निरीक्षितव्य इत्यपि विस्मृता पराभूतेन । तस्यानुगामि स्वन एव ।

सुकृत्यिवाच्चेडेय शौर्य पौरुषगमिता ।
प्रत्युत्पन्नधिया श्लिष्टा शत्रूणां हृद्विदारिणी ।।१४।।
"न सशक्नोति किं यस्य प्रज्ञा नापदि हीयते"

आंधी की तरह उनके पौरुष शौर्य तथा साहस को हवा कर दिया ॥१३॥ यद्यपि यह दहाड दहाड मात्र थी परन्तु इसमें शौर्य और पौरुष भरा हुआ था । थोथा कायरों का सा गाल बजाना नहीं था । इसमें तत्काल बुद्धि तथा चातुर्य सना हुआ था इससे शत्रु के हृदय दहल गये ॥१४॥

भुट्टोवालाऽऽराक्तस्थलम्

प्रदेशे जैसलमेरौ तत्र चारचिण-स्थले ।
सैन्यस्य षष्ठि-रधिक भुट्टोवाले समागतम् ॥१॥
स्वचालनधर्मैः शस्त्रैं सन्नद्धो रिपुराक्रमत् ।
स्थलस्य रक्षको वीरः भवरसिंह-नामकः ॥२॥
युयुधे शौर्यमपृक्तः सामान्यै-रायुधैः सह ।
चारित्रिज-विहीनः सोऽमरत् चिप्र हि सयुगे ॥३॥
हताना शत्रुयोधानां शस्त्रगोलक सञ्चयम् ।
कृत्वाहतोऽभि-दुद्राव जव-पूर्व द्विडासनम् ॥४॥

भुट्टो वाला चोकी

जैसलमेर म भुट्टोवाला चौकी पर ६०-७० शत्रु सैनिकों ने धावा बोल दिया। उनके पास स्वन चलने वाले शस्त्र थे। भवरसिंह उस चौकी का थानेदर सामाय हथियारो से ही उनसे वीरता स लडा। उसके पास के कारतूस शोघ्र समाप्त हो गये। उसने शत्रु के मरे हुए जवानो के कारतूस बटोर कर शत्रुके मोरचे पर श्राक्रमण कर दिया। बडी तेजी से ऐसा करके शत्रु के बाकी बचे

सजयान ततः शेषान् हरिणानां गणानिव ।
पाक्यैक-स्त्रिगुणः शत्रो रिति तेषां विकत्थनम् ॥५॥
हत्वा त्वेकाकिना त्रिंशत् भंवरेण मृषाकृतम् ।
वृत्तान्तः सर्वदेशीयो नैच्छाकी मन्यते पृथः ॥६॥
पादत्राणेन तस्यैव तस्य मूर्ध्नः प्रपीडनम् ।
गतिर्नान्यास्ति मैत्ययस्य कुपात्रायाततायिन ॥७॥
अतर्कित चाक्रमण पावयः कर्तुमुपाक्रमत् ।
स्थलाधिपो हि तत्रत्यो विज्ञप्तो ग्रामवासिना ॥८॥

सिपाहियों को हरिणों के झुड की तरह मार डाला। भवरसिंह अकेले ने ३० शत्रुओं को मौत के घाट उतार कर पाकिस्तानियों के इस बकवास की धज्जी उड़ादी कि एक पाकिस्तानी जवान भारतीय ३ जवानों के बराबर है। यह बात पढित लोग व्यापक मानते हैं। यह केवल पाकिस्तानियों पर ही लागू नहीं है। जिसका जूता उसका ही सिर यह कहावत भवरसिंह ने सत्य कर दिखाई भिक्षा में मिले शस्त्र और वे भी आततायी कुपात्र को दान किये हुओं की दूसरी क्या गति होवे ॥१-७॥

पावय ने अचानक आक्रमण करने की ठानी थी परन्तु वहां के गांववासियों ने पुलिस के थानेदार को सूचित कर दिया।

अन्यथान हि सग्राम–मारचिपतिना तदा ।
चत्वारो हीनबला जग्मुरन्यतर स्थलम् ॥९॥
मात्र नवैव विक्रान्ता-युध्यन्तः परिपथिभिः ।
अकस्य पूर्णता स्तोकै र्नाम्ना च प्रतिपादिता ॥१०॥

थोड़े से आदमियों में से भी चार जवान किसी कार्य से दूसरी जगह चले गये थे। वहां के ये वीर नव थे परन्तु वे-वीरता से लड़े। थोड़े होते हुए भी नव पूर्णांक है यह उन्होंने अपनी वीरता से सिद्ध कर दिया।

कार्यार्गल (कारगिल) शौर्यस्थलम्

मनुसंख्यसहस्राणि हस्तार्द्धानि स्फूर्जानि च ।
उच्छ्रिते हिमवत्सानौ चारचिस्थलमेव तत् ॥१॥
रणकार्य–विरोधे सा ह्यर्गला–रूपिणी स्थिता ।
चौकी–कार्यार्गलानाम ह्यपरिहार्या सुरक्षणे ॥२॥
सीताराम जमादार आदिष्टः कर्तुमञ्जसा ।
निष्क्रमणं विपक्षस्य पराभवसमन्वितम् ॥३॥

कारगिल चौकी

हिमालय पर्वत की लगभग १३५०० फुट ऊंची चोटी पर स्थित पुलिस की चौकी है। रण छिड़ने पर शत्रु के आक्रमण को रोकने में वह आगल (अगला) के समान है। अतः सुरक्षा के निमित्त उसको अपने अधिकार में रखना अनिवार्य है। इस चौकी का नाम कार्यार्गला (कारगैला) है। वहां से शत्रु को खदेड़ कर निकाल देने का आदेश श्री सीताराम जमादार को दिया गया। जमादार ने अपने जवानों को उस ऊंची दुर्गम टेकरी पर अधिकार करने के लिये

सज्यापमञ्य मजवमादिष्टा अनुगामिनः ।
अग्रे प्रसर्तुं-शीघ्रं च दुर्गमं ह्युच्छ्रितं स्थलम् ॥४॥

निक्रान्तानामथ गुल्मो ह्यभिचक्राम संयुगे ।
न्यनदञ्जयघोषं स मृगेन्द्राणां गणो यथा ॥५॥

धारा-सम्पातवद् वह्निं सच्चिपद् गणमार्गणैः ।
नगाधिपस्य शृङ्गाणि चकम्पु-विरवेण वै ॥६॥

लूपकुचित-कुक्कुर्यः कांदिशीका विपश्चिणः ।
आहृतयोःस्वभुजयोरमिषिक्तोऽसृजापि सः ॥७॥

दाए बाएं वेग के साथ बढ़ने की आज्ञा दी । वीरों की यह टुकड़ी सिंहो के झुण्ड की भांति जयघोष करती हुई, तथा मूसलाधार गोलियों की वर्षा करती हुई बढ़ी । तोपा बन्दूकों की गड़गड़ाहट से पर्वतराज हिमालय की चोटियां कांपने लगी । दुश्मन के सिपाही कूतियों की भांति दुम दबाकर भाग खड़े हुए । जमादार सीताराम के बाहुओं में गोलियां लगी और वे रक्त से सन गईं ।
तथापि उसने पाकिस्थान के झंडे को उखाड़ फैंका और भारत की विजय वैजयन्ती तिरंगध्वज को वहां फहरा दिया । सब वीरों ने

उन्मुमूल ध्वज पाक्य त्रिरगमुदतूतुलद् ।
सर्वै-रुद्घोषित तत्र विजय मारतस्य च ॥८॥
वैजयन्त्याः स्वदेशस्य समीचीनाभिनन्दनम् ।
कृत तत्रोद्भव चित्र विजयोल्लास-मूर्च्छितैः ॥९॥

भारत की विजय घोषणा की और अपनी मातृभूमि की विजय पताका का अभिवादन किया। वहां पर भारत की विजय का उत्सव उल्लास के साथ मनाया गया।

क्षेमकरण युद्धम्

निक्रान्तो रणजीतसिंह-नृपतिः पञ्चाम्बु-देशाधिपः।
स्रोतस्यास्तु तटस्थ-सिञ्चितनर कदारसघर्षितम्।
ग्राम क्षेमकर ददौ सुमनसा दासाय सेवाफलम्।
शत्रोरायुधयन्त्रिणां समुदयष्टैंकैश्च तत्राऽभवत् ॥१॥

पाकयस्थानचमू' पूर्वं व्यूढा सन्नद्धवसायुधा।
शिविर तत्र सस्थाप्य सर्वसन्नहनातुरा ॥२॥

अनीकन्यभिचक्राम पाकस्थानामनलोत्तर।

क्षेमकरण-युद्ध

पजाब के यधोश्वर महाराज रणजीतसिंह ने नहरों के तट पर सींचे गये खेतो वाला बडा खेमकरण गाव अपने सामन्तो को उनकी सेवा के फलस्वरूप प्रदान किया था। वहा शत्रु ने टैंको तथा बख्तरबन्द गाडियो की सेना जमा करदी ॥१॥ पाकिस्तान की यह सेना वहा मोर्चा बाधकर शस्त्रो से समृद्ध (लेस) अपनी छावनी जमाकर बठी थी। वह घमासान युद्ध ठानने को आतुर थी ॥२॥ पाकिस्तानी वह सेना असलत्तोर की ओर चली और

अग्रे सराबभूवैषा वामपर्वेण वेगतः ॥३॥
कृतनेश्र-प्रशाखा सा नासीराहमदेन च ।
कसूरं प्रति शाखैका वाधां प्रत्यपराव्रजत् ॥४॥
अरिणा टैंकनिवहः प्रेषितः सकृदेव हि ।
[1]वृकोदरस्त्यागराज आर्याणां वाहिनीपतिः ॥५॥
विचकारास्मदीयांश्च सांयुगीनस्स कोविदः ।
वेद्धु शक्या यत-स्ते हि नागचै-र्दूरत स्थिताः ॥६॥
गत्वा तु कुञ्चित मार्गं-शस्त्र-प्रक्षेपण-क्षमा. ।
परेषां विग्रहे प्राप्ते योज्ये विक्रमकौशले ॥७॥

बांई ओर से तेजी से आगे बढ़ी ॥३॥ नासिर अहमद ने उसकी दो शाखाएं की। एक कसूर की तरफ दूसरी बाधा की ओर कूच करने लगी ॥४॥ आय सेना का अध्यक्ष ब्रिगेडियर त्यागराज था। दुश्मन ने टैंकों की सेना को एक दम आगे बढ़ाया ॥५॥ युद्ध कुशल त्याग राज ने अपने टैंकों को बिखेर दिया, क्योंकि वे दूर से ही निशाना मार सकें। फिर चक्कर काट कर शस्त्रों से आघात पहुचा सकें। शत्रु से मुठभेड होने पर पराक्रम और कौशल की अपेक्षा

[1] वृकोदर ब्रिगेडियर इति भा भा ।

पराभूतो भग्नैशर्यै-रह्नी सांपरायकैः ।
कृतापदस्थ-नासिर, सपत्नोत्सृष्ट एव हि । ८॥
"हते भीष्मे हते 'द्रोणे कर्णे च विनिपातिते ।
आशा बलवती राजन् शल्यो जेष्यति पाण्डवान्" ॥९॥
मूसा सेनापतौ भग्ने द्रोणेऽल्लाविति सञ्ज्ञके ।
कर्णेऽपि 'सत्यकर्मण्ये 'शल्यो जेष्यति भारतान् ॥१०॥
ईदृश्या निराशैव पाक्यपालस्य सर्वथा ।
अर्थदासाश्च कृपणाः सत्यधर्म-बहिर्मुखाः ॥११॥

होनी है ॥६-७॥ आर्य योद्धाओं ने दो दिन में ही दुश्मन को पछाड़ दिया ।-नासिर को उसके पद से हटा दिया गया । (महाभारत युद्ध में दुर्योधन ने आशा बाँधी थी कि 'भीष्म के मर जाने पर तथा द्रोण के भी मारे जाने पर तथा कर्ण के भी खेत रहने पर शल्य पाण्डवों को जीत लेगा ॥९॥)

१०-११ इस भांति पाकिस्तानाधीशने सोचा कि सेनाधिप मूसा के हारने पर तथा अलिनामक द्रोण के वही गति पाने पर एवं कर्ण के अकर्मण्य होने (अर्थात् हित की बात न सुनने पर भी) शल्य

१ अलिद्रोणी तु वृश्चिके इत्यमर । २ हित वचन ग्रहणे ।
३ लक्षणया सर्वाणि शस्त्राणि ।

मैत्य शल्य कुपात्राय विजयस्तु मरीचिका ।
सत्य विजयते नित्य नानृतं च कदापि हि ॥१२॥

भीष्मद्रोणादयः सर्वे सांयुगीना मनस्विनः ।
वदान्या' शौर्य-सम्पन्नाः सत्यसन्धाऽपराजिता' ॥१३॥

मैत्य-मामेरिकाया स्तच्छल्य-मसमीक्ष्य-कारिणे ।
विपक्षाश्च विपर्यासा जयेहा पयमोलिपिः ॥१४॥

यत्र दुर्योधनः शास्ता स रौदुरशासनस्तथा ।

(अमेरिका द्वारा भिक्षा मे मिले नल्य नस्त्र) भारतीयो को परास्त कर देंगे। इस प्रकार की उसकी प्राशायें निराशा हो थी। पाकिस्तान के ये सेनाधिप पैंस से मालनिये, कायर तथा सत्यधम से विमुख थे। अमेरिका द्वारा भीख म कुपात्र को दिये शस्त्रो के बल पर विजय मृगतृष्णा हो थी। नित्य सत्य की विजय होती है भूठ कपट की कभी नहीं ॥१२॥

भीष्म, द्रोण आदि मनस्वी तथा युद्ध कुशल थे। वे दानवीर शूर, सत्यनिष्ठ थे। वे पराजित होने वाले नहीं थे ॥१३॥

अमेरिका द्वारा भिक्षा में नासमझ भिक्षु को दिया शल्य (शस्त्र) तथा उनको पाने वाला शत्रु दानधम के विपरीत थे। अत जय की इच्छा पानी म लेख के समान निराधार थी ॥१४॥ जहा शासक दुर्योधन

उत्कोचेन जितः शल्यो निपक्षे विजयो ध्रुवः ॥१५॥
असल उत्तर-क्षेमकरण युद्धम्—
मिक्कि विन्द-चिमामार्गे स्काड्न टैंकयन्त्रिणाम् ।
प्रेषित तत्र पाक्येन समालोचन-हेतवे ॥१६॥
दिष्ट्यैक भारतीयाना-ममवद्दृष्टिगोचरम् ।
कृत शरव्य पञ्चत्व निन्ये प्रख्यात पेट्टनम् ॥१७॥
भटमन्या बलाधीशाः मग्नुत्पिञ्जा-स्तदाभवन् ।
अनुमेने स टैंकानां भारतानां कदम्बकम् ॥१८॥

(रण कौशल हीन) हो क्रूर हो तथा शासन के अयोग्य भ्रष्ट हो तथा घूस देकर प्राप्त किये हुए शस्त्र हों उसके विपक्ष की विजय निश्चित है ॥१५॥

असल उत्तर-क्षेमकरण युद्ध—

मिक्कि-चिमा मार्ग पर पाकिस्तान ने टैंकों का एक स्काड्न (स्कन्धावार) भेजा । वह जाच पड़ताल करने आया था। सौभाग्य से भारतीय सेना को वह दृष्टिगोचर हो गया । इसने उसे अपने शस्त्रों का लक्ष्य बनाया, और प्रख्यात पेट्टन टैंको को यमपुरी को भेज दिया । तब शत्रु के वीरताभिमानी सेनानी के होश फाक्ता हो गये। उसने सोचा कि भारत की टैंक-सेना आ गई ॥ १६-१८॥

पाक्य परिकर बद्ध्वा त्यपविष्ट च कौतुकम् ।
अन्तर्दधान तद्देशाद् आर्यो युधि निचयरा ॥१६॥
महाराजाख्य-पन्थान ग्राण्डट्रकति विश्रुतम्।
क्षेमकरणाच्च तत्रापि विस्तर शाखा भवन्ति त ॥२०॥
चीमातो भिक्किविन्दातोऽमृतकासार-स्वतनम् ।
वल्लोहापत्ति-मार्गेण तरन्तारन-गारवैत' ॥२१॥
जन्दियालागुरु प्राप्तु द्वितीया च प्रसर्पति ।
नवीपूर्फतिहाबादा-र्वातक्रम्य तृतीयका ॥२२॥
प्राप्नोति राजमार्गं त निपासावटवर्तिनम् ।
पादात नोऽमिचकाम द्विट्सन्नद्धवृहद्गण ॥२३॥

पाक ने कुछ बडा कौतुक करन का कमर कसी। हमारा कुशल सेनानी वहा से अन्तर्धान हा गया। ग्राण्डट्रक नामक बडे विशाल राजपथ की खेमकरण के पास स तीन शाखाए हो जाती है। एक चीमा तथा भिक्किविंड होती हुई अमृतसर की दूसरी बोलनोहा पत्ति तथा तरनतारन होकर जडियालाको, तीसरी नबी पुर फतेहाबाद होकर व्यास के पास ग्रान्ट्रक से जा मिलती है। हमारी पैदल सेना (पदाति) तथा शत्रु की सशस्त्र ब्रिगेड आगे बढी ॥१६-२३॥

शस्त्राघातपथे यावच्छत्रुचक्र , न प्राप्नुयात् ।
भारता मा स्म सदध्नु सेनानीनां निदेशनम् ॥२४॥
दध्नसु' शत्रुटैंकान्वै टैंका नो गर्तभूमिषु ।
भारती तोपनिवहा श्चक्रु र्घोराग्निवर्षणम् ॥२५॥
पृष्ठतोऽभिक्रमे चेष्टा पाकयस्य विफलीकृता ।
जलालपूरितेनैव ह्यदुम्पःपूरकदध्वना ॥२६॥
यतत्रान् पाकयसेनानी ततः पार्श्वादभिक्रमम् ।
इदानीं भारती शैन्यो यथाकामफलोऽभवत् ॥२७॥

हमारे शस्त्रो की मार के भीतर जब तक शत्रु सेना न आजावे भारत के सेनानियों का निदश था कि गोली न दागी जाय। गढ्हों में जमे हमारे टैंको ने शत्रु सेना के टैंको पर वार किया। उन्होने घोर आग बर्षाई ।।२५। पाक ने पीछे से धावा करने की चेष्टा की परन्तु उसकी एक न चली क्योकि उसके मार्ग म कीच तथा पानी भरा हुआ था। फिर शत्रु ने पसवाडे स आक्रमण करना चाहा। उसकी इस चाल में भारत की मन चाही बात हो गई। शत्रु का उसके हाथ में पड कर हार का मुह देखना पडा। कमल के कोष मे पडा भवरा रात को उसमें कैद हो जाता है उसी प्रकार ईर्षा रूपी रात में पाक भारत के बस में हो गया। र तथा ल

शत्रुः परिमव प्राप तस्य हस्ताऽजकोशगः ।
शाश्वतीर्षा विभावर्यां कोपेऽस्मन्नदुपग्रहः ॥२८॥
अरिस्त्वलिगति प्राप सावण्यद्रिलयो-मिथः ।
चिमासलोचर पेत्र शङ्कवत्पयसावृतम् ॥२६॥
निकसा-रोहि-द्रुन्याभ्यां भुजाभ्यां त्रिभुजम्य वै ।
शत्रुसैन्यस्तत. कृत्स्नो गतो वैवस्वतालयम् ॥३०॥
शङ्कमध्ये स्थितष्टेंका जग्लु र्जम्बालनिग्रहा ।
अब्जस्य 'जनकेनैव टैंकानां निग्रह. कृत' ॥३१॥
पैट्टनूशत प्रदोपप्राक् नष्ट दोपैकर्दाग्द्विप ।

का सावण्य है अत अरि (पाक) अलि (भवरा) बन गया। चिमा-असलोसर क्षेत्र शत्रु की भाति पानी से घिर गया। निकुसा तथा रोही नालो के त्रिकोण से घेरे में लिया गया और शत्रु की सारी सेना यमपुर को चली गई। कीच क ..ड में धस हुए टैंक दुर्गति को प्राप्त हुए। पकज के पिता ने ही उन्हें ब दी बना लिया। स ध्या पडने से पहले दूसरे के दोषा को फिराक म रहने वाले शत्रु के १०० टैंक नष्ट हो गए। शमी तथा निसार दानो सेना ध्यक्ष यमराज के पाहुने हो गए ॥२६-३२॥

१ पकेनैव।

शमीनसीरी सेनान्यौ जग्मतुर्यम-मन्दिरम् ॥३२॥
अरातिलजमार्याणा वीरा मापात्रण-स्तथा ।
वृकोदरस्यागनामा सेनानीनां शिरोमणिः ॥३३॥
सर्वे सुकृतिनः शूरा. श्रेयांस्यर्हन्ति भूयशः ।
यदैवोच्चरति म्लेच्छ शब्द "मारो" हि तत्क्षणम् ॥३४॥
सैनिका मुमुचुर्गोलानञ्जसा वैयजन्तिका. ।
लक्ष्यभेदप्रवीणा स्ते लोके शस्त्रभृता वरा ॥३५॥
उभयो' सैन्ययो सङ्ख्या क्रमादाचख्यते इह ।
पाकस्यास्याप्यधिका ज्ञेयमस्माक जित्वर तत. ॥३६॥

आर्यों का तोपखाना, वमानिक, ब्रिगेडियर (वृकोदर) थाग जो सेनानियो में शिरोमणि थे, धन्यवाद के पात्र हैं, क्यो कि वे सुकृति तथा शूर हैं। उनके मुह स 'मारो' शब्द निकलते ही, अचूक निशाना मारने वाले शस्त्रधारियो में श्रेष्ठ, जयशील वीर सैनिक तत्काल शत्रु को गोली से उडाते थे ॥३३-३५॥

यहा दोनो सेनाओं की सङ्ख्या दी जाती है। पाक की गिनती में अधिक था परन्तु विजयी हमारी अधिक हुई। आकाश-पातालके कुलाबे मिलाने की डींग हाकने वाले पाक के ४५० पेट्टन टैंक एव हमारे सञ्चूरियन् नाम के १०० ही थे। परन्तु हमारे राष्ट्रध्वज

पेट्टना खशराम्रोभि ¹रसपातालैकरकारिण ।
पुष्कराम्बर-शुभ्रांशु -स्थाता ²मचूर्णयाद्विति ॥३७॥
'सत्य विजयते' यस्य वैजयन्त्या प्रकाशन ।
पावयस्य ³राजिमन्त पङ् नस्ततीयांश एव हि ॥३८॥
विपक्षस्य रणे भङ्गो विचित्रं योऽत्रविपश्चिता ।
ध्रुवानीति सदाचारो वीर्यं शौर्यं च धीरता ॥३९॥
विजयश्री स्ततो नित्य प्रमाणे किमपक्षत ।
बहुल' शस्त्रसमारो दात्रामसोद्वरजागिणा ॥४०॥

म "सत्यमेव जयत" घोषित हो रहा है। पाक के छ रेजिमट थे और हमारे केवल २ रेजिमेन्ट थे। ऐसी स्थिति म शत्रु का रण मे परास्त होना युद्ध कुशलो मे ग्राश्चर्य उत्पन्न करना है। जहा ध्रुव नीति, सदाचार, वीर्य शौर्य तथा धीरता हो वहीं विजय लक्ष्मी नित्य रहती है। इसमे प्रमाण को क्या ग्रावश्यकता है। बेसमझ दाता के द्वारा देश काल तथा पात्र के विपरीत दी हुई भिक्षा सवथा तामस थी। इधर ग्रपनी खरी कमाई से मोलनिए शस्त्र ग्रार्यों के पास थे। फिर विशेषता खरी कमाई वाले में था इस

१ ग्राकाश पाताल एक करन वाला। २ Centurian।
३ राजि पंक्ति सहिता राजि म त रेजिमे ट इति ग्रा भा

देशे काले न पात्रे च सैन्य नि.शेषतामसम् ।
आर्याणा शस्त्रसघातः सस्नेदश्च प्रमाजितः ॥४१॥

आहोस्वित् कुत्र वैशिष्ट्य सैन्ये वा स्वश्रमाजिते ।
सेनानीनां स्वसैन्यस्य युद्धकर्मणि प्रत्यय· ॥४२॥

मृषातिशयतां प्राप्तो भारताना-मपेक्षया ।
दिवास्वापस्तु पाक्याना रणे भगस्य कारणम् ॥४३॥

पेट्नसचालने शत्रो नियन्त्रणामयोग्यता ।
दक्षता भारती सैन्ये वर्तते सर्वतोमुखी ॥४४॥

तरह बटोरी हुई भिक्षा म थी ? हमारे सेनानियो म अपनी सना का युद्ध में विश्वास और इधर शत्रु के सिपाहियो में भारतीयो की तुलनाये झूठा बढावा भरा हुआ था । उसी बात का दिन दहाडे का स्वप्न पाक्य के पराभव, का कारण था । पेट्न टैंकों को चलाने म उनकी अयोग्यता थी और भारत के जवानो की रण म सवतोमुखी दक्षता तथा अपन हवाबाज, टैंक चालक, तोपची तथा अमोघ लक्ष्य भेदने वाले वीर-तात्पर्य यह कि अपने अपने कार्यो में सब कुशल थे। दोनो पक्षो की युद्ध में निष्ठा भिन्न २ थी। उसी के अनुकूल उसका फल था। शत्रु का अपने शस्त्रों पर अत्यन्त प्रत्यय था। इधर

मापत्रिणो नियन्तार-स्टेंकानां तोपचालका ।
अमोघलक्ष्यभिद्वीराः स्वे स्वे कर्मणि कोविदा ॥४५॥
उभयोः पक्षयोर्निष्ठा भिन्ना तदनुग फलम् ।
शस्त्र-सभृतमस्मारे द्विपदोऽत्यन्त प्रत्ययः ॥४६॥
भारतस्यात्मबल तद् हृत्कमले दृढ-स्थितम् ।
शात्रवस्यायस' पिण्डे भङ्गुरे प्रत्ययोऽस्थिर. ॥४७॥
ईदृशः प्रत्ययोदातुमित्राणां चापि प्रास्खलत् ।
देशे काले तथा पात्रे युगपच्च प्रतिग्रहे ॥४८॥
भारती वत्सकाष्टेंका अक्रीडन्निक्षुकानने ।
पाक्या वाहद्विपट्टेंका. स्वार्थे जम्बाल-संस्थिता' ॥४६॥

भारतीयो का आत्मबल अपने हृदयो मे दृढ था उधर शत्रु का लोहे के कील काटो पर आधारित था जो क्षणमङ्गुर तथा अस्थिर था। इस तरह के उसके विश्वास ने उसके दाता तथा मित्रो के प्रत्यय को भी हिला दिया। यही हाल देश, काल, पात्र तथा दान को वस्तु का हुआ ॥४८॥

बछडो के समान भारत के टेंक ईख के खेत में खेल कूद करते रहे। उधर पाक के भैंसो के समान टेक कीच म फस गए जो उनके स्वभाव की बात थी। इधर बछडे ईख रस से सतुष्ट थे

इतो मधुप्रियावत्सा-स्ततः पङ्कप्रिया द्विपः ।
दैवी चासुरी सम्पदासीत्पक्ष-विपक्षयोः ॥५०॥
पुण्ड्र क्षेत्रे स्थिताष्टैका इक्षुभिर्भू रिरक्षिताः ।
रक्षये प्रतिसीरायां घाते काचिन्न हीनता ॥५१॥

उधर भैंसे कीचड़ से प्यार करते थे। इस प्रकार हमारे पक्ष तथा विपक्ष की क्रमश दैवी तथा आसुरी सम्पत् थी ॥४६-५०॥

इसके अतिरिक्त ईख-(पौंड) अपने खेत में उसकी रक्षा भी करते थे अर्थात् शत्रु के वार से बचाते थे। परन्तु उनके द्वारा शत्रु पर शस्त्राघात में कोई बाधा नहीं थी।५१॥

अब्दुलहमीद-रतिराम पाण्डयानां शौर्यम्

टैंकानां निवहः पाक्यः सुलभोऽस्त्रनिपातने ।
धारावत्प्राप निष्पत्तिमार्याणाञ्चाप्यभिद्रवः ॥१॥
सव्यापसव्यतश्चक्र मध्ये चापि पुरस्सरम् ।
इत्थमाच्छादितं शत्रोः सैन्यटैंक-कदम्बकम् ॥२॥
भारती-प्रक्रियां दृष्ट्वा न शशाक ह्यनुक्रमम् ।
शौर्यकौशलहीनत्वं तत्र हेतुः सुनिश्चितम् ॥३॥
अब्दुल्ला सहमीद-युद्धनिपुणो जीर्णाधिरूढ स्तव' ।
नाराचैः करगोलकैः प्रहरते टैंका-त्रिपोः साहसी ॥४॥

अब्दुल हमीद, रतिराम पाण्डेय का शौर्य

पाक टैंकों के जमघट पर चोट मारना सुलभ था। अन आर्यों द्वारा उनपर आक्रमण धुआंधार वर्षा की तरह सम्पन्न हुआ। दाए, बाए तथा बीच में आक्रमण कर शत्रु के टैंक समूह पर धावा बोल दिया गया। इस तरह की हमारी चढाई के सामने शत्रु के पैर उखड़ गए। निश्चय ही उनमें युद्ध की कुशलता की हीनता ही इसका कारण था ॥१-३॥ तब युद्ध-कुशल अब्दुलहमीद

इत्थं टैंकचतुष्टयं यममुखे दग्धं हतं वा गतम् ।
आदिष्टः सरितस्तटेऽरि-पृतनां निर्बद्ध-मेवद्रुतम् ॥४॥
अन्यः धीरविराम-नामकवरः ग्रामस्य वीराग्रणी ।
पाण्डेयोऽपि तथैव शौर्य-सहितः प्रत्यर्थिघाते रतः ॥६॥
शत्रोर्गत्यवरोद्ध-मध्वनि महायुद्धे त्र्यहाणि-स्थितः ।
शत्रु नैव गतिं ददौ परिमितां ह्यङ्गुष्ठमात्रां रणे ॥७॥
अमृतं राज-सम्मानं सून्तुतोक्तिरियं स्मृता ।
परेण वीर-चक्रेण समानं, स विभूषितः ॥८॥

जीप में सवार होकर साहस के साथ शत्रु के टैंकों की गोलियों हथ गोलों से शिकार करने लगा। इस तरह उसने चार टैंकों को नष्ट कर दिया या फूंक दिया। उसी समय उसको नदी के तट पर शत्रु की फौज को रोकने का आदेश मिला ॥४५॥

इसी तरह लॅस नायक धीरराम तथा शूर पाण्डेय भी दुश्मन पर वार करने लगे। अब्दुल हमीद उस महायुद्ध में शत्रु को रास्ते में ही तीन दिन तक रोके रहा और उसे एक अंगुल भी आगे बढ़ने नहीं दिया ॥६-७॥ (वह वहीं वीर गति को प्राप्त हुआ) यह सत्य ही कहा गया है कि "राजसम्मान अमृत के समान है।" उसको मान के साथ परमवीरचक्र से विभूषित किया गया।

कर्ण पर्व

वैमानिक पर्व

वैमानिका-चमूः शूरैः सायुगीनैः प्रचालिता।
'नेट-हंटर-सम्बद्धा न्यूना व्याहित-लक्षणा ॥१॥
विक्रान्ता-श्चालका स्तस्या ह्यपूर्व-कृतिनो द्विधा।
अपूर्वः सोऽग्नि-सम्पातो ह्यपूर्वश्च पराक्रमः ॥२।
चतुर्भि-र्हण्टरै-र्यानैः खेमकरण-रणाङ्गणे।
रायविण्डे तथा चेत्रेऽरेरभियान् कृतम् ॥३॥

वैमानिक पर्व, (आर्यों का पराक्रम)

रण चतुर चालकों वाली हमारी नेट हंटर विमानों की छोटीसी सेना भी करामाती है। उसके चालक वीर अपूर्व चतुर हैं। इनका कौशल दुहरा था। एक तो उनका पराक्रम अनुपम तथा मुठभेड़ भी अनुपम थी ॥१-२॥

खेमकरण रणांगण में तथा रायविण्ड में चार हंटर विमानों से शत्रु पर चढ़ाई की गई। हवाबाजों में मुख्य मेनन् उस टुकड़ी के

१ विमान नामानि।

प्लवङ्गानां च ¹लपनो मेननोऽनीकनीपतिः ।
नेगी-खुल्लर-विश्नोयी-विमानाधीश्वरा-स्त्रयः ॥४॥
इतरे ²लपनोपान्त्या नेता ³गुल्मस्य चान्तिमः ।
प्रक्षेपास्त्रैश्च सन्नद्य वह्न्यस्त्रैः ⁴क्षोदगोलकैः ॥५॥
द्विड्देशे डयमान स्ते ददृशू ⁵रैलगन्त्रिकाम् ।
युद्धसभार-सम्पूर्णां शत्रु-सेनार्थ-प्रेषिताम् ॥६॥
रायविण्डे स्थितां ताञ्चाभिजज्ञुः परिपन्थिनः ।

अध्यक्ष थे। विमानों के स्वामी नेगी, खुल्लर तथा बिश्नोई तीन थे। उस स्काड्रन के नेता बिश्नोई थे। प्रक्षेपास्त्र, वह्नि अस्त्र, बारूद गोलों से सजे वे शत्रु के प्रदेश पर उड रहे थे। उन्हें एक रेल नजर पड़ी। उसमें युद्ध का सामान भरा था। वह रायविण्ड में खड़ी थी अत अपने वैमानिको ने उसे शत्रु की तथा उसकी सेना के निमित्त भेजी हुई ताड लिया। वह कसूर की तरफ जाने वाली थी अतः उस समय कोई दूसरी नही हो सकती। इसको ठिकाने लगाना चाहिए यह निर्णय कर उन्होने अपने शस्त्रों का

१ लपनो मुख मुख्यम् । २ लेफ्टिनेन्ट । ३ गुल्म स्काड्रन । ४ क्षोद चूर्णम् (बारूद) ५ राय लक्ष्मी जाति इति रैलम् ।

'कश्मिराभिमुखा काले नान्या भवितुमर्हति ॥७॥
निर्णीता धर्षणार्हा सा शरव्यत्व गता द्रुतम् ।
आरमद् वह्निवर्षं तु विप्र च द्विषदायुधे. ॥८॥
अध्यक्षेण समादिष्टा गता शत्रोः परोक्षताम् ।
मत्वा हि कांदिशीकास्तो यन्त्रीज्ञान-विमोहितान् ॥९॥
आश्वस्तोऽरि यथा भूयान् मनसीत्य विचार्य ते ।
जग्मुः सर्व्यं हि पन्थान जगृहु स्तेऽन्य-वेल्लितम् ॥१०॥
तदा लब्धावकाश-स्ते प्राप्याधिप-निदेशनम् ।
प्रहर्तु-मारभन्नस्त्रै रनोमाला च खे स्थिता. ॥११॥

लक्ष्य उसे बनाया ॥३-७॥

शत्रु की ओर से भी आग बरसाना तुरन्त शुरू किया गया। अध्यक्ष के आदेश पर वे शत्रु की नजर से ओझल हो गये, क्योंकि ऐसा करने में यह अभिप्राय था कि वह समझ लेगा कि ये भाग निकले और इन्हें हमारी इस गाड़ी का पता नहीं है ॥८-९॥

इस तरह दुश्मन को ढाढस बन्ध जायगा । यह विचार कर वे बाईं तरफ हट गये और चक्कर काटकर अपने नायक की आज्ञा पाकर आकाश से ही उस ट्रेन पर वार करने लगे ॥१०-११॥

१ नगरस्य नाम अपरायश्च ऊर्दू भाषायाम् ।

सपत्नः पुनरारेमे ततो ज्वलनवर्षणम् ।
तथापि मेननः शूरो राकेट संदधान वै ॥१२॥
[1]त्र्यणसः मध्यभाग हि प्रैरिरत्कृष्णवर्त्मनि ।
खुल्लरः स्फोटयां-चक्रे तस्य चानलग्न तदा ॥१३॥
शेषं हुतं च शेषाभ्यां सर्वं निश्शेषतां गतम् ।
धर्मयुद्धमिदं मत्वा वह्निदेवाय तुष्टये ॥१४॥
ॐ शतायुधाय शतवीर्याय शतोतये अभिमातिषाहे
शतं यो नः शरदो जीजावेन्द्रो नेषदति स्वाहा "

दुश्मन ने भी फिर आग बरसानी शुरू कर दी। तो भी शूर मेनन ने राकेट छोड़ा। उससे ट्रेन का आधा भाग आग में झोंक दिया गया। तभी खुल्लर ने गाड़ी के मध्य भाग पर धमाका कर दिया। बाकी को दूसरों ने उड़ा दिया। इस तरह से सारी गाड़ी निश्शेष (जड़ से साफ) हो गई। इसे धर्म युद्ध समझ कर मन्त्र पढ़ कर उन्होंने अग्निदेव के लिए स्वाहा कर दिया। समर्पण करते हुए 'यह उसी देवता को समर्पित करता हूँ। मेरा इस में कुछ भी नहीं।' यह भी कहा कि 'शत्रु का भी इस में कुछ नहीं, क्योंकि यह अमेरिका से मिला हुआ दान का द्रव्य है" ॥१२-१४॥

१ त्रयाणां अनसां समाहार त्र्यणम् ट्रेन इति भा भा ।

इति मन्त्र पठित्वा अग्नये स्वाहा इद-मग्नये न मम इति व्याजह्नुः पुनश्च ऊचुः इदं नं शत्रोः कथमति अमेरिकाया वदान्याया मैत्रत्वात् ।

इति रैल व्यणसो धर्षय नाम प्रथमोध्यायः समाप्त. ।

इति रेलगाड़ी को दबोचने की पहलो अध्याय समाप्त ।

अथ द्वितीयोऽध्याय

अपूर्वं चेष्टित कृत्वा कसूर तु परापतत् ।
ददर्श रेणुकामेघ सञ्चरन्त ततः पथि ॥१॥
अनुमीयन्ते स्म चक्र ते शत्रो ष्टॅकं-समन्वितम् ।
सन्नद्ध-गन्त्रिभिः साक शस्त्रास्त्रैश्च सुसज्जितम् ॥२॥
तां दिश गमनार्थं च प्रादिशन्मेननः सुधीः ।
पथ्येकस्मि-न्ननेकार्याः सिद्ध्यन्ते युगपद्यदा ॥३॥
समयस्य परित्यागो हेया ह्यनवधानता ।
दृग्गोचरेषु तेष्वेव प्रत्यनीकाग्नि-वर्षणम् ॥४॥

द्वितीय अध्याय

वे अपूर्व करतब करके कसूर की तरफ लपके। वहा मार्ग में धूल के बादलो को उडते देखा, तो उन्होने अनुमान लगा लिया कि टैंकों, बख्तर बन्द गाडियो, तथा शस्त्रास्त्र से लैस शत्रु की सेना आ रही है ॥१-२॥ बुद्धिमान् मेनन ने अपने साथियो को उधर ही बढने का आदेश दिया। इसमें एक पन्थ दो काज की कहावत चरितार्थ हो जायगी, अत मौका चूकना और असावधानी करना बुरी बात है। उनके नजर पडते ही शत्रु ने आग बरसानी प्रारम्भ

समारभद्विपचः स नियद्यान-विभेदनम् ।
आर्य-धीरा अनिर्वेदा॰ कार्य-सम्पादनक्षमाः ॥५॥
मेननः खुल्लडो वीरौ करेदुरिन रेकटान् ।
मुञ्चन्त स्मारि-टैंकानामायुधानां कदम्बके ॥६॥
एकैक-स्तु विदघ्नसे टैंकानि त्रीणि त्रीणि च ।
त्रयो धीरा स्तदा शत्रो-र्गन्त्र्युच्छेद विचेष्टिरे ॥७॥
अग्न्यस्त्रै॰ प्राहरन्तश्च ज्वलनतुमिता द्रुतम् ।
चिच्छेद फुल्लरोऽप्येक पुनष्टैंक ततोऽधिकम् ॥८॥

कर दी। उसकी विमान भेदी तोपें चलने लगी। भारती आर्य वीर धीर तथा न घबराने वाले अपने कार्य की सिद्धि मे तत्पर थे ॥३-५॥

मेनन तथा खुल्लर वीर ने रेकट छोडने शुरू किए और उनका लक्ष्य शत्रु के टेको तथा दूसरे शस्त्रो को बनाया। उनमे से एक एक ने क्रमश तीन तीन टैंको को ध्वस्त किया। फिर उन तीनो वीरों ने शत्रु की गाडियो के टुकडे करने की चेष्टा की और गोलो से ६३ को समाप्त कर दिया। और खुल्लर ने एक और टैंक का काम तमाम कर दिया ॥६-८॥ इस तरह उन्होने शत्रु बल को हीन बल कर दिया। शस्त्रो से घायल होकर शत्रु के जवान,

इत्य शत्रुबल शूरैः कृत हीनबल तदा ।
विद्रुत चायुधैश्छिन्न एडकाश्च वृकैरिव ॥६॥
आर्य वीरैः कृत सर्वं रिपोर्मोघ कुचेष्टितम् ।
पृतनायुधसभार भारताक्रमणाय वै ॥१०॥
क्षेमकर्णे प्रचक्रस्य सर्वस्वामी-दनुप्लवः ।
हीनता [1]पत्रतैलस्य-शत्रोः प्रहरणापदम् ॥११॥
निराकृतानि सर्वाणि धीरतालाघवादिभिः ।
सांयुगीनै रार्य-वीरै र्मेनन्नेग्यादिभिः सकृत् ॥१२॥
इति शत्रुसैन्यानुप्लव विध्वसन नाम द्वितीयोऽध्यायः समाप्तः ।

भेड़ियों से जैसे मेमने भागते हैं, वैसे चम्पत होने लगे। इस तरह आर्य वीरों ने शत्रु की सेना, शस्त्रास्त्र आदि जो उसने भारत पर आक्रमण करने को सजोये थे, उन सब को व्यथ कर दिया ॥६-१०॥

क्षेमकरण में शत्रु द्वारा चढ़ाई, उसकी सेना तथा सहायको, शस्त्रास्त्रों द्वारा सकट और अपने पास पेट्रोल की कमी आदि सब बाधाओं को, युद्ध कुशल मेनन नेगी आदि वीरो ने अपनी धीरता तथा लाघव से निबटा दिया ॥११ १२॥

इति शत्रु-सेना को सहायता विध्वस नामक द्वितीय अध्याय।

---

[1] पत्रं वाहन तत्प्रेरक तैल पत्रतैल पेट्रोल इति भा भा ।

अथ तृतीयोध्याय.

चयः क्षेमकर्णे कृतः शत्रुणा यो बृहच्छस्त्रसन्दोह टैंकादियुक्त ।
परेद्यु प्रचक्र मवेदुमारपूर्ण बल नो विपन्न न भूयात्कदाचित् ।
विचार्येति सेनाधिपैः पूर्वमेव सहायश्च तस्याध्वमध्ये प्रकर्तुम् ।
भवन्तः समर्था सपर्याञ्च कर्तुं सपाद्यार्घयुक्तां वय

चापिशेप म् ॥१॥

भुजङ्गप्रयातार्यवीरा द्विजिह्वान् गतान्पिल्लरन्ध्रे विले जिह्मगान् चै
विपक्षोरसूजन्तोनिपूय द्रुत तान्यशोनैजयन्तीं

प्रतिष्ठापयन्तः ॥२॥

तृतीय अध्याय

शत्रु ने क्षेमकरण क्षेत्र मे शस्त्रो का भण्डार तथा टैंको का बड़ा भारी सचय किया है, और कल हो उसके द्वारा बलपूर्वक आक्रमण हो जाय और हमारी सेना विपत्ति में पड़ जाय, ऐसा विचार कर हमारे सेनापतियों ने निर्णय किया कि पहले ही से रास्ते में ही अपनी सेना की सहायता की जाय ताकि शत्रु की पाद्य अर्घ्य पूर्वक अच्छी सपर्या की जा सके। १–२॥

यूय विक्रान्त पुरुषाः कृतिनः सवगर्षभाः ।
शुभा वः सन्तु पन्थानो व्रजतोघपितु रिपुम् ॥३॥
सर्वसन्नद्धन कर्तुं परपक्षोऽपि तत्परः ।
बहुसख्यानि टैंकानि चिनुते स्मायुधानि च ॥४॥
अपेक्षते स्म पृतना विमानाना सुचालिताम् ।
टैंकव्यूह सपत्नस्य छेतु च परिपेषणे ॥५॥
चत्वारो हटरा याना विरनोयादि–नियन्त्रिताः ।
अयोन्ये सचिवा स्तेषां दक्षिणस्याः सुलक्षणाः ॥६॥

आर्य वीरो ने सर्प की चालसे पेट के बल चलकर शत्रु रूप सापो (झूठ बोलने वाले चुगलों) को पिल्लवक्ष रूपी बिलो में छिपो को जहरीली मार दे कर अपनी विजय पताका फहराई ॥३॥

अपने वीरों को विदा देते हुए उनसे कहा गया कि "आप शूर वीर कर्म निष्ठ योग्य उड़ाकू हो। शत्रु को दबोच ने के निमित्त विदा होते हुए आपका मार्ग शुभ हो। दूसरा पक्ष भी भीषण युद्ध करने का तत्पर है। इसीलिए उसने बड़ी सख्या में शस्त्रास्त्र तथा टैंक सजोए हैं। इसलिए हमारी ओर से अच्छे चलते हुए विमानों की हमारी पृतना (स्काड्रन) चाहिए ताकि वे शत्रु के टैंक समूह को तोड फोड कर धराशायी करदें ॥४-६॥

वह्निरपे मयाक्रान्तेऽप्युद्गलिते समन्तत. ।
सन्नद्धै गन्त्रिमि माद्धं दिक्टैंका-यपूदयन् ॥७॥
खाद्यायुध-सुमारास्ता विनष्टाः सकृदव तैं ।
सम्पादयन्तेस्म कार्यं वह्निकान्ता–स्ते पतत्रिणः ॥८॥
अस्त्राहतापसव्यांस. सांयुगीनः परुल्कर ।
अनुद्विग्नमना–शूरः पृतनेशस्तु चिन्तित ॥६॥
पत्रतैलाशये ग्रस्तः वतिना शर्मणो रथ. ।
तथापि न स विज्ञप्तो नेतुरुद्वेगजो यतः ॥१०॥
चतजेनाभिषिक्तांसो महाबाहु' परुल्कर ।

विश्नोई आदि द्वारा चालित हमारे चार हटर विमान, तथा दूसरे उनके सहायक योग्य सारथि चले। भयावह आग की वर्षा के सामने जो चारा ओर से झोकी जा रही थी और बख्तर ब द गाडियां भी थी, तब भी उन्होने दश टैंकों का सफाया कर दिया। और रसद से ठसाठस भरी गाडी को उन वीरों ने एक ही झपाटे में नष्ट कर दिया ॥७–६॥

युद्ध कुशल परुल्कर के दाहिने कधे पर गोली लगी। वह धीर वीर तो घबराया नही पर तु सेनानी को चि ता हो गई। शर्मा के यान की पेट्रोल की टकी में छेद हो गया पर तु नेता को उद्वेग

वैलाषचययान तच्छर्मणो विपदस्तटे ॥११॥
स्थितप्रज्ञा अनुद्विग्ना विजयोल्लास–मूर्च्छिताः ।
विष्णु–र्यथा यातुधानान्धर्षयित्वा–रिपोर्बलम् ॥१२॥
सर्वे प्रफुल्लवदनाः प्रहसन्तोऽवातरञ्च विष्णुपदात् ।
मित्राणां प्रहर्षाय सर्वंसहां वीरप्रसू जन्मभुवम् ॥१३॥
चरित विक्रम शक्यो वक्तु न कोपि कोविद–स्तेषाम् ।
न चापि परमानन्द सुहृदां सुकृतिनां निर्वृ तागमनात् ॥१४॥

न हो इसलिए उसको यह बात नहीं बतलाई गई ॥१०–११॥

महाबाहु पद्माकर का कधा लोहूलुहान हो गया और शर्मा का यान पेट्रोल से खाली हो जाने की विपदा में फसा था। परन्तु वे तो अपनी विजय के उल्लास में थे, अत उनका दिमाग ठीक ठिकाने रहा और उद्वेग उनके पास नही फटक रहा था। विष्णु जैसे राक्षसो का सहार करते थे उन्होंने शत्रु की सेना को कुचल डाला। वे सब विष्णु पद (आकाश) से हसते २ प्रसन्नमुख अपने मित्रों को हर्षित करते हुए सब कुछ सहने वाली, वीर जननी जन्मभूमि पर उतर आए। न तो कोई भी विद्वान् इनके वीरतापूर्ण चरित्र को वर्णन करने को, और न ही ऐसे सुकृतियो के निरापद लौट आने पर उनके मित्रों के परमानन्द को, वर्णन करने को समर्थ हैं ॥१२–१४॥

वाणर्त्वंकशशांकेन्दे प्रयिते क्रिष्टहायने ।
दिन च नवमे नाम्ना मासे श्वेताम्बरे तथा ॥१५॥
पावयस्य वायुयानानां पादैक विलय गतम् ।
विज्ञप्त सुविज्ञैस्तत्र पाश्चात्यै-रणकोविदैः ॥१६॥
मारतीयै-वियद्यानैः खे समित्याग्रुपक्रमे ।
विध्वस्ताः पेट्टनाः शत्रो-रब्धिचन्द्रमिता ततः ॥१७॥
शस्त्र सन्नद्ध शकटा' शून्य-सागर-सख्यका' ।
पापविध्वस्त-मिदुद्राव कलैकुण्डाऽखनूर के ॥१८॥

९ सितम्बर १९६५ को पाश्चात्य रणपण्डितो ने विज्ञापन कर दिया कि पावय विमानो का चतुर्थांश नष्ट हो गया। इस विज्ञप्ति से अधिक चाहे हानि न भी हुई हो परन्तु यह अनुमान यथार्थ है। मुठभेड़ के श्रीगणेश में ही भारतीय विमानों ने १४ पट्टन टैको का काम तमाम कर दिया, तथा ४० से अधिक शस्त्रो से लैस गाड़ियों को ठिकाने लगा दिया।

पाकिस्तान के हवाबाजो ने कलाईकुण्डा और अखनूर पर चार चार बम्ब वर्षक विमानों ने हमला किया और चार विमान ही हलवाड़ा पर आधमके। हलवाड़ा पर उन्होने सबसे ज्यादा बम

चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च विमानैर्वम्बवर्षकैः ।
चत्वारोऽपि विमानाश्च हवबाजैः समागता ॥१९॥
सर्वाधिक बमासार कृत तत्र विपश्चिता ।
मारुतैः सवगैः सर्वे कृतान्त-शरणाः कृताः ॥२०॥
हीनावहीन गगन घर्षणात्मरक्षणम् ।
पत्रतैलापचयन भूरुहोच्च दिगन्तरम् । २१॥
विपदोऽपि सन्निकृष्टा दिष्ट्या धात्रा सुरक्षिताः

बरसाए। इन सारे विमानों को हमारे हवाबाजों ने, यमराज के घर भेज दिया।

आकाश में झपाटे से ऊपर चढना फिर नीचे लपकना, शत्रु को चोट मारना और अपना बचाव करना, वृक्षो की चोटी जितनी ऊचाई पर उडना, पेट्रोल की कमी ये सब आपत्तिया घेरे हुए थीं परन्तु प्रसन्नता की बात है कि भगवान् ने इनकी रक्षा की ॥१९ २१३॥

अथ चतुर्थोऽध्यायः

भारतीये वियद्‌याने इयाने श्रीपुर प्रति ।
आततायीव मेहतां बलवन्त जघान य' ॥१॥
पौर च स्वबल शिष्ट दुष्कृते कृतवान् रति' ।
स साध्वस नियन्ता सौ मन्त्रिण शवसञ्ज्ञकम् ॥२॥
तज्जेट चाभिदुद्राव, जेतु नो हेलिकोप्तरम् ।
हेलाकप्तरयन्त्वा च विक्रान्त. सुवगर्षभः ॥३॥
हेला-कसरयानं तद्‌धेलया सोऽस्तुपदुद्यधः ।
शत्रूणा तन्न शक्य स्यात्प्रहर्तुं मनिलांगणे ॥४॥

चतुर्थोध्याय

श्रीनगर को जाते हुए बलवन्त मेहता की जिस आततायी ने हत्या की और भारतीय विमान में उस असहाय नागरिक शिष्ट व्यक्ति पर अत्याचार किया उसी सेबरजेट के विजयाभिमानी ने हमारे हलीकोप्टर पर भी आक्रमण किया। यह वीर हवाबाजों में श्रेष्ठ खेलखेल मे ही आसानी से नीचे सरक गया। वहा हवाई अड्डे पर शत्रु का वह विमान उस पर आक्रमण नही कर सका

सायु गीनार्यवीरः स तले स्वस्थो ह्यवातरत् ।
कृती कृत्वा रिपोर्मोघ दुष्कृत्य समरांगणे ॥५॥
चकारांगुष्ठनिर्देश तस्यानल्पत्रपाकरम् ।
महिष्यवकलनयो' श्रेष्ठ चिन्त्य विपश्चिता ॥६॥
इति शत्रोरभिभवोनाम चतुर्थोध्यायः समाप्तः ।

और अपना हवाबाज पृथ्वी पर स्वस्थ उतर आया । इस प्रकार युद्ध स्थल में शत्रु के दुष्कर्म को व्यथ कर दिया और उस निर्लज्ज को अगूठा दिखा दिया। अकल बडी या भैंस की कहावत पर पण्डित विचार करलें ॥१-६॥

इति शत्रु के पराभव की चौथो अध्याय।

अथ पंचमोऽध्यायः

मरुयानानि चत्वारि मिष्टीयर्सञ्ज्ञानि च ।
आत्मनः सैन्य साहाय्ये समित्या-खोयडाक्षेत्रे ॥१॥
प्रेषिते स्म सुरक्षार्थं तेषां चत्वारि वै पुनः ।
तद्गणस्य च नेतणा नेता डीजल कीलरः ॥२॥
माया-देवश्च कपिलो-रायस्तस्य सहायका ।
प्राप्त-क्षेत्रा हि यावत्ते वह्निवर्षं समारमन् ॥३॥
द्विषः सेवरजेटानि ह्यपश्यद् वामदेवकम् ।
तान्यभिक्रमयानानि सोऽमन्यन्निपुणो बुधः ॥४॥

पाचवाँ अध्याय

मिष्टीयर्स नाम के चार विमान खोयण्डा क्षेत्र मे युद्धार्थ गई अपनी सेना की सहायता को, तथा उनकी सुरक्षा को फिर चार और भेजे गये । उस गण का नेता डीजल कीलर था ॥१ २॥ उसके सहायक माया देव, कपिल तथा राय थे । उनके रणक्षेत्र मे पहुचते ही गोलियों की वर्षा होने लगी । शत्रु के सेवर जेटों ने वाम देव को देखा । परन्तु उस बुद्धिमान ने उसकी कुछ परवाह न की । कपिल

यथादिष्टस्तु कपिलो ललक्षे निकटस्थितम् ।
समयं प्राप्य शूरः स नाराचं सदधे द्रुतम् ॥५॥
सुयन्त तत्पुनर्लक्ष्यं प्रक्षेपणस्य कृतं ततः ।
कवलं चित्रभानो-स्तद् सत्वरं पञ्चतां गतः ॥६॥
अपतत्कीलरं सहसाकरो-ज्जेट धराशियम् ।
स्वयं च कीलरो प्राप भूरुहोत्सेध-भूमिकाम् ॥७॥
सन्निकृष्टोऽपि विपदः विधात्रा परिरक्षितः ।
प्राप वालान्तरक्षेमं न च वालोऽपिकुंचितः ॥८॥

की जैसी आज्ञा हुई उसने अपने पास वाले पर लक्ष्य बांधा और मौका पाते ही गोली दागदी। उड़ते उड़ते ही उसको प्रक्षेपणास्त्र का निशाना बनाया। तत्र वह विमान आग का कवल होकर शीघ्र पञ्चत्व को पहुंच गया ॥३-६॥ पड़ते हुए उसपर कीलर ने वार कर उसे धराशायी कर दिया । ऐसा करने में स्वयं कीलर पेड़ों की ऊंचाई तक नीचे आ गया था। किसी से टकराने के संकट में आ जाने पर भी भगवान् ने उसकी रक्षा की। वह बाल बाल बचा और उसका बाल भी बांका नहीं हुआ ॥७-८॥ इतनी सी ऊंचाई पर ही आकाश में मुठभेड़ हो गई परन्तु जो होनहार

प्रांशावादरि गगने बभूव प्रविदारणम् ।
भवितव्य मन्यते स्म कीलरेण प्रमाणितम् ॥९॥
यूय वैमानिका वीरा मरुदक-विहारिणः ।
वशजा वायुपुत्रस्य धीराश्च सुरगर्पमाः ॥१०॥
महावीरोऽनशद्वीपे पालिते निकषात्मजैः ।
लकायाश्च विमानानि लांगूलज्वलनेन वै ॥११॥
यूयं जुहुत शत्रूणा मरुन्मित्राय तत्क्षणम् ।
एव स बबुधे नेता कीलर, सहकारिणान् ॥१२

इति पचमोऽध्याय॰

है वही होता है, यह कीलर ने सिद्ध कर दिया ॥९॥

आप वैमानिक वीर वायु की गोद में बिहार करने वाले हैं। पवन कुमार मारुति के वशज है। धीर उदात्त हैं। महावीर जी ने राक्षसो की लका मे अपनी पूछ से विमानो (ऊचे २ महलो) को भस्म कर दिया। आप लोगो ने वायु के मित्र (अग्नि) में शत्रु के विमानों को हवन कर दिया। यह कह कर उनके नेता कीलर ने अपने सहकारियों को सबोधित किया ॥१०-१२॥

बाढमेरु क्षेत्रे पाक्याक्रमणम्

बाढमेरावभिक्रान्ते सर्वसन्नहनारिणा ।
लपनान्त्यो हुकुमसिंहो जगामाभिमुख रिपोः ॥१॥

अथात्पञ्चदश क्रोशाञ्छत्रु देशान्तरे द्रुतम् ।
पृतना सा रिपोस्तस्य वार–वार–मभिद्रुता । २॥

तस्या जवगति रोद्धु नाशकच्छत्रु वाहिनी ।
तत ष्टैंकयुतो गुल्म' सप्तमा–क्रमणान्तरम् ॥३॥

बाढमेर पर पाकिस्तान का आक्रमण

जब शत्रु ने जोर शोर से बाढमेर पर आक्रमण किया तब लेफ्टिनै ट हुक्मसिंह उससे लोहा लेने को आगे बढे। शत्रु–देश के भीतर १५ कोस वे तुरन्त घुस गये। उनकी टुकडी पर शत्रु ने बार बार वार किया परन्तु उसको शीघ्र गति को शत्रु न रोक सका। शत्रु द्वारा किये सात आक्रमण जब इस प्रकार निष्फल हो गये, तो उसने भारतीय सेना को रोकने के उद्देश्य से अपने टैंकों की टुकडी को रण क्षेत्र की ओर बढाया ॥१ ३॥ आर्य सेना भी उसको मुहतोड जवाब देने के लिए अग्रसर हुई। तब वहा तुमु

प्रतिकर्तु हठात्प्राप्तो हिन्द-सैन्येन चाङ्गणे।
आर्याणां पृतना ताव-त्स्वावरत्प्रतिबले सति ॥४॥
सघर्षे तुमुल तत्र वरिष्ठ चेष्टित च नः।
साहस शौर्यधैर्ये च वलविन्यासमर्पणे ॥५॥
प्रेक्षका राष्ट्रसघस्य प्रशंसन्ति स्म ते हठात्।
पाक्यानां प्रलापेन प्रेक्षका निस्मयाकुलाः ॥६॥
तत्तु तेषामभूत्तत्र सखेद श्रुति गोचरम्।
प्रेक्षकाः पूर्णत आप्ता रणकौशल-कोविदा. ।७॥
जोधपुरो-बाढमेरु-गढरा धमनी-शिरा।

सघर्ष से मुठभेड हुई। पर तु हि द सेना का ऊपर का हाथ रहा। राष्ट्र सघ के निरीक्षिकों ने भारतीय साहस, शौर्य, तथा कौशल, मोर्चा ब दी (व्यूह रचना) को देखकर हठात् उसकी प्रशसा की।

पाकिस्तानियो ने जो बडी बडी डीगे हाकी उनसे निरीक्षको को आश्चय होना स्वाभाविक था। उ होने जो भाव प्रकट किये उसको सुनकर सब को खेद हुआ। निरीक्षक लोग साधारण व्यक्ति नही थे। वे पूण विश्वसनीय तथा रण कुशल थे ॥४-७॥

देश रक्षा की दृष्टि से जोधपुर बाढमेर गडरा जीवन नाडी है,

[1]रैल-पङ्क्त्या प्रदेशेस्मिन् देशरक्षानिमित्ततः ॥८॥
आक्रमो व्योमयानानां [2]घुष्पेठानामुपद्रवम् ।
अरिष्टः [3]पचमांगीना सर्वमेकत्र सहितम् ॥९॥
सस्थाने व्योमयानानां-भक्तकोठ्य पकएठके ।
पक्षावधि यम्बवृष्टि-नोशकृत्तदमिक्रमम् ॥१०॥
आसनस्याग्रिमस्थाने हिन्दिना निग्रहः कृतः ।
प्रतापी रैलयन्ताऽसौ सति बम्बाधिवर्षणे ॥११॥

देश रक्षा की दृष्टि से जोधपुर बाढमेर गडरा जीवन नाडी है, जो रेल लाइन के रूप मे इसको जोडती है। इस पर विमानों द्वारा आक्रमण, घुसपेठियों का उपद्रव, पचमागियों की करतूतें सब एक साथ इकट्ठी हो गई । भगत की कोठी के पास हवाई जहाज के अड्डे पर एक पखवाडे भर बम्ब बरसते रहे ॥९ १०॥ शत्रु के अगले मोर्चे को हिन्द सेना ने डाट लिया। भारतीय रैल के ड्राइवर ने बम्बों की बौछारों के होते हुए, अपनी ट्रेन को स्टेशन पर

१ रैल पङ्क्ति – रेलवे लाइन । २ घुसपेठिया । ३ प्राणाना पञ्च-मोऽपान वायु तद्वत् अगेष्याप्त अनिष्ट कर अत एव देशवाशी देश द्रोही परपक्ष ।

सामग्री–वाहन श्रेण कुशल ह्यनयत्स्थलम् ।
शस्त्राहतोऽपि वीरः स यावत् सप्राप्त–मूच्छितम् ।।१२।।
बम्बासारेऽपि घोरेऽस्मिञ्चेतनरामो निरीक्षकः ।
कर्तव्यनिष्ठितः शूरः स्वकार्ये स समापतत् ।।१३।।
प्रध्वस्तां रैल–पङ्क्तिं च स्थानाधिप–मिहिर्मलः ।
पद्भ्यामामार्गयत्स्थान पञ्चक्रोशाम् शुशोध ताम् ।।१४।।
सर्वशो विकटा भूमी रेणुकूटसमाकुला ।
निरस्तपादपा चैव निर्जला निर्जना तथा ।।१५।।

पहुचा दिया। यद्यपि उसको गोली लग गई थी परन्तु गाडी को स्टेशन पहुचा कर ही वह मूच्छित हुआ ।।८ १२।। बम्बो की मूसला॰ धार वर्षा में भी ट्रेन का निरीक्षक चेतनराम अपने कतव्य से विचलित नही हुआ । उस शूर वीर ने अपना काय सम्पूर्ण करने के पीछे ही विश्राम किया। बम्बा की मारसे जगह जगह टूटी रेल की पटरी को स्टेशन मास्टर मिहिरमल ने पाच कोश तक पैदल चलकर उसको उसी वक्त सुधराया ।।१३ १४।। वेलू के धोरो से भरी, वृक्षों से रहित, निजल तथा निजन, साराश कि सब भांति विकट भूमि जो ६४१ मील लम्बी भारत पाक सीमा है, वह वीरवर

चन्द्र वेदरसान्दीघो सीमा क्रोशार्द्ध-समिता ।
दुर्गादासस्य जनिभू र्दुर्गा दुर्गोभिरचिता ॥१६॥
स्तन धयन्ती मधुरलपन्ती निजाङ्कमध्येऽपि च दोलयन्ती ।
श्रुतौ सुवीरा जननी गृहेषु शुभोपदेश पृथुकान् गृणति ॥१७॥
यथा भाषायाम्—
इला न देणी आपणी, हालरिया हुलराय ।
पूत सिखावे पालणे मरणबडाई माय ॥
अन्यच्च— जननी जणे एहा जण जेड़ा दुर्गादास ।
मार मडासो थांपियो विनयमा आकास ॥

दुर्गादास राठौर की जन्म भूमि है, वह दुर्ग है और महादेवी दुर्गा उसकी रक्षा करती है ॥१५ १६॥

इस वीर भूमि की वीरांगनाएं अपनी गोद में अपने बच्चो को स्तन्य पिलाती, हुलराती उनके कानों में मधुर आलाप से शिक्षा देती हैं, जो ऊपर वर्णित है ।

शल्य पर्व

हाजी–पीर द्वार धर्षणम्

हाजी–पीराद्रिशिखर सांयुगीन स्थल महत् ।
उपक्रमे सुरक्षाया देशस्यावश्यक परम् ॥१॥
चीनपाकयाभिसन्ध्यां वै भारतवर्षस्य मम तत् ।
समादिष्टोऽधिकर्तुं दयालु–भीरवो भट' ॥२॥
लपनान्त्य' कन्यनरः स सिंहो रणजित्वरः ।
आगन्तुकामा–धृष्टाना–अवष्टम्भो विपाचिण. ॥३॥

हाजी–पीर दर्रे को दबोचना

हाजी–पीर नाम के पर्वत का शिखर युद्ध की दृष्टि से देश की सुरक्षा के लिये बड़ा आवश्यक स्थल है ।१॥ चीन तथा पाक की अभिसन्धि (दुष्टतापूर्ण गठबन्धन) में भारत के लिए यह मर्म स्थान है। भारत के दयालु नाम वीर को इस कब्ज में करने का आदेश हुआ।२॥ जो रणमें विजयी लेफ्टिनेन्ट कनल था वह दर्रा भारत में चुपके छिपे घुसकर उपद्रव करने वाले घुसपैठिये शत्रुओं के लिये

नमोऽन्तरिक्षसेनानी-नसु-सरुयस्फुटैमितम् ।
सैन्यायुध-सुमन्नद्ध उच्चै यदि.पतेः स्तलात् ॥४॥
तद् र्ग-लङ घनात्पूर्वं लोप्त्र वेदोर-साखयोः ।
आवश्यक पर मत्वा तयो-र्बाह्वो-र्द्वयोरिव ॥५॥
प्रमुखाक्रमण तस्य दुस्कर मन्यते बुधैः ।
एकतम तयोर्बाह्वोः सेनानी वृणुतेस्म तत् ॥६॥
अतो दयालुश्चकाम सांखमुत्साह-पूर्वकम् ।
तद्दोषां तत्स्यल लोप्तु ममिप्रे त दयालुना ॥७॥

अवष्टम्भ था । समुद्रतल से ८६०० फुट ऊ चा यह स्थल सेना तथा आयुधों से सम्पन्न था । इस किले की विजय के पहले वेदोर तथा साख को कब्जे में करना परम आवश्यक था क्योकि ये दोनो उसकी दो भुजाओं के समान हैं । समझदार लोग इस पर सीधा आक्रमण कठिन मानते हैं । इसलिये इनमें से एक भुजा को जीतना सेनानी ने पहले चुना । अत दयालु ने साख पर आक्रमण उत्साह पूवक प्रारम्भ किया । उसने उसको उसी रात दबोचना ठीक समझा ॥७॥ परन्तु नत्रु की ओर से घोर आग वर्षा की गई । अत थोड़ा विश्राम करके सवेरे ही उस स्थान को उसने 'हथिया लिया ॥८॥

पर दुर्धर्षदहनागार शत्रोः सुदुष्करम् ।
विरामादनु प्रत्यूषे स निवेद स्थलं दृढम् ॥८॥
सारभूत ततः सारं जग्राहाचिरेण च ।
लाडवाली तत स्थान हैदराबादनालकम् ॥९॥
क्रमेणैव निर्जित्यैन-मग्रे लक्ष्य प्रचक्रमे ।
ततः सा हिन्द-पृतना प्राप वै भीषण स्थलम् ॥१०॥
सहस्राणां चतुर्णां वै स्फुगनामधिरोहणम् ।
सपत्नकृत-प्राचीर सुरक्षाया अशेषत ॥११॥

जल्दी ही युद्ध के सार नामक मोर्चे को भी उसने दबोच लिया। तथा फिर लाडवाली और हैदराबाद नाले को भी क्रम से जीत लिया। इस तरह लगातार विजय करते हुए उसने अपना आगे का लक्ष्य बांधा। फिर हिन्द सेना भीषण स्थान पर पहुंची। वहां से ४००० फुट ऊपर चढाई थी और वहां सब तरफ सुरक्षा की दीवार बना रखी थी। उसको पार करने पर शत्रु से मुठभेड, उसको दबाना और मौत के घाट उतारना था। इधर रात का समय, पानी बरस रहा था पहाड की चढाई, तथा विकट रास्ता था ॥११॥ भेडों के चलने की पगडण्डी से वह वीर आगे बढा। थोडी सी टुकडी को पीछे छोडकर वह एक दूसरे पहाड पर चढा

आयोघन द्विप. पश्चाद् घर्षण च निवहणम् ।
जलवर्षे निशीथिन्या पर्वते च कदध्वनि ॥१२॥

अग्रेमरा बभूरा-साविडका-चालिते पथि ।
विहाय पृतनाम्तोक-मारुरोहान्य-भूभृतम् ॥१३॥

ततो मृगेन्द्रवद् वीरो निःशङ्को ह्यापतत् ।
निःशङ्क तु भयाविष्ट कृत्वाऽमौ निर्भयो रिपुम् ।१४॥

निधीनां ह्यध ईशत्व बाहुभ्यां प्राप सयुगे ।
'अकी यमश्च शूली च बभूव क्रमशो रिपौ ॥१५॥

'तीव्र-सत्वस्य न चिराद् भवन्त्येव हि सिद्धयः ।'

॥१३॥ तब वह वीर शत्रु पर सिंह की तरह झपटा। वह निःशंक तथा निर्भय था। शत्रु निःशंक बैठा था परन्तु उसके पहुचने पर भयभीत हो गया। उस चतुर सेनानी ने अपने हाथों से नव निधियों का स्वामित्व पालिया। [अर्थात् दो हाथों में ९ निधि मिलने से ११ हो गये] उधर शत्रु के (अक) ९ (यम) २ शूली ११ हो गये। [अर्थात् नौ दो ग्यारह हुआ] साथ ही उसको अक (कलक), यम (मृत्यु) तथा शूली (पीड़ा) क्रमश प्राप्त हो गई ॥१५॥ जो तीव्र शक्तिमान् होता है उस जल्दी ही सब सिद्धियाँ मिल जाती हैं।

गडरानगरस्य पतनम्

भूत्वा तु द्विशिरः सैन्य-मभियान समाचरत् ।
शूलपाण्यायुध-मिव शूलमेकं ममाहृतम् ॥१॥
दैहिक भौतिकं त्यक्त्वा प्रच्छन्नं दैविकं कृतम् ।
गंगायमुनयो द्वन्द्व त्यक्त्वैकां च सरस्वतीम् ॥२॥
प्रहरत्रय निशीथिन्याः परित्यज्य निमित्तवत् ।
चचाल भारती सेना गडरानगरं प्रति ॥३॥

गडरा नगर का पतन

हमारी सेना ने अपनी दो शाखा बनाकर अभियान प्रारम्भ किया। शूलपाणि शंकर के शस्त्र त्रिशूल में से एक ही शूल बचा रखा ॥१॥ दैहिक तथा भौतिक को मिला दिया और दैवी को छिपा लिया। गंगा-यमुना का तो संगम होकर एकाकार हो गया तथा सरस्वती को छोड़ दिया। जान बूझ कर रात को तीन प्रहर को छोड़ कर भारती सेना गडरा नगर की ओर बढ़ी ॥२ ३॥ उधर (पाकिस्तान की तरफ) सिंधु रेन्जर्स नाम की दो बिग्रेड जिसमें वन की रक्षा करने वाले व्याघ सिपाही थे ॥४॥ वे स्वयं चलने वाले परम आधुनिक तथा आकाशवाणी के यन्त्र से सज्जित ऊंट के पैर

व्याधानां वनपालानां राजो 'रेंजर्स' विश्रुता ।
वाहिनी-युग-सख्याका तटिनी-सिन्धु-लाञ्छना ॥४॥
स्वचालितैरयतनैः शस्त्रै-र्खंवाग्-यन्त्रैः समम् ।
"महागपत्पुष्टियुक्रै-रथागै-र्जीप-सहतिः ॥५॥
रणांगणे समायाता भारती-सैन्य-सम्मुखम् ।
अतिशक्तितया तावत् सेना नो ह्यभिचक्रमु ॥६॥
चण्डांशो श्चण्डतापूर्णा भारती चण्डविक्रमा ।
पाकयम्य चमतातीता वभूवाहवमूर्द्ध नि ॥७॥
पाकिदिशीकोऽभग्नच्छत्रुः परित्यज्य रणांगणम् ।
सामान्य धर्म वीराणा वीर्यं धैर्यं सहिष्णुताम् ॥८॥

की तरह (गुन्गुदे) बलून टायरों से युक्त पहियों वाली जीपों का समूह था। वह भारती सेना के सामने आया। हमारी सेना अत्यन्त शक्ति के साथ उस पर झपट पड़ी ॥६। वह प्रचण्ड किरणों वाले सूर्य की प्रचण्डता से भरी प्रचण्ड पराक्रम युक्त थी। अत: युद्ध में पाक सेना के सामने उसकी शक्ति से वह परे हो गई। शत्रु रणक्षेत्र में वीरों के साधारण धर्म-वीरता, धैर्य तथा सहनशक्ति को छोड़ कर नौ दो ग्यारह हो गया। (ऊपर बतलाए) धर्म के उपकरणों के स्वभावों को पाकिस्तानियों ने त्याग दिया परन्तु दूसरी बातों

गडरानगरस्य पतनम्

भूत्वा तु द्विशिरः सैन्य-मभियान समाचरत ।
शूलपाण्यायुध-मिव शूलमेक समाहृतम् ॥१॥
दैहिक भौतिक त्यक्त्वा प्रच्छन्न दैविक कृतम् ।
गगायमुनयो द्वन्द्व त्यक्त्वैकां च सरस्वतीम् ॥२॥
प्रहरत्रय निशीथिन्या परित्यज्य निमित्तवत् ।
चचाल भारती सेना गडरानगर प्रति ॥३॥

गडरा नगर का पतन

हमारी सेना ने अपनी दो शाखा बनाकर अभियान प्रारम्भ किया। शूलपाणि शकर के शस्त्र त्रिशूल म से एक ही शूल बचा रखा ॥१॥ दैहिक तथा भौतिक को मिला दिया और दैवी को छिपा लिया। गगा-यमुना का तो सगम होकर एकाकार हो गया तथा सरस्वती को छोड दिया। जान बूझ कर रात को तीन प्रहर को छोड कर भारती सेना गडरा नगर की ओर बढी ॥२ ३॥ उधर (पाकिस्तान की तरफ) सिंधु रेन्जर्स नाम की दो ब्रिगेड जिसम वन की रक्षा करने वाले व्याघ सिपाही थे ॥४॥ वे स्वय चलने वाले परम आधुनिक तथा आकाशवाणी के यन्त्र से सज्जित ऊट के पैर

व्याघानां वनपालाना राजी 'रेंजर्स विश्रुता ।
वाहिनी-युग-सख्याका तटिनी-सिन्धु-लाञ्छना ॥४॥
स्वचालितैरयतनैः शस्त्रै-र्धवाग्-यन्त्रैः समम् ।
'महागपत्पुष्टियुक्तै-रथागै-र्जीप-सहतिः ॥५॥
रणांगणे भमायाता भारती-सैन्य-सम्मुखम् ।
अतिशक्तितया तावत् सेना नो ह्यभिचक्रमु ॥६॥
चण्डांशो श्चण्डतापूर्णा भारती चण्डविक्रमा।
पाक्यस्य च्मतातीता बभूवाहवमूर्द्धनि ॥७॥
कादिशीकोऽभवच्छत्रुः परित्यज्य रणांगणम् ।
सामान्य धर्म वीराणा वीर्यं धैर्यं सहिष्णुताम् ॥८॥

की तरह (गुन्गुदे) बलून टायरो से युक्त पहियो वालो जीपों का समूह था। वह भारती सेना के सामने आया। हमारी सेना अत्यन्त शक्ति के साथ उम पर झपट पडी ॥६। वह प्रचण्ड किरणों वाले सूर्य की प्रचण्डता से भरी प्रचण्ड पराक्रम युक्त थी। अत' युद्ध में पाक सेना के सामने उसकी शक्ति से वह परे हो गई। शत्रु रणक्षेत्र में वीरों के साधारण धर्म-वीरता धैर्य तथा सहनशक्ति को छोड कर नौ दो ग्यारह हो गया। (ऊपर बतलाए) धर्म के उपकरणों के स्वभावों को पाकिस्तानियो ने त्याग दिया परन्तु दूसरी बातों

धर्मोपकरणाना वै सामान्य गतिलक्षणम् ।
प्रजहावि स्म पाक्यस्थः स्वच्छन्दोऽन्यतमेऽधमो ॥६॥
मार्गं मार्गयता तस्य जिष्णुना भारतेन च ।
प्राप्तान्युपकरणानि यन्त्रगोलकचूर्णकम् ॥१०॥
सम्मान-भाजन जेतुर्निजितस्य विपर्यय. ।
परामिधान द्विपदो जैस्से तत्राभवत्पुनः ॥११॥
आश्चर्यचकितः सोऽभु-द्विक्रमेण जवेन नः ।
न तत्र विस्मय-स्थान कवीनां स्मर्यतां वच' ॥१२॥
"क्रिया-सिद्धिः सत्वे भवति महता नोपकरणे" ।

मे वह स्वच्छन्द थे ॥७-६॥ विजयी भारती सेना ने भागते हुए उसका पीछा किया तो उन्हें युद्ध के उपकरण यन्त्र, गोल बारूद हाथ लगे ॥१०॥ विजयो के लिए ये वस्तुए सम्मान का चिह्न थी और पराजित शत्रु की कटी हुई नाक। फिर जैस्से में दूसरी मुठभेड़ हुई वहा हमारे वीरो ने अपने वेग तथा पराक्रम से शत्रु को आश्चर्य चकित कर दिया। इसमे कोई आश्चर्य की बात नही। इस विषय म कवियों का कथन स्मरण करना चाहिए। उन्होंने कहा है—

"बडे लोगों के सामर्थ्य में कार्य को सिद्धि रहती है न कि साज सामान में।"

स्त्री पर्व

धर्षणोत्सुकाना प्रतिधर्षणमवलाभिः

मुजाहिदानां पापानां विपाक दुष्कृतस्य वै ।
ज्ञातु निज्ञैर्यथार्थेन एकया कथया ह्यलम् ॥१॥
ग्रामे वाकासरे नाम्नि प्रदोपे ग्रामवासिपु ।
अनिवर्तितेपु क्षेत्रेभ्यः पञ्च दुष्कृतिनस्तदा ॥२॥
एकस्मिन्सदने तत्र प्रविष्टा धर्षणोत्सुकाः ।
तत्रैका महिला वृद्धा तिस्रः कन्या वधूः स्थिता ॥३॥

अत्याचार करने को आये दुष्टों को अबला स्त्रियों ने मार भगाया

मुजाहिद कहलाने वाले पापियो के दुराचार के परिणाम को जानने के लिये ज्ञानियो को एक ही कथा पर्याप्त होगी ॥१॥

बाकासर गाव में दिन छिपने से पहले जब गाव वाले अपने अपने खेतो से लौटे नही थे पाच दुराचारी जबरदस्ती करने को एक घर में घुसे। वहा एक बुड्ढी महिला तीन कन्याए और एक बहू थी ॥२॥ दुष्टो ने बुढ्ढी को बाहर निकल जाने को कहा।

दुष्टाश्चरचिरे युद्धं वहिर्गन्तु गृहाद्दृतम् ।
अनादृतेषु तेष्वेव तेषामीहा प्रतिष्ठिता ॥४॥
पञ्चानां पञ्च-दुर्गामि-स्ताडन लगुडैः गदैः ।
आरमज्जव-शौर्याभ्यां समित्-पिञ्जेषु वैरिषु ॥५॥
ताडिता दुर्हृदः शीघ्रं पलायन-परायणा ।
अन्यास्त्र-हस्त्या घशाएवा अत्याहूता गृहाद्वहिः ॥६॥
आहूता-स्ते दुराचारा आयुधानां समर्पणम् ।
पञ्च षट् स्रमि-चापुर तत्रैषु कथितेषु च ॥७॥

उसने उन्हें मुंह तोड़ जवाब दिया। इस पर उनकी लालसा पर पाला पड़ गया। उन पांच पाण्डियों ने उन पांच दुष्टों पर लाठी वर्षा ऐसी बल पूर्वक तथा तेजी से की कि उनके होंसले पस्त हो गए ॥४ ५॥

मार पड़ते ही उनके पर उखड़ गये और वे भाग खड़े हुए। परन्तु उनके घर से बाहर होते ही एक क्षत्राणीने अपने राइफल से उन्हें ललकारा। इस पर पापियों ने शस्त्र डालकर आत्म समर्पण कर दिया ॥६॥

तन्त्र शास्त्र में पांच या छः अभिचार कहलाते हैं। उनमें से पञ्चत्व यानि मृत्यु को छोड़ कर बाकी यहां सब बर्ते गये। (आत्म

पचत्व च ऋते शेशा एकनैवाभनन्ततः ।
मोहन चाबला-शौर्यात् स्तम्भन रैफलेष्वभूत् ॥८॥
विद्वेषण स्व स्वामिभ्यो वशीकम समर्पणे ।
क्षणिक चापि तज्जात दुष्टेचोच्चाटन ततः ॥९॥

समर्पित शत्रु को भारतीय प्राणदान देते हैं) । उन अबलाओं के शौर्य से सम्मोहन हो गया । बैरी के राइफल यो ही धरे रहे । उनका स्तम्भन हो गया । दुष्टो के विधाना उनपर नाराज हुए । यह विद्वेषन हुआ । आत्म समर्पण वशीकरण हुआ । क्षणभर में दुष्टों का नौ दो-ग्यारह होना उच्चाटन था ही ।

अनुशासन पर्व

वीराणां सन्देशाः

मेजर यशवन्त-सिंहस्य रणोद्गतम्

मेजर यशवन्तसिंहस्य महाराष्ट्रनिवासिन ।
सिंहनादः प्रशस्तो हि समरांगणघोषित ॥१॥
अतीते तु महाराष्ट्रा आपञ्चाप समागताः ।
दिष्ट्या कश्मीरदेशेऽहं सम्प्राप्तो भूरिभाग्यवान् ॥२॥
पञ्चाननगुहाधर्षात् कां गतिं याति वै नरः ।
द्रष्टयत्ययूनो ह्यचिर मूर्तरूप समागतम् ॥३॥

वीरों के सन्देश

मेजर यशवन्त सिंह का पत्र

महाराष्ट्र निवासी मेजर यशवन्त सिंह की रणक्षेत्र में आते हुए की सिंहनाद करते हुए प्रशस्त घोषणा यह थी ॥१॥ "भूतकाल में महाराष्ट्र लोग पंजाब तक ही आये थे । मैं बडा भाग्यवान् हूं कि ईश्वर की कृपासे मैं कश्मीर में आया ॥२॥ सिंह की नाद में

महाराष्ट्रिय करवालो न स मर्षत्यरिं क्वचित् ।
शिवाच्छत्रपतेश्चाय-मादेशः सम्प्रवर्तितः ॥४॥
सहोदर, रचय मे ह्यारार्तिक्य शुभावहम् ।
आगमिष्यामह क्षिप्र शत्रोः परिभवान्तरम् ॥५॥
शाश्वतीं भारतीयानां विक्रान्तानां परम्पराम् ।
रक्षयिष्यामि चाक्षुण्णां यावत्प्राणव्यय मम ॥६॥

घुसने वाले मनुष्य की क्या गति होती है यह आज अपूर्व प्रत्यक्ष देख लेगा ॥३॥ महाराष्ट्रियों की तलवार शत्रु को कभी क्षमा नहीं करती, यह आदेश छत्रपति शिवाजी ने चलाया था ॥४॥ हे भाई, शत्रु का पराभव करके मैं शीघ्र ही आऊंगा, मेरे लिए आरती सजाकर रखना ॥५॥ चाहे मेरे प्राण पखेरु उड जाय मैं भारतीय वीरो की चली आई परम्परा का अटूट पालन करूंगा ॥६॥"

वीर-भारतसिंहस्य वर्णा द्भुतम्

मारतसिंहेन वीरेण वीलाडाग्रामिना रणात् ।
पित्रे सम्प्रेषिते पत्रे इतिवृत्त निवेदितम् ॥१॥
"राष्ट्रकूट-परिच्छेद आर्य-मेंश प्रदापित ।
लब्धावकाशः सुमग्नश्चन्द्रहास. विपासितः ॥२॥
आस्कन्दने रिपुमम शोनक्त परितोषितः ।
जगदम्बानुकम्पातः पीत्वासृक् परिपन्थिन. ॥३।

वीर भारतसिंह का पत्र

बीलाडा के भारतसिंह वीर ने अपना हाल लिखते हुए अपने पिताजी को पत्र भेजा ॥१॥

"श्रीमानो ने मुझे राठौरी तलवार प्रदान की था। वह सुन्दर चन्द्रहास प्यासी थी। उसको अपनी प्यास बुझाने का अवसर प्राप्त हुआ। और शत्रु से कल रात की मुठभेड में उसको सतोष कराया गया। जगदम्बा को कृपासे उसने दुश्मन का रक्त छक कर पिया ॥१-३॥ हमारे बलसे चौगुनी सेना स शत्रु ने कपट के सहित हमला किया। सिंह के समान हमारे जवानों ने बड बल पूवक

केतग्रामिक्रमे शत्रो श्रतुगु णवलेन वै ।
सैन्याः पञ्चास्य–कल्पा नः सुजवेनामिद्रु वुः ॥४॥
[1]यन्त्रतोपैः [2]रयफलैं निस्त्रिंशै–श्चान्तिमेचणे ।
सर्वं रिपुवल नीत पार [3]निम्त्रिशरोषसः ॥५॥
चत्वारो दु्रु वु' शेषाः शौर्य–धैर्य–यशो–वलैः" । इति ।
[4]चतुष्र्णघातृग्वरिपु पटाक्षेपे रणाजिरे ॥६॥

उसका सामना किया। मशीन गना से राइफलों से तथा अन्त में तलवारों से सारे शत्रु सैन्य को तलवार के घाट उतार दिया ॥५॥ बाकी बचे हुए दुश्मन चार थे वे शौर्य धैर्य तथा यशको भी साथ लेकर भाग खड़े हुए।"

हमारे शत्रु हम से चौगुने थे। युद्ध का पटाक्षेप हुआ तब शत्रु के भाग्य के अ क लुप्त हो गये। उसके शीघ्र कलक का टीका लग गया। गणित की प्रणाली में गुणक का स्थान नीचे (अधो॰ गति) में रहता है। अत दुश्मन की सख्या चौगुनी करने से वे अधोगति को पहु चे। सख्या गिनने की प्रणाली बाए से होती है। अर्थात् वाम (उलटी) गति, दुर्गति या अपकीर्ति होती है।

१ तोपति इति तोप'। २ रययुक्त फल शस्त्राग्र यस्य स रयफले
३ तल्वार के घाट उतार दिया। ४ हमारी सख्या की चौगुनी।

डोगराई समरवीर-हुतात्मनो मेजर आशाराम-त्यागिनो वीर-बान्धवानां शौर्योद्गाराः

सगुणाछुट्टनसिंहौ तस्य पितृपितामहौ ।
वासन्ती जननी चापि कविताऽर्धांगिनी सती ॥१॥
सर्वे शुभ्रान्तरात्मान' श्रुत्वा तस्य पराक्रमम् ।
धन्या तस्य स्वसा चाभूद्दधौ भ्रात्रे विशेषकम् ॥२॥
भूयः सौरभ्य-सपृक्ता वासन्ती कुसुमाकरा ।
सुरलोका कविता चाभूत् कवितेव महाकवेः ॥३॥

डोगराई समरांगण के हुतात्मा (जाटों के शिरोमणि) मेजर आशाराम त्यागी के वीर बान्धवों का शौर्य

सगुवासिंह उनके पिता तथा छुट्टनसिंह पितामह हैं। उनकी माता वासन्ती तथा अर्धांगिनी कविता सभी शुद्ध आत्मा वाले। इसी प्रकार उनकी बहिन जिसने अपने वीर भाई को विदाई पर तिलक किया था आशाराम के पराक्रम को सुनकर धन्य हो गई ॥१-२॥ उनकी जननी वास्तव में कुसुमाकर बसन्त ऋतु के समान

आह्लादाश्रु-परिक्लिन्न-लोचनाः सर्वबान्धवाः ।
मन्यमानाः स्वयं धन्यान् स्वजनस्य विचेष्टितैः ॥४॥
जन्मभूगौरवेणैवानुभूयन्ते स्म गौरवम् ।
पराविमर्गः परमो वीरैर्लाभो हि मन्यते ॥५॥

अत्यन्त सुगन्धित होकर खिल उठी। धर्म वर्त्म की कविता महाकवि की कविता की भांति शुभ कीर्तिमयी हो गई। उसके सब बान्धव आह्लाद के आंसुओं से आंखें भर कर अपने स्वजन वीर के कर्तव्य से अपने को धन्य मानने लगे। उन्होंने भारत माता जन्मभूमि के गौरव को अपना गौरव माना। वीर लोग शत्रु की रण में पराजय को अपना परम लाभ समझते हैं ॥३-५॥

वीरस्य स्वदयितायै वर्णदूतम्

स्वस्त्यस्तु ते प्रसन्नोऽस्मि ह्यनिश भिन्दन् रदानरेः ।
स्मृति स्ते मेऽकम्पनीयां शक्तिं नित्य प्रयच्छति ॥१॥
परिपन्थि-समक्ष मे प्राप्नोत्यास्यचपेटिकाम् ।
प्रतिश्रुतां मया ते तु स्वाभिलाषामपूरयम् ॥२॥
अन्तिमः शीकरो देहे शोणितस्यावशिष्यते ।
उच्छेदन सपत्नानां करिष्यामि सुनिश्चितम् ॥३॥
स्वमान पृष्ठतः कृत्वा मान ते पालयाम्यहम् ।
न हि पृष्ठ प्रयच्छन्ति रणे वीराः कदापि च ॥४॥

एक वीर का अपनी प्रिय पत्नी को पत्र

तेरे लिए स्वस्ति (सब प्रकार का कल्याण) हो । मैं प्रसन्न हूँ। यहा नित्य शत्रु के दांत तोडता हूं । नित्य तेरी स्मृति मुझे अकपनीय शक्ति देती है ॥१॥ शत्रु को मेरे सामने आते ही मु ह तोड जबाब देता हूं। मैंने अपनी अभिलाषा की प्रतिज्ञा तुझ से की थी उसको सर्वथा पूरी कर रहा हू ।२॥ मेरे शरीर में रक्त का अन्तिम बिन्दु रहते रहते वैरी का उच्छेद करूगा। यह निश्चय

जन्मभूम्या जयघोष जय भारत-भारत।
अहर्निश प्रकुर्वाणो वैजयन्तीं वहाम्यहम् ॥४॥

मानना ॥३॥ मेरा सम्मान चाहे बिगड़ जाय मेरा सम्मान पूरी तरह पालना है। वीर लोग कभी भी रण में पीठ नहीं दिखाते ॥४॥ जन्मभूमि का जयघोष जय भारत ! जय भारत !! कह कर किया जाता है। और मैं मातृभूमि की विजय वैजयन्ती फहराता हूँ।

मातृवल्लभ मेजर कृष्णसिंहस्य सन्देशः

वीरांगने जनयित्रि स्वाश्वस्ता भव साम्प्रतम् ।
शासन ते मया सख्ये पालित परिपूर्णतः ॥१॥
भूमातुः पत्पयोजस्य प्रलब्धुं रजसः पदम् ।
प्रतिशृणोमि भो देवि यतिष्येह यथाबलम् ॥२॥
जनयित्रि त्वदशोऽहं विक्रान्तायाश्च पुत्रकः ।
तव स्तन्यस्य सम्मान प्रतिष्ठास्ये रणांगणे ॥३॥

माता के प्यारे मेजर कृष्णसिंह का सन्देश

हे वीरांगना माता, तू साम्प्रत विश्वास रख। मैंने तेरे आदेश को युद्ध में पूर्णतया पाला है ।१॥ मातृ-भूमि के चरणों की रज पदवी प्राप्त करने के लिए, हे देवी, मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं भरसक यत्न करूगा ॥२॥ जननी, मैं तेरा अंश हूं, तुझ वीरांगना की सन्तान हू। मैं युद्ध में तेरे दूध का सम्मान पूर्णतया स्थापित करूगा। ३॥ मेरा देहपात भी हो जाय तो मुझे देवों की पदवी प्राप्त होगी। क्योंकि रणक्षेत्र में प्राणों की हानि भी अमरत्व प्रदान

मम देहावसानऽपि पद-प्राप्ति दिवौकस ।
अमृताभाहति-युद्धेऽमरत्व प्रददाति यं ॥४॥
तवात्मजो मृतो नास्ति सोऽमरोऽमरकीर्तिमान् ।
लब्ध्वा प्राङ् मेजरपदं निर्जरस्याधुनास्पदम् ॥५॥

करती है ॥४। तेरा आत्मज मरा नहीं वह अमर हो गया। पहले तो मेजर पद पाया अब निर्जर (देवो) का पद पाया है ॥५॥ (ऐसा समझना)

ज्ञात कीर्तिरज्ञातनाम्नो वीरस्य सन्देशः

भूम्याः सम्मान-रक्षार्थं नो वीराशमने स्थितिः ।
रिपोः शिक्षा निमित्त हि चेष्टितं चैकमेव च ॥१॥

विश्वस्तोऽहं सपत्नो नः पतिष्यति न संशयः ।
चिन्ताग्रस्ते स्वसा माता जानेऽहमिति वस्तुतः ॥२॥

लक्ष पुत्रा रता युद्धे शत्रोरुन्मूलनेऽधुना ।
समाश्वसिहि ते मित्र ते उभे धर्मनिष्ठिते ॥३॥

माता मे वीरललना स्वसा वीरांगना तथा ।
आत्मीयोऽहं तयो-र्नून न स्यां रणपराङ्मुखम् ॥४॥

ज्ञात कीर्ति परन्तु अज्ञात नाम वीर का सन्देश

मातृ-भूमि की रक्षा के निमित्त हम घोर युद्ध स्थल में जूझ रहे हैं। हमार लिए एक ही लक्ष्य है कि शत्रु को अच्छी तरह शिक्षा दी जाय ॥१॥ मुझे विश्वास है कि शत्रु मार खायगा इसमे सन्देह नही वास्तव में मुझे ज्ञान है कि मेरी माता तथा बहिन को चिंता होगी ॥२॥ शत्रु को जड़मे उखाड़ फेंकने में लाखों भारत के पुत्र अभी लगे हुए हैं। वे दोनो धर्म निष्ठिता हैं, मित्र उन्हें पूरा आश्वासन देना ॥३॥ मेरी माता वीर ललना है उसी तरह मेरी बहिन वीरांगना है। उन्ही का आत्मीय मैं निश्चय ही युद्ध से मुख नहीं मोड़ूंगा ॥४॥

वीर सुखवीर सिंहस्य पत्रम्

नमोऽस्तु पितृचरणेषु कुशलोऽहं रणोत्सवे ।
शौर्यस्य निकषग्रावा वीराणामद्य वर्तते ॥१॥
स्वर्णस्य यथा ज्वलने युयुत्सूनां तथा मृधे ।
तत्रभवतामसृक् शुद्धं मम देहे शिरासु वै ॥२॥
अभावो जातरूपस्य नः कुले न कदाचन ।
यत् किञ्चिद् अत्रभवतोपदिष्टोऽहं पुरागृह ॥३॥

वीर सुखवीरसिंह का पत्र

मेरा पिता के चरणो में नमस्कार। मैं रणोत्सव में कुशल हूं। आज वीरों के शौर्य की कसौटी है ॥१॥ जिस प्रकार अग्नि में सोने की परीक्षा होती है, उसी प्रकार योद्धाओं की युद्ध में। श्रीमानों का शुद्ध रक्त मेरे शरीर की नाड़ियों में बह रहा है ॥२॥ हमारे कुल में सुवर्ण का कभी अभाव नहीं हुआ। पहले आप श्री ने मुझे घर में जो शिक्षा दी वह मेरे हृदय में दृढ़ता से अंकित की हुई है। मैं ऐसा कोई कार्य नहीं करूंगा जो हमारे कुल में लज्जा का कारण बने ॥४॥ (हमारे दोनों हाथों में लड्डू है) कीर्ति

तत्सर्वं हृत्पटले मे वर्तते हि दृढाङ्कितम् ।
नाऽहं किञ्चित्करिष्यामि यत्स्याद्व्रीडास्पदं कुले ॥४॥
समन्तोमयत प्राप्त्या विजये वा दिवंगते ।
क्षणेऽस्मिन् वीर-पुत्राश्च भूमात्राऽऽमन्त्रिता वयम् ॥५॥
सिंहानां निवहस्तत्र प्रादुद्रवदरिस्त्वरम् ।
छित्वा ज्वलन-प्राचीरं स्थलं चाप्यकरोत्ततः ॥६॥
लपनान्त्यः सुखवीरोऽसौ विभिदे सूर्यमण्डलम् ।
विजयञ्च पुरस्कृत्य पृष्ठे वीरगतिं यशः ॥७॥

दोनों तरह से होगी, चाहे विजय प्राप्त करें चाहे वीर गति मिले। वीर पुत्रों के इस उत्सव के लिए हम को मातृभूमि का आमन्त्रण है ॥५॥ यहां हमारे सिंहों के समूह ने तुरन्त ही शत्रु पर छापा मारा और आग की दीवार को चीर कर उनके मोर्चे पर अधिकार कर लिया ॥६॥

वह लेफ्टिनेन्ट सुखवीरसिंह सूर्य मण्डल को भेदकर वीर गति को पागया। पहले विजय प्राप्त की पीछे यश फैल गया।

भारतस्य शौर्यपरम्परा

शौर्यस्य शाश्वती ख्याता भारतस्य परंपरा ।
अद्यावधि समायाता समयेनाप्यबाधिता ॥१॥
प्रागितिहासकालेऽपि दस्यूनार्या न्यपूदयन् ।
रामो निशाचरान्हत्वा सुजनान्प्यपालयत् ॥२॥
रामानुजोऽपि दुर्धर्षान्कौणपान् निजघान च ।
इन्द्रजित्कुम्भकर्णौ तौ दुर्दान्तौ राक्षसाधिपौ ॥३॥

भारत की शौर्य परम्परा

भारत की शौर्य परम्परा अतीत से आज तक यथावत् चली आई है । समय के कारण भी इसमे कोई बाधा नही आई ॥१॥ इतिहास काल से पहले भी आर्यों ने दस्युओ को पछाड़ा । श्रीराम ने राक्षसो का सहार कर सज्जनो का पालन किया । रामानुज (लक्ष्मण) ने दुर्धर्ष राक्षसों का सहार किया । इन्द्रजीत, कुम्भकर्ण दुर्दान्त राक्षसो के अधिपति थे ॥२-३॥ इन दोनो राघव कुमारो ने रावण का उसके कुल के साथ वध किया । पाण्डव कौरव वीरता

राघवाभ्यां दशास्यश्च नागचैः मकुलो हतः ।
पाण्डवाः कौरवाः सर्वे शौर्यवीर्य-विशारदाः ॥४॥
वीरः कृष्णसमः कश्चिन् न भूतो न भविष्यति ।
उभौ हि जितवैरौ रामौ चिह्नं बलपरश्वधौ ॥५॥
इतिवृत्त-युगे पूर्वे चन्द्रगुप्तोदयो नृपाः ।
अशोकोऽसौ निरुपमोऽजातशत्रुश्च विश्रुतः ॥६॥
रणशान्त्यो रलकर्ता कले. शोकहरस्तथा ।
उत्कीर्णशासनाः स्तूपा विदेशेष्वनुशासति ॥७॥

में प्रवीण थे ॥४॥ भगवान् कृष्ण के समान वीर न कोई हुआ न होगा। दोनों राम-बलदेव तथा परशुराम-विजयी वीर थे। उनके नाम के लक्षण ही बल तथा प शा माने जाते हैं ॥५॥

इतिहास युग के पहले भाग म चन्द्रगुप्त आदि नृप हुए। सम्राट् अशोक अद्वितीय था जो अजातशत्रु के नाम से विख्यात है। उसने युद्ध तथा शांति दोनों अवस्थाओं में शोभा प्राप्त की। युद्ध के शोक को भी उसने मिटाया। देश विदेशों में उसके स्थापित स्तूपों पर उसके उपदेश खुदे हुए हैं ॥७॥ मौर्य, गुप्त, मौर्ज, यादव चक्रवर्ती राजा हुए। दूर पूर्व देशों में भारतीयों ने साम्राज्य स्थापित

मौर्या गुप्ता स्तथा भोजा यादवाश्चक्रवर्तिनः ।
आर्यैः सुदूरपूर्वेऽपि चक्र सम्स्थापित पुरा ॥८॥

चालुक्या राष्ट्रकूटाश्च विक्रान्ता रणबाकुरा ।
शीशोदयास्तु शीर्षस्था माटी सोढा भटावरा ॥९॥

चह्वाणा आहवे दक्षाः परमारा परतपाः ।
बाघेलाश्च नरव्याघ्रा गण्यमाना युगे युगे ॥१०॥

पेशवा भोंसलाः सिन्धे गायकवाडहोल्कराः ।
बहवो गुरवः शिष्या ज्ञाताज्ञाता यशस्विन ॥११॥

डोग्राश्च गोरखा जाटाः सर्वे विक्रान्तपुरुषा ।
अशक्या गणना तेषा कथाया ननु का कथा ॥१२॥

किये ॥८॥ चालुक्य राष्ट्रकूट वीर तथा रण बाकुरे हुए। युद्ध म दक्ष चह्वाण, शत्रुओ को परास्त करने वाले परमार नर व्याघ्र, बाघेला, युग युग मे प्रसिद्ध हुए। पेशवा भोंसला, सिन्धिया गायकवाड, होल्कर सिक्खगुरु तथा लोग यशस्वी हुए जिनम ज्ञात तथा अज्ञात भी हैं। सब वीरो की गणना नहीं की जा सकती, तब कथा वर्णन की तो बात ही क्या? डोग्रा, गोरखा, जाट, सब वीर हुए हैं ॥९ १२॥

कानिचिदुदाहरणानि—

चित्रकूटावरुद्धेऽपि खाडोजयमलोऽभवत् ।
विक्रान्तोऽसावमुं वीरं कल्लाश्चोवाह तद्रणे ॥१३॥
चतुर्बाहु स निस्त्रिंशैं रुण्डमुण्ड–समाकुले ।
कृते क्षेत्रे जयमल्लो गतो वीरगतिं ततः ॥१४॥
कबन्ध आभवत् कल्ला अग्रे हि प्रचचाल सः ।
स्व ग्रामं नीरमस्थान–गत्वाप सहधर्मिणीम् ॥१५॥
वाचा दत्ता ह्यनूढा मा प्रेत्याभूत्सहगामिनी ।
वीराणामग्रणी मदन. प्रतापो निरवग्रह ॥१६॥

कुछ उदाहरण—

अकबर ने चित्र कूट (चित्तौड) पर घेरा डाला। उसकी टूटी दीवार की रात म मरम्मत कराते समय उसके पैर में गोली लगने से जयमल खोड़ा हो गया। रण से विमुख न होने के कारण कल्ला ने उसको अपने कन्धे पर चढाया। इस प्रकार दोनों ने, तलवार से शत्रुओं के रुण्ड मुण्डो से रण क्षेत्र को पाट दिया। परन्तु जयमल वीर गति को प्राप्त हुआ तथा कल्ला का सिर कट जाने से वह कबन्ध हो गया। इस दशा में भी वह आगे ही बढता गया। वह अपने गाव में पहुच गया। उसकी सगाई कीहुई सह-

शिवाजीवि तथैवाभूद्राष्ट्र–निर्माणतत्पर ।
अल विज्ञेपु विज्ञप्त्या जगत्यां विश्रुतावुभौ ॥१७॥
निस्त्रिंशपरिच्छिन्नोऽसौ पद्मसिंह. पराक्रमी ।
अन्तासन्नो रणक्षेत्रे मृत्साक्षतजपिण्डकृत् ॥१८॥
चेत्रानुरक्ति वीरस्य मन्येऽह कारण ततः ।
स्वभ्रातृघ्नस्य वैर च शोधितु रिपुरागत. ॥१९॥
तस्य शब्द तु श्रुत्वा स उत्तस्थौ जय–पूर्वकम् ।
पातयित्वा रिपु द्वन्द्वेऽसिपुत्र्या तस्य वर्चसि ॥२०॥

धर्मिणी अविवाहित भी उसके साथ सती हो गई। वीरो मे अग्रगण्य सहिष्णु, परम स्वतन्त्र महाराणा प्रताप, तथा छत्रपति शिवाजी स्वतन्त्र राष्ट्र निर्माण मे तत्पर हुए । य जगत् प्रसिद्ध हैं अत विद्वानो के समक्ष इनका विस्तार मै वर्णन करना आवश्यक नही ॥१३ १७॥ अपने विख्यात खड्ग का धनी पद्मसिंह पराक्रमी मरणासन्न होकर युद्ध क्षेत्र मे अपने ही रक्त स मिट्टी मिलाकर पिण्ड बना रहा था। वह रण भूमि पर अपने प्यार क कारण ही ऐसा कर रहा था ऐसा मैं मानता हू। मराठा विपक्षी को युद्ध मे यमपुर भेजने का उसम वैर निकालने को आए हुए उसके भाई की आवाज सुनकर उस अवस्था में भी पद्मसिंह उठ खड़ा हुआ और द्वन्द्व

जहौ वीरो जगन्मर्त्ये पृष्ठे सुविशद यशः ।
सुकृतिनः कृतिर्येका वर्णितया भवत्यलम् ॥२१॥
बलिष्ठ केसरीसिंह सत्य मानवकेसरी ।
वध केसरिणो द्वन्द्वे निःशस्त्रः स समाचरत् ॥२२॥
उष्णीषवेष्टित सव्य सरत्नि विवृते मुखे ।
मृगेन्द्रस्याभिद्रवत प्राक्षिपज्जवपूर्वकम् ॥२३॥
सृक्कणीमपसव्येन धृत्वा वक्त्र विदारितम् ।
चित्र तु चेष्टित छेत-दवरगेन नोदितम् ॥२४॥

युद्ध में अपनी कटार से उसका काम तमाम कर ससार में अपना उज्ज्वल यश छोड़कर इस मृत्युलोक को त्यागकर गया। ऐसे सुकृति पुरुष का एक चुटकला ही कहना पर्याप्त होगा ॥१३-२१॥

(उसका भाई) बलवान् केसरीसिंह साक्षात् नरकेसरी ही था। उसने बिना शस्त्र के केसरीसिंह को द्वन्द्व युद्ध में मार गिराया। सिंह जब जीभ लपलपाता खुले जबाड़े उस पर झपटा तो उसने मुट्ठी बँधे साफा लपेटे अपने बाए हाथ को उसके मुह में बल पूर्वक ठूस दिया और नीचे का जबाड़ा दाहिने हाथ से दबाकर उसके मुह को चीर दिया। औरगजेब के द्वारा छलभरी प्रेरणा से उस वीर ने यह अद्भुत चमत्कार कर दिखाया। 'हमारे केसरी

नाम्न-स्तस्यामिपट्‌गार्थं कृतं तेनैव दाम्भना ।
साम्प्रत व्यपदेशः स वीरेण प्रतिपादित' ॥२५॥
वागर्थाभ्यामुभाभ्यां वै यथार्थे सुप्रतिष्ठितम् ।
परस्पर हि श्रेष्ठार्थं गोचर प्रथमोचरम् ॥२६

शौर्यस्य व्यापकत्वम् —

आक्रम्य शत्रोः पृतना रुरोध झांसी गढामण्डल चित्रकूटम् ।
लक्ष्मीश्च दुर्गावति कर्मवत्यो सराचितु ता. प्रतियुद्धतत्परा ।२७।

सिंह से तुक्क नामधारी कसरीसिंह का दगल हो जाय' ऐसा कहने पर इस वीर ने इसे नि शस्त्र ही करके दिखा दिया । वाणी श्रार श्रय दानों मिले जुले रहते हैं श्रौर यथाथ में एक ही हैं यह सिद्ध करके केसरी तथा सिंह दोना श्रेष्ठ श्रथ क द्योतक हैं हो परतु ये परस्पर मिलकर दुगुने हो गय हैं । यह प्रमाणित हो गया ॥२२-२६॥

शौय की व्यापकता—

शत्रुश्रो की सनाश्रा ने (समय २ पर) भासी गढामडला चित्रकूट (चित्तौर) श्रादि को घेर लिया । वहा श्रपने श्रपने स्थलों पर) लक्ष्मी बाई, दुर्गावती कमवती क्रमश उनसे लोहा लेने में तत्पर हुई थी । इसी प्रकार श्रनेक वीरागनाए यशस्विनी, शस्त्रास्त्र

अन्याश्च नैकाः कृतलक्षणा वै वाराङ्गना शस्त्रभृता वरिष्ठाः ।
वीरप्रसू रुक्म लब्धजन्मा भूमौ तथा का गणना प्रसूनाम् ॥२८॥
बाला स्तथा तौ भरताभिमन्यू वीरा अनेका जयमल्लमुख्याः ।
भीष्मादयो द्रोण कृपापुरोगा स्तद्वंशजा आधुनिका बभूवुः २९
सग्रामसिंहो रणमल्लनामा निदेशमात्र त्विह चेङ्गित स्यात् ।
अस्यामनन्यो पशवोऽपिशूरा श्चैतक-हुँजादि तुरगमास्ते ३०
एडाश्च गा अन्यमृगा इहस्या शौर्ययुता व्याघ्रवृकै-रजेयाः ।
देशान्तरेष्वपि—
साधितारच पराधीना—स्ते ह्यत्यतोपवर्तने ॥३१॥

चलाने मे निपुण हुई हैं, उनकी गणना नही हो सकती ॥१ २॥

भरत, अभिम यु, जयमल आदि वीर बालक, भीष्म, द्रोण आदि (वृद्ध) तथा उनके वशज आधुनिक समय के भी हुए हैं, जैसे रणमल, सग्रामसिंह। यहां इतना मात्र सकेत करना बस समझिए। इस भूमि पर तो पशु भी शूरवीर हुए हैं। उदाहरण के लिए चेटक, हुजा आदि घोडे। यहा के मेमने गौ तथा अ य पशुओ ने भी वीरता पूवक बघेरो, भेडियो स भी मात नही खाई ॥२७ ३०॥

दशा तरो मे भी—

सेवा वृत्तिवाले तथा पराधीन भारतीय लोग, अति दूर देश म

योरोपीये महायुद्धे 'ऐंद्रिया' कृतलक्षणाः ।
वैजयन्ती स्वदेशस्य तत शौर्यस्य पालनम् ॥३२॥

समाचरन्पुरोगा स्ते स्पृहणीय सुचेष्टितम् ।
तुषारभूम्यां फ्लैंण्डर्से लोहप्राचीर-वेष्टिते ॥३३॥

यत्रापेक्षते महती शस्त्रसपातदक्षता ।
फ्रांस-बेल्जियमयोर्देशे सैन्य खांकमहस्रकम् ॥३४॥

परचक्र प्रतियोद्धु खालसाना वरूथिनी ।
युक्ता: सशप्तकाः सर्वे सकला-द्दितलक्षणा ॥३५॥

अपनी शूरता के कर्तब दिखा गये हैं जसे योरोपीय महा युद्ध म। उन्होने अपने देश के झण्डे की शान रखने तथा वीरता का विरुद पालने म आगे बढकर ऐसी करतवें दिखाइ जिनको लोग स्पृहा करते है। बफ से ढके तथा लाह को प्राचार (तारो) से घिरे फलैंडस प्रदेश मे वे लडे जहा बडे युद्ध कौशल का आवश्यकता थी।

फ्रास बेलजियम में शत्रु की ६० हजार सेना आ डटी। उनस लोहा लेने को खालसा पलटन नियुक्त की गई, उसम सब

१ इ डु इव या सा इ द्रिया "इण्डिया इति आ भा । तस्मर्दा धन ऐंद्रिया भारत ।

'वाहे गुरु दी खालसा वाहे गुरु दी फतहः" ।
नन्दन्तः श्रुतिमिद्-घोष युयुधिरेन्यूविचेप्ले ॥३६॥
प्राशसदायस तेषां परिपन्थीरणाङ्गणे ।
शौर्यमविस्मरणीय–मध्यन्नेनापि निश्रुतम् ॥३७॥
जामन्या स्निग्य प्रापुः किम्वदन्तीमविश्वसन् ।
गृहीत्वोच्छ्रित दाम शून्ये चाप्युडयन्ति ते ।
द्वितीये च महायुद्धे वैशिष्ट्य सैन्यज्ञातिकम् ॥३८॥

युद्ध में पीछे न हटने वाले अपने गुणों से प्रसिद्ध थे। ये "यूविचेपल में "वाहे गुरू दी खालसा", "वाहे गुरू दी फतह ' घोषित करते हुए जूझे। इनके लोहे को शत्रु भी मान गये और उसकी प्रशसा की। न भुलाए जाने वाले इनके शौर्य को सेना नायक ने भी सराहना की। ये (भारतीय) लोग आकाश में सूत की कुकड़ी फेंक कर उसके सहारे उड जाते हैं। ऐसी अफवाह भी जर्मनो ने सच्ची मानली। खास खास जातियां ही युद्ध कुशल हैं यह विदेशियो की (भारत के सम्बन्ध में) भ्रान्ति ही थी। ऐसा दूसरे महायुद्ध में भारतीय सैनिकों के साक्षात्कार से पूरा २ सिद्ध हो गया। अफ्रिका में निदाघ की तपत में प्रचण्ड सूर्य की जलती हुई किरणों के

आर्यस्वातन्त्र्य-मधर्षे साम्राज्य प्रति सर्वशः ।
निरशेष-शस्त्रसघातेऽप्रतिमं सहन कृतम् ॥४३॥
ब्रह्मर्षेथ वशिष्ठस्य कौशिक प्रति मयुगे ।
स्वयमूर्जस्विना चैतद् घोषित क्षत्रजन्मना ॥४४॥
"धिग्बल क्षत्रिय-बल ब्रह्मतेजो बल बलम्" ,
इदमाध्यात्मिक शौर्यमजेय नित्यमात्मवत् ॥४५॥
सर्वसह्य-तितिक्षा वै निरशस्त्रै हिमवद्दृढै ।
लोकोत्तरो जनाचारः शत्रूणां तद् विपर्ययः ॥४५॥

का परिचय दिया ॥२॥ विश्वामित्र के प्रति ब्रह्मर्षि वशिष्ठ के यद्ध में क्षत्रिय विश्वामित्र ने बलवान् होते हुए घोषणा की कि "क्षत्रिय बल को धिक्कार है, ब्रह्मतेज ही वास्तविक बल है" ऐसा आध्यात्मिक शौय अजेय है तथा आत्मा के समान नित्य है ॥३-४॥ निश्शस्त्र हिमाचलकी भाति दृढ सब कुछ सहने की लोकोत्तर शक्ति जनता का आचरण रहा। उधर शत्रु का आचरण इससे उल्टा रहा। लोगो मे शराब व दी शासक को मद का नशा। जनता ने खादी को अपनाया, सरकार कपडो से बाहर हो गई। जनता को खादी से जोविका मिलो, शत्रु का धन छिन गया। जनता ने नमक पैदा किया-सरकार को मन्दाग्नि तथा अरुचि का

जनैर्हलिबिपात्याग' शासको मदघूर्णित ।
जनैर्देशोऽम्बर यस्य शासके 'म्त्रुरिमर्जनम् ॥४७॥
जनस्वाजीवनं तच् शत्राधन-विलोपनम् ।
लवणोत्पादन पुनो दानि-मन्तुवाहनो विधौ ॥४८॥
शलावत्य प्रकृत्या-स्तत्र(रपास्तदतिरजनम् ।
नृसेनायामहिंमाऽऽसीन्नृपे पूर्णनृशंसता ॥४६॥
असहयोग. प्रकृत्या सयुगायोगरान्नृप ।
लवणाऽशान्यामार पृष्ठे चक्रे रिपुस्तत' ॥५०॥

रोग हो गया। जनता को जो बात सलोनी लगी सरकार का वह कड़वी हो गई। जनता की सना में तो घहिंसा थी शासने खूब नृशंसता बर्ती ॥४८॥ प्रजा ने असहयोग किया शासकों ने युद्ध की सामग्री जुटाई।

भारत का नमक खाकर इस निमित्त अपनी कृतज्ञता को पीछे ढकेल कर दुराचरण करते हुए दमन चक्र चलाया। देश का नमक खाकर नमक की लूट मचादी। जनता की दण्ड यात्रा पर अदण्डियों को दण्ड दिया। निहत्थी जनता पर शस्त्रास्त्र की वर्षा की। अमृतसर में (जहा मृत्यु का क्या काम) जलियान वाला बाग

१ कपड़ो से बाहर होना।

पुरस्कृत्य दुराचार दण्डशासनमाश्रयत् ।
देशस्य लवण जग्ध्वा लवणस्यातिलोलुपः ॥५१॥
जनस्य दण्डी-यात्राया-मर्दंश्च चाप्यदण्डयत् ।
शस्त्रास्त्रवर्षेण राज्ञा निरशस्त्र-जनसंकुले ॥५२॥
अमृतेसरसि ज्जल्यांबागे हिंसाप्यभूदवाक् ।
पराकाष्ठां ललङ्घे सा शासकस्य नृशंसता ॥५३॥
वणिग्रूपेण देशेऽस्मिन्नागमो मित्रवद् तव ।
'आदेशः शत्रुवत्पश्चा-त्त्वयाचक्रेऽनयेन वै ॥५४॥
आदितश्चान्त पर्यन्त कैतव मेदनीतियुत् ।
अंगीकृत विशेषेण राज्यलिप्सा-समन्वितम् ॥५५॥

में अवर्णनीय हिंसा की। वहा शासक की नृशसता पराकाष्ठा को पार कर गई। (सारे रेकाड तोड दिए) ॥५१-५३॥

इस देश में तेरा आगम वणिया के रूप में था। (मित्र वदागम) जो मित्र के रूप में था। पीछे तूने अन्याय से शत्रु के समान आदेश देना शुरू कर दिया (शत्रुवदादेश) आदि से अन्ततक छल कपट और मेदनीति को राज्य के लालच से पूर्णतया विशेष कर अपनाया। हम तो अब निरतर आपके द्वारा लूट खसोट को सहन

मित्रवदागम शत्रु वदादेश इति वैयाकरणा ।

वय शक्नशक्यामो लोष्तन हि निरन्तरम् ।
जन्मसिद्धोऽधिकारो न. स्वराज्य जन्मनोभुवि ॥५६॥
शुभास्ते सन्तु पन्थानस्त्यज देशं यथासुखम् ।
हिन्दस्यापकारस्य तेऽघकुम्भ हि संभृतम् ॥५७॥
हिन्दराष्ट्रपिता राज्य व्याचचे नेतृभिः सह ।
मुम्बय्यां पुर्या-मेषो निर्णयो हिन्दवासिनाम् ॥५८॥
हायन विक्रमे शुभे अवकाक्रमसुन्धरे ।
अगस्ते त्रिस्तमासे च दिनांक नवमे तथा ॥५९॥
उपदेशोनुरोधोऽयं ब्रिटिशो लुब्धक कथम् ।
सद्भावेन, गृह्णीया-द्राज्यगर्वविमोहितः ॥६०॥

नही कर सकते,। अपनी जन्म भूमि में स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। आप राजी खुशी भारत को छोड दीजिए। आपकी विदाई शुभ हो। हिन्द पर आपके अत्याचारो का घडा भर गया है। यह भारत के राष्ट्रपिता तथा नेताओ ने कह दिया। यह निर्णय भारत वासियो ने बम्बई म विक्रम समत् १९९९ क भीतर ईसवी सन् १९४२ अगस्त को ९ ता० को लिया। पर तु यह उपदेश तथा अनुरोध लालची ब्रिटिश कैसे मानता। वह तो सत्ता के गव में था। उसम सद्भावना कहा से आवे। उसने इसे घोर सग्राम मानकर

सकुलायोधनं मत्वाऽमजद्भूरि नृशंसताम् ।
अतो निश्शेषदेशेऽस्मिन् विप्लवश्चाभवन्महान् ॥६१॥
पथिस्थमुदितेऽगस्त्ये पाथः शुष्यति वै द्रुतम् ।
भारतस्याधिपत्यं तद् ब्रिटिशै: पथि पाथवत् ॥६२॥
बुभुजेऽप्यावधि प्राप्य लोके शास्त्रास्त्र सम्पदाम् ।
कृताभ्राभ्रनादृद्वे तु पाथः पाथोदता गतम् ॥६३॥
द्वयोरगस्त्ययोर्मध्ये साम्राज्य शुष्कतां गतम् ।
अभूत्तद् भारतचोर पाथोद पञ्चहायने ॥६४॥
उभयोर्देशयोर्मध्ये ह्यध्वा तद्भूरि चायतम् ।
अन्तर्व्यतीत-समयः स्वातन्त्र्यपरिपालने ॥६५॥

बड़ी भारी नृशंसता का बर्ताव किया। अन सारे राष्ट्र में बड़ा विप्लव हो गया ॥५४-६१॥

अगस्त्य के उदय होने पर मार्गों का वर्षा का जल जल्दी सूख जाता है। भारत पर ब्रिटिश अपने आधिपत्य को रास्ते के जल की भांति संसार में साम्राज्य की सम्पत्ति पाकर कब तक भोग रहे थे। संवत् २००४ में वह जल हवा में उड़कर बादल बन गया। दो अगस्त्यो के बीच (अगस्त ४२-से।अगस्त ४७ तक) साम्राज्य सूख गया। दोनों देशों के बीच मार्ग भी तो लम्बा चौड़ा है ॥६२-६५॥

वर्तमानम्

एकतन्त्रा-र्प्रजातन्त्रो ह्यत्यर्थं परिशिष्यते ।
अपवार्य निज स्वार्थं यत्र प्रकृतिरञ्जनम् ॥१॥
यस्मिन्कुरसिका-लिप्सा मततर्षोऽर्थकामना ।
अभिजन-तोषण यत्र शं न तत्र प्रवर्तते ॥२॥
भृत्यवृत्तिस्तु स्वातन्त्र्येऽनुकृतिः सस्कृति-स्तथा ।
ईतयो विपद एव न शिवाय कदापि हि ॥३॥

वर्तमान

एक तन्त्र (एक छत्र) राज्य की अपेक्षा प्रजातन्त्र राज्य बहुत ही उत्तम है यदि प्रजा का रञ्जन होता हो ॥१॥ जिसमे कुरसी पाने की लालसा हो (अथवा बुरी लालसा हो) मत (वोट) पाने का लोभ तथा पैसा कमाने का चाह हो और अपने परिवार के लोगो को प्रसन्न करना हो ऐसी सूरत मे कल्याण नही हो सकता ॥२॥ स्वतन्त्रता में भी दासवृत्ति तथा फेशन को ही सस्कृति मान लिया जाय वहा दु ख और सकट ही हैं, कल्याण कदापि नही ॥३॥ वैधानिक पद जब पैसा कमाने का ही साधन माना जाय, वहा

अर्थापचयशील वै पद वैधानिक यदा।
न हि शङ्कास्पद तत्र नियता धनलालसा ॥४॥
उत्कोचजीविदातारा-वुभावपि द्वौ-मतौ।
यावन्न विग्रहो जातो निष्फलं परिशोधनम् ॥५॥
एका सद्धर्मनिष्ठा सा परिशोधन-सक्षमा।
ऋते दण्ड भयं त्रास रामबाणममोऽगदः ॥६॥
देवाधिरोहण शपथस्तुलसी कुञ्जराशनः।
अतीते समये देशे मूकन्यायाधिकारिणः ॥७॥

मालदार बनने की चाट ही है, इसमें कोई सन्देह नहीं ॥४॥ भ्रष्टाचार में रिश्वत देने वाला तथा लेने वाला दोनो अपने मतलब से मिले हुए होते हैं। जब तक उनके आपस में झगड़ा न हो तब तक पता ही नहीं चलता। अन्य उसके निवारण का उपाय नहीं होता। सद्धर्म मे निष्ठा ही इसको मिटा सकती है। दण्ड, भय त्रास के बिना ही यह रामबाण औषधि है ॥५ ६॥ पुराने समय में परस्पर झगड़ा होने पर किसी देवस्थान की पैडी, तुलसी या पीपल के सामने फैसला हो जाता था। (न वकील, न कचहरी न न्यायाधीश की आवश्यकता थी)। चुपचाप न्याय हो जाता ॥७॥

सर्वोच्चसत्ता निहिता जनतायां विकथ्यते ।
मन्त्रिणः सर्वसम्पन्ना मतधि-परितोषिताः ॥८॥
पुरा पृष्ठो महाभागः कौशिकेन महर्षिणा ।
वशिष्ठात्तवाचार्याच्छिक्षा प्राप्ता वदानघ ॥९॥
उवाच रामो भगवान् श्रृणवतां भो तपोधन ।
सर्वतः प्रथम ज्ञातो विनयो गुरुजनेष्वपि ॥१०॥
प्रणयश्च वयस्येषु दया दीनेषु प्राणिषु ।
शत्रुभ्यो निर्भयत्व च ततः शास्त्राणि सर्वश. ॥११॥
मूलमन्त्र-मिद प्रोक्त शिक्षाया भारते पुरा ।
शुष्का चाधुनिका शिक्षा गुणैरेभि-र्विवर्जिता ॥१२॥

कहा जाता है कि सर्वोच्चसत्ता जनता में निहित है। परन्तु म त्रो लोगो के हाथ में सत्ता है और उनकी पीठ पर मतों का जोर है॥८॥

प्राचीन काल में महर्षि विश्वामित्र ने भगवान् राम से प्रश्न किया कि हे निष्पाप बताओ वशिष्ठजी ऋषि ने क्या शिक्षादी भगवान् राम ने कहा हे तपोधन सुनिये। सबसे पहली बात हमने सीखी कि गुरुओ के प्रति विनय, बराबर वालों के साथ प्रेम, दोनों पर दया, शत्रु से निर्भीकता। पश्चात् उन्होंने पढे हुए शास्त्रों क नाम लिये ॥११॥ भारत मे पहले यही शिक्षा का मूल मन्त्र था।

गव्यपण्य कृत गर्ह्य देशे कंसारिणा पुरा ।
तत प्रभृतिलोकोऽयं दातव्य मन्यते पयः ॥१३॥
गव्यपण्येन जीवन्ति सख्यातीता जना इह ।
अदण्डयं मन्यते हन्त धेनुवशनिबर्हणम् ॥१४॥
पय पयोमय जात पयस्तुल्यं पुरा कृतम् ।
सर्वथा गोपनीय यत्तदाज्य गुप्तता गतम् ॥१५॥
प्रवाह-पतितानीव मिथ्यारूपाण्यनेकश ।
विज्ञानस्याभिशाप वदालदा-कमलादिकम् ॥१६॥

ऐसे गुणो से रीता आज की शिक्षा शुष्क है ॥१२॥

कसारि भगवान् कृष्ण ने दूध, दही आदि गोरस का बेचना निंदनीय बना दिया। तभी से इस देश म दूध को दातव्य वस्तु ही मानते थे। (दूध और पूत कौन वेचे)। आज कल तो दूध बेच कर असख्य लोग रोटी कमाते हैं। फिर भी दुःख की बात है कि गोवध (गो वश नाश) की कोई सजा नही ॥१३ १४॥ पहले दूध का देना पानी देने के समान समझते थे। उसका कोई पैसा नही लेता था। अब उसमें पानी मिलाना साधारण बात हो गई है। जिस घी की बडी रक्षा की जाती थी वह अ तरधान हो गया, देखने को भी नही मिलता ॥१५॥ प्रवाह मे बहती हुई चीजो की

कनकाण्ड प्रसूनां वै कुक्कुटीनां निवर्हणम् ।
तद्वज्जुगुप्सित घोर धेनुवश विनाशनम् ।।१७।।

भांति खोटे घी(वास्तव में तेल, जिसको घी कहना ही बुरा है) अनेक प्रकार के निकल आए-यथा डालडा कमल आदि, जो भौतिक विज्ञान का एक अभिशाप है ।।१६।। सोने के अण्डे देने वाली मुर्गी का पेट चीरने के समान गोवध अत्यन्त घृणित तथा घोर पाप है ।।१७।।

लोकोक्तय.

चक्षुश्रवमि निष्क्रान्ते गतिलेखा-प्रपीडनम्।
केदारिके शुष्कधान्ये प्रवर्षमूपयत्यपि ॥१॥
(गांधीवादोयतनो शीलोपदेशः)

पत्र पागनतसम तिल ताडसम नरः।
आनिष्करोति लोकेऽस्मिन् पापड. कथितो बुधैः ॥२॥
(महर्घता, भ्रष्टाचार निवारण यत्नानि)

कहावतें

साप निकल गया उसकी लकीर को पीट ने से क्या लाभ का वर्षा जब कृषी सुखानी ॥१॥
(गांधी वाद और आज का आचरण)

पात्त का परेवा करना तथा तिलको ताड बनाना। इस भांति जो कोई करता है उसका नाम पाखण्ड है ॥२॥
(महगाई, भ्रष्टाचार, निवारण के यत्न)

दिनारम्भे वणिक्पुत्रो दिनान्ते मालिनी तथा ।
विक्रीणीते निज पण्य परित्यज्य महर्घताम् ॥३॥
(स्वार्थेएव न तु न्यायेन)

मखे रटन्हरेर्नाम कुक्ष्यां च छुरिकां दधन् ।
लोकोऽय मन्यते एतद् विषकुम्भ पयोमुखम् ॥४॥
(बक–भक्त)

न वै सरलयांगुल्या घृत तु लभते नर ।
इति नीतिज्ञता प्रोक्त शठे शाठ्य समाचरेत् ॥५॥
(शान्त्युपायेन अत्याचार–निवृत्तिर्नास्ति)

बैठतो बाणियो और उठती मालिन सौदो सस्तो देवे ॥३॥
(अपने ही स्वार्थ से ऐसा करते हैं।)

मुख मे राम बगल मे छुरी यह वही बात माना जाता है जैसे विष भरे घडे के मुह मे दूध हो ॥४॥
(बगुला भक्त)

सीधी आगली सू घी को निकलैनी । इसलिए नीतिज्ञो ने कहा है कि शठ के साथ शठता से वर्ताव करना चाहिये ॥५॥
(शान्ति के उपाय से अत्याचार जीता नही जा सकता)

राहु-र्न ग्रसते चन्द्रं यावत्तस्य वक्रता भवेत् ।
वक्रतामाचरेद् धीमान् दुर्विनीतेषु शत्रुषु ॥६॥
(सपत्नेषु सारल्यं न युक्तम्)

किञ्चित्स्निग्धो धवो दारु किंचित्कुण्ठः कुठारकः ।
उभौ हीन-गुणौ यत्र सिद्धिस्तत्र सुदुर्लभा ॥७॥
(शासकानां जनतायाश्च स्वभाव.)

त्रयाणा-मेव भूतानां दुष्कालोनैव दुर्भरः ।
भिक्षु' क्रमेलकोऽजा च येन केनाऽपि पोषिताः ॥८॥
(भिक्षाजीवी, भक्ष्याभक्ष्यजीवी च)

वक्रचन्द्र जिमि ग्रसे न राहु। दुष्ट नीति वाले शत्रु के साथ कुटिलता नही छोडनी चाहिए ॥६॥
(शत्रु के साथ सीधापन काम नही देना)

कुड घो चाकणों कुई कुल्हाडी भोंटी। इस प्रकार जब दोनो में कसर हो तो कार्य सिद्ध नही होता ॥७॥
(शासक तथा जनता के आचरण)

काल कुसुम मे ना मरे बामण बकरी ऊंठ। क्यो कि ये येन केन प्रकारेण पेट भर लते हैं ॥८॥
(भिक्षु तथा भक्षाभक्ष खाने वाले)

गगनेऽशनि-निघोष' खरी लचाविधातनम् ।
परस्परमसम्बद्ध वृथैवभयकारणम् ॥६॥
(भारतस्य सुरक्षा-प्रयत्ने शत्रो' प्रलापः)
श्रावणे नेत्रविधुरो हरित मन्यतेऽखिलम् ।
मन्यतेऽनिधुर स्वीय शशको नत्रमीलित' ॥१०॥
(श्राढ्य-गृहे प्रसूतः सर्वं श्राढ्य मन्यते)
श्रापाट मासयुग्म हि दुर्बलाये तु दुष्करम् ।
खलूवाटे कारकासारो दुर्मरस्त्राणवर्जिते ॥११॥
(छिद्रे ष्वनर्था बहुलो भवन्ति)

श्राकाश बीजडी चमके गधेडी लात मारे। यह कहा वह कहा इसमे गदभी को डर की क्या श्राशका ॥६॥
(भारत के सुरक्षा यत्नो पर पाक की बौखलाहट)

सावण के श्र धे को हरा ही हरा दीखता है। शशक पर श्राक्रमण होता है तब वह श्राख मूद कर दुबक जाता है श्रौर समझता है कि कोई नही देखता ॥१०॥
(धनवान के घर ज मे को सभी धनवान दीखते हैं)

दुबलोने दो श्रसाढ तथा गजे रे सिर पर गडा पडया जब बचने को स्थान नही दु ख दायी होते हैं ॥११॥
(श्रापत्तिया एक साथ श्राती हैं)

महिषीधनसम्पन्ना तक्र प्रार्थयते च माम् ।
द्वारकाधीश्वरः कृष्ण उपग्राह्य हि वाञ्छति ॥१२॥
(स्वय श्राढ्य अकिञ्चिन् वस्तु इच्छते)
त्वत्तक्र–प्रदानेनाऽल मां श्वभ्यः प्रपालय ।
मधुलोभेन मधुलिट् पद्मगर्भे निरोधित ॥१३॥
(अकिञ्चिल्लाभाय विपद्ग्रस्तो भवति)
तक्र याञ्चा–प्रकुर्वाणो गृहाधीश्वरतां गतः ।
भूमिस्पृशांग्लवृन्दो हि देशे साम्राज्यतां गत ॥१४॥
(आग्लानां भारते शास्तृत्व–प्राप्ति)

भैंस री घणियाणी म्हारे छाछ मागण आई । उसी प्रकार द्वारका के अधीश्वर भगवान् सुदामा से भेंट चाहत हैं ॥१२॥
(स्वय सम्पन्न गरीबो से क्या चाहे)

थाया थारी छाछ सू मने कुत्तासू छुडा (बचा) । शहद के लोभ मे भवरा (साझ पडने पर) कमल कोप में कैद हो जाता है । १३॥
(थोडे से लाभ के लिए बडी विपत्ति)

छाछ मागण आई घर री घणियाणी बण बैठी । अ ग्रेज बणिया व्यापार करने की स्वीकृति लेकर देश का राजा बनगया ॥१४॥
(अ ग्रेजो द्वारा भारत का कब्जा)

तैलक पेषणीदण्डो रजको मुद्गरायुधः ।
उभौतुल्यबलौ यावद्धीनता न हि कुर्त्रचित् ॥१५॥
(आधुनिकौ बृहद्राष्ट्रौ)

घोबी सू बया तेलो घाट वेरे मोगरो वेरे लाट। दोना ही जोरदार हैं। कौन किससे कम होय ॥१५॥
(आधुनिक बड़े राष्ट्र)

श्री गोविन्द देवस्य मुद्रा

अस्ति काश्चित् पुरा विद्वान् जयनाम पुरे वसन् ।
आप्राप्य जीनिका काचिद् राज्ञः सन्निधिमाप्तवान् ॥१॥
उभयोस्तत्र सवादे सोपालगद् भूपतिम् ।
दुरवस्था भूरि शून्य पोलम्पोलमिति श्रुतम् ॥२॥
निदुपा-मादृशो मुख्यो न लभतेऽत्र जीवनम् ।
कीदृश शासन देशे दुर्भग विस्तृत पुनः ॥३॥
महारानः परीहासे ह्यथिन तमुपादिशत् ।
प्राप्तुकामः पद शून्ये किं नु व्यवसितो मन ॥४॥

गोविन्ददेव जी की छाप

ऊपर की पुराने जमाने की कथा प्रसिद्ध है। जयपुर में एक पढे लिखे आदमी को आजीविका नही मिली। उसने किसी भांति वहा के महाराजा के सामने पेश होने का मौका पा लिया। दोनो के सवाद में उसने महाराजा को उपालम्भ दिया कि आपके यहा बडा अ धेर खाता है, जहा देखो वहा पोल। मेरे जैसा पढा लिखा आदमी यहा निकम्मा है। आपके राज्य में कैसा दु ख चारों तरफ

प्राप्तावसर इत्य स प्राप मुद्रा विनिर्मिताम् ।
शिल्पिना राज्य-देवस्य नामधेयांकितां शुभाम् ॥५॥
नृपस्य नर्मवाक्य तत् सोऽयुजज्जीविकात्मकाम् ।
शासनन्यायशालासु राज्यकार्यालयेषु च ॥६॥
अहरहो ह्युदासीन: कार्यार्थीमादिशत्ततः ।
शुल्क च प्राप्तवान् नित्य यो मुद्रांकन-कर्मणि ॥७॥
धीकर्म-सचिवानां चाधिकारभृतालये ।
प्रस्तुताक्षर-विन्यासा मुद्रांकैस्तेन मुद्रिताः ॥८॥
न कोऽप्यक्षरविन्यासो निश्शुल्को मुद्रया विना ।
सा मुद्रा टकशालाभूत् तस्य भृत्यार्थिनस्तत: ॥९॥

फैला हुआ है। महाराज ने हसी में ही उससे कहा, "इसी पोल मे तू पद चावे छै तो तू भी पाल मे पोल घसा दे।" वह इस अवसर का लाभ उठा कर एक कारीगर से श्री गोविन्द देव जी, इस राज के इष्ट देवता, की मोहर (छाप) बनवा लाया। राजाजी की मजाक को उसने अपनी जीविका का साधन बना लिया। राज्य मे महकमे, अदालत आदि में नित्य आसन जमाकर वहां हिदायत करने लगा और हरक दस्तावेज पर मुहर लगाकर फीस लेने लगा।

कार्षापणाद्र्प्यांश्च जीविकार्थी समाहरत् ।
कस्यापि पृच्छा नैवाभूदेतस्मिन्तस्य कर्मणि ॥१०॥
श्रीगोविन्दः प्रभुर्हेतु र्नृपतेरिष्ट देवता ।
प्रावर्ततैतद् वृत च समान् प्रचुर–सरयकान् ॥११॥
चिरेण भ्रष्टाचारः स नष्टो बहुप्रयत्नत ।
अद्यापि किंवदन्तीय तत्पुर पोलपालकम् ॥१२॥
सूर्यपोल चन्द्रपोल पोल पोलमितस्तत ।
मध्ये चोपटाः स्फीता–श्चिर–मेताः प्रतिष्ठिताः ॥१३॥
उत्तु ग शिखरे स्रोतोऽविरत जलनिर्झरम् ।
'गलता' ख्यातनामा तत्स्खलनाना शिरोमणिः ॥१४॥

राज के सक्रेटरी, हाकिम, जजो के दफ्तरों में पेश होने वाला कोई भी पत्र गोविन्द देव जी की मुहर लगवाय बिना वहा से नही निकलता। उसके तो वह टकसाल बनगई जो रुपया पैसा उगलने लगी। (उसके पौ बारह होगये) उस पर किसी ने प्रश्न नही किया, यह राज्य के इष्ट देव गोविन्द देव की कृपा थी। कई वर्षो तक यह किस्सा चलता रहा। अन्त में बहुत प्रयत्न से यह भ्रष्टाचार हटा। परन्तु इस कथा के कारण आज भी यह कहावत है कि जयपुर पोलों का नगर है। सूरज पोल, चान्द पोल और दूसरी कई पोलें हैं। बीच में बडे २ चोपटें वर्षो से हैं। पहाड के ऊचे शिरे पर निरन्तर चलना गलता है जो गलतियो का सरदार है।

अकर्मण्याश्चिरकारिणो मन्त्रिण

अस्ति कश्चिन्महीपालो युवको मन्त्रि-पञ्चम ।
मन्त्रिणः सुहृद एव न नीतिज्ञा न कोविदाः ॥१॥
तैलक-श्चोष्ट्रपालश्च तक्षन्नुद्यान पालकौ ।
अमात्यास्तस्य नृपते-नियुक्ताः सन्धि विग्रहे ॥२॥
कस्मिन् काले समायाते सपत्नेनाततायिना ।
सीम्नोऽतिक्रमणे चारै विज्ञप्त' स जनाधिप ॥३॥
उष्ट्रपाल समाहूय कृत्स्न वृत्त निवेदितम् ।
राजा-देशोऽय नः सपत्नेन ह्यतिक्रान्तो दुरात्मना ॥४॥

काम में ढीले ढाले तथा देर करने वाले मन्त्री

एक जवान राजा था और उसके चार मन्त्री थे। मन्त्री राजा के मित्र थे परन्तु न तो वे नीतिज्ञ न विद्वान् थे। एक मन्त्री तेली, दूसरा राईका (ऊँट पालने वाला) तीसरा खाती (सुथार) चौथा बागवान था। ये ही सन्धि युद्ध आदि के सम्बन्ध में राजा के मन्त्री थे। किसी समय किसी आततायी शत्रु ने उस राजा की सीमा पार कर ली। तब राजा को उसके दूतों ने सूचना दी। राजा ने राईका

मन्त्री–अस्माभिः करणीय यत्तत् कालमपेक्षते ।
दृष्टव्या प्रथम तावन्महागस्य ममासता ॥५॥
करवर्तोऽस्य जीवस्यापसव्य चोत्तर तथा ।
मृग्यश्च वाहिनीमार्ग आततायिमनोरथः ॥६॥

राजा–मन्त्रणेय शुभा वोऽस्ति राज्ञा धन्योऽसि भाषितम् ।
द्विड्वाहिन्याऽभिनिर्याणे तैलका न्मन्त्रणा कृता ॥७॥

तैलकाः–सद्युगोपक्रमात्पूर्वं चिन्त्या सर्वा द्विप. क्रिया ।
तिलं तैल तथा धारा दृश्याऽस्माभिरहर्निशम् ॥८॥

को बुलाकर सारी बात बताई । उसने कहाकि दुष्ट राजा ने अपने राज्य पर धावा किया है । मन्त्री ने कहा महाराज, हमको जो कुछ करना है, उसमें अभी देर है । अभी तो देखना है कि किस विध बैठे ऊंठ, वह दाए या बाए बैठता है । अन दुश्मन की फौज का रुख कैसी है और उसके आक्रमण की क्या मंशा है ?

राजा ने कहा आपकी सम्मती बहुत अच्छी है आपको धन्यवाद है।

शत्रु की फौज आगे बढ आई ता राजा ने तेलो से मन्त्रणा (सलाह) की ।

नीतिज्ञ मन्त्रवेचार मत्वा त नराधिपः ।
स्थितो गृहे यथापूर्वं दीर्घसूत्रो निरुद्यमः ॥९।
तदा शत्रोरनीकस्य समरण निवेदितम् ।
तत कृषीवलो मन्त्री भेदनीतिमुदाहरत् । १०॥
एकेन क्षेत्र-खडेन परमाप्यते यथा ।
क्षिप्र तथैव भविता वैरिसैन्य-निपूदनम् ॥११॥
दुर्गे यदावरुद्ध तच्छत्रुणा शस्त्रपाणिना ।
सघातो बहु शस्त्राणां प्रारब्ध सेनया पुन ॥१२॥

तेली– राजन् युद्ध छेड़ने के पहले शत्रु की सारी चालो का विचार करना है। हमे रात दिन देखना चाहिए, जैस तिल देखो तैल देखो, तैल की धार देखो। दीर्घ-सूत्री, उद्यम-हीन राजा ने उसे नीतिज्ञ समझा और चुप चाप बैठा रहा। इसके बाद शत्रु सेना की आगे को बाढ की खबर आई। तब बागवान (या खेती हर) मन्त्रि को राजा ने बुलाया। उसने भेद नीति की सलाह दी कि ऐसा करना चाहिए जैसे क्यारी से क्यारी पिलाई जाता है। इस नीति से शीघ्र ही शत्रु की सेना खेत रह जायगी।

जब शत्रु ने दुर्ग को घेर लिया और उस पर सशस्त्र सेना द्वारा अस्त्रों की वर्षा होने लगी तब मन्त्री नामधारी सुथार को

मन्त्रि कल्प स राजा त सूत्रधार परामृशत् ।
मन्त्रि-पूर्णोच्छ्रितो दारुर्द्रो न वेध्यो वर्धकिनापि वै ॥१३॥
अधुना नास्त्युपायोऽत्र विजेतुः शरण विना ।
एव राजा पराभूतो राष्ट्रो नष्टः समृद्धिमान् ॥१४॥
परचक्र विपन्नस्य राष्ट्रस्य सचिवैः सदा ।
नीतिज्ञै-र्धीरवीरैश्च नोऽपेक्ष्य स्वसुरक्षणम् ॥१५॥
अनागत विधातारः प्रत्युत्पन्नधिय स्तथा ।
मन्त्रिणो गणतन्त्रेऽस्मि-न्नियोज्या दीर्घदर्शिनः ॥१६॥

राजा ने बुलाया। उसने कहा कि "ऊमे लक्कड पर बेध्म तो किसी मिस्त्री से भी नही हो सकता। अब तो जीते हुए शत्रु की शरण में जाने के अतिरिक्त कोई उपाय नही है। इस भांति वह राजा परास्त हो गया और उसका समृद्ध राज्य नष्ट हो गया।

शत्रु की सेना से ग्रसे हुए राष्ट्र के मं त्रियो को जो धीर वीर, नीतिज्ञ हो अपनी सुरक्षा की उपेक्षा कभी नही करनी चाहिए।

अपने गणत त्र राष्ट्र में धीर, वीर, दूरदर्शी, आपत्ति आने से पहले ही उसका उपाय करने वाले तथा तत्काल बुद्धि वाले मन्त्री नियुक्त करने चाहिये।

॥ धर्मस्य आदि स्रोतः ॥

बौद्धवादः श्रुतिच्छाया प्रतिबिम्ब जुराष्ट्रियन् ।

जुडाऽपि तत्प्रतिच्छाया क्राइष्टो बुद्धानुगः परः ॥१॥

पलैस्तीने निवसतः क्राइष्टश्छात्रः पुरे ततः ।

बुद्धस्य शासनाचारान्व्याजहार सुधी समान् ॥२॥

उभयो धर्मयो-रेते समानाः प्रतिपादिताः ।

विधिः संस्कारकर्माणि समानानि द्वयोरपि ॥३॥

धर्म का आदि स्रोत

बौद्ध धर्म वेद की छाया है और जोराष्टियन उसका प्रतिबिम्ब जुडा भी उसकी परछाई है । क्रिश्चियन मजहब तो बुद्ध के सिद्धान्तों पर चलने वाला है । पलस्तीन में रहते समय क्राइष्ट उसका शिष्य था । उस बुद्धिमान ने सारे के सारे बुद्ध के सदाचार के नियम अंगीकार किये । यों दोनों धर्म इस सम्बन्ध में एक से हैं । और दोनों की रीति भाँति, संस्कार और कर्म (आचरण) समान हैं । हां ईसाई धर्माचार में कुछ छाया यहूदियों की भी है ।

किञ्चिच्छाया यहूदीनां धर्मे क्रैस्टे प्रवर्तते ।
क्रैस्टस्य पदचिह्नान्यन्वगच्छन्मुहम्मदः ॥४॥
समञ्जस तु छायैव प्रकृतिस्तु विपर्यया ।
श्रुतयः सर्व धर्माणां स्रोतो ज्यायांश्च सर्वशः ॥५॥

क्राइस्ट के पद चिह्नों पर मुहम्मद चला । इनमें जो जो समानताएँ हैं वे छाया है परन्तु स्वभाव विपरीत हैं। श्रुति (वेद) ही सब धर्मों का मूल सोता है और सबसे उत्तम है।*

---

*श्री गंगाप्रसाद कृत The Foundation Head of Religious के आधार पर।

शेखचिल्ली

शेख चिल्लीति नामैको ना कालापव्ययकरः ।
नियुक्त-स्तैलिना चैव वहनार्थं तैलमृद्घटम् ॥१॥
शेखः प्रतिश्रुतश्चिल्लीं वेतन ढब्बुक-द्वयम् ।
मार्गे घट वहन् मूढः कल्पनातीत-कल्पक' ॥२॥
मनसा भावयेदेव भवितास्मि समृद्धिमान् ।
आढ्यादाढ्यतरश्चाह भविष्यामि सुनिश्चितम् ॥३॥
एताभ्यां ढब्बुकाभ्यां वै क्रेष्येह चरणायुधीम् ।
सार्भकाण्डां हि विक्रीय क्रेष्ये छागीं पयःप्रदाम् ॥४॥

शेखचिल्ली

शेखचिल्ली नामक एक निठल्ला आदमी था। तेल के भरे मिट्टी के घडे को उठाने के लिये तेली ने उसे मजदूर कर लिया। शेख चिल्ली को इसकी मजदूरी के दो पैसे देने को कहा। वह आसमान में महल बनाने वाला आदमी था। उसने मान लिया कि अब मैं मालदार बन जाऊंगा। निश्चय ही मैं लखपती क्रोड़पती हो जाऊंगा। इस पैसे से मैं मुर्गी खरीदूंगा। उसके अण्डे बच्चे बेच

तस्या विनिमय कृत्वा सुरभिं पालये ततः ।
पयोदध्याज्य-सम्पन्नो ह्यर्जयिष्यामि पुष्कलम् ॥५॥

द्रविणस्य प्रवृद्ध्यर्थमानयिष्ये पयस्विनीम् ।
सुपुष्टां महिषीमेकां गृहे विभवकारिणीम् ॥६॥

उद्वहिष्याम्यहं पश्चात् कन्यकां वामलोचनाम् ।
मय्यभिजनवत्येव आढ्ये सम्भ्रान्तसयुते ॥७॥

आगमिष्यन्ति गेहे मे दधितक्रादिकांक्षिणः ।
सामर्षोऽहं कलत्रं तद् भर्त्सयिष्यामि ताडयन् ॥८॥

कर दुधारू बकरी लेलूंगा। फिर उसको बेच कर गाय रख लूंगा और उसके दूध दही, घी की बिक्री से खूब पैसा कमाऊंगा। जब इतना पैसा हो जायगा तो मोटी ताजी भैंस मोल लूंगा। जिससे मेरा घर धन से भर जायगा। फिर मैं सुन्दर दुलहिन से ब्याह करूंगा। इस तरह पर मेरे प्रतिष्ठित, बड़े कुटुम्ब वाला हो जाने, पर मेरे घर पर दही, छाछ आदि मागने वाले आने लगेंगे। मैं इस बात से नाराज होकर बीबी को डाट डपट लगाऊंगा। ऐसा मन में स्वप्न देखते हुए उसने अपना सिर हिलाया, तो तेल का घड़ा छिटक पड़ा। सारा तेल बिखरना ही था और घड़े के टुकड़े

इत्थं कृतशिरःकम्प-स्तैलकुम्भं व्यसर्जयत् ।
मग्ने कुम्भे च तैले च विनष्टे तैलकः प्रभुः ॥९॥
स्वार्थहानिं परां दृष्ट्वा स्वामी चिल्लीमदण्डयत् ।
त्वया नष्टं हि मे तैलं सघटं बहुमूल्यकम् ॥१०॥
मूढ-स्त्वमसि दण्डार्होऽवदच्छेख तु तैलिकः ।
बहुला मम हान्येषा वसुपुत्र-कलत्रहा ॥११॥
अकिञ्चत्तैलभाण्ड ते वसुना मे तुलाधृतम् ।
शेखः प्रत्याचचक्षे त सर्वं नष्टं घटे स्थितम् ॥१२॥

टुकडे होने ही थे कि तेली ने उसे डाटना पीटना शुरू किया क्यो कि तेली को कांफी नुकसान हो गया था। उसने कहा मेरा घडा तथा कीमती तेल सब तैने बरबाद कर दिया। मूख तुझ को तो दण्ड देना होगा।

चिल्ली ने कहा रे तेरा नुकसान मेरे नुकसान के सामने क्या चीज है। इस घडे के आधार पर रखा मेरा सारा बना बनाया घर-बार बह गया।

इस सदभ में पेट्रोल से भरे टैंक तथा विमान सेब्र जेट तेल के घडे हैं। इनके मालिक जिन्होने ये पाकिस्तान को दिये तेली हैं।

पत्रतैल-पटाष्टैका विमाना सेत्रनेटकाः ।
तैलको राष्ट्रभृद्वृन्द पाक्यखिल्ली तु वाहकः ॥१३॥
अयूबस्य दिवास्वप्न दिल्लीशस्त्र मरीचिका ।
पुनः शस्त्राणि पत्राणि पत्रतैलप्लुतानि च ॥१४॥
मूर्ध्नं. कम्पन-नष्टानि तानुभौ स्म विषीदत' ।
विस्मयापन्नलोकोऽभूद्दृष्ट्वा चैतादृशीं गतिम् ॥१५॥

पाकिस्तान शेख चिल्ली, दिल्ली फतह करने का अयूब का मनसूबा मृगतृष्णा थी । पेट्रोल से भरे शस्त्र वाहन आदि तेल के घड़े की भाति नष्ट हो गये । यह उसका माथा ठनकने से हुआ और दोनो को अर्थात् दाना राष्ट्र तथा पाकिस्तान को बड़ा दुःख हुआ । इस तरह की इनकी गति को देख कर ससार को विस्मय हुआ ।

सृष्टिक्रमः

अब्रह्मनाद्यनन्तो हि प्रधान ससृतिस्तथा ।
प्राणिनां मानवो मुख्य आत्मा नित्यः सनातनः ॥१॥
तिर्यग्योनि समुद्भूतो मानुषो न कदापि हि ।
नत्वष्टोत्सृष्टलांगूलो न कीशप्रभवो नर. ॥२॥
दारुनिन्नेन विन्नो यः कीशस्तत्प्रपितामह ।
दारुयुग दृषद्युग ताम्रलौह–युगे तत॰ ॥३॥
क्रिमि–कीट–युग वापि ततो नर–युग कृतम् ।
कल्पनाजन्य वादोऽय सृष्टिक्रम–प्रतिक्रमः ॥४॥

सृष्टि का क्रम

परब्रह्म परमात्मा अनादि तथा अनन्त है। तथा प्रकृति भी जिसे प्रधान कहते हैं, ससार रूप हैं। जीवो में मनुष्य प्रधान है। तथा आत्मा नित्य एव सनातन है ॥१॥ इतर योनि (पशु, पक्षि) से मनुष्य बन गया यह बात कदापि नही है। बन्दर की पूछ घिस गई और वह मनुष्य बन गया, ऐसा नही हो सकता ॥२॥ डारविन ने यह कथा गढी, उसके पूर्वज बन्दर होगे। पहले लक्डी युग, फिर ताम्बे लोहे के युग आये। फिर कीडे हुए फिर मनुष्य। यह पक्ष

व्यक्तोऽव्यक्ताद्धि सभूतः स्थूलः सूक्ष्मात्प्रजायते ।
द्रव्याणि भौतिकानीह समग्राणि परात्मन' ॥५॥

क्रमेणैतेन विश्वस्य सृजन प्रभुणा कृतम् ।
कृत त्रेता तथान्यौ द्वौ द्वापरः कलि-रित्यपि ॥६॥

दयालुत्व प्रभो-रेत-त्सर्वेष्वल्पतर' कलि' ।
कल्पान्ते पुनरावृत्तिः क्रमेणाविकलेन वै ॥७॥

प्रथमः सत्यसश्लिष्टो वह्नित्रययुतोऽपरः ।
अन्तिमौ हीनताधिक्यौ न हि तत्र विपर्ययः ॥८॥

(वाद) कपोल कल्पित है और सृष्टिक्रम का उलटा है ॥३ ४॥ अव्यक्त से व्यक्त हुआ और सूक्ष्म से स्थूल, और भौतिक द्रव्य पर- मात्मा से निकले ॥५॥ इस क्रम से भगवान ने सृष्टि उत्पन्न की। कृत (सत्य) युग, त्रेता द्वापर कलि युग इस प्रकार क्रम है ॥६॥ यह भगवान् की दयालुता है कि, कलियुग सबसे छोटा है। इन चार युगों का एक कल्प होता है। उसके अन्त पर इनकी फिर इसी क्रम से पुनरावृत्ति होती है ॥७॥ पहला युग सत्य प्रधान, दूसरा यज्ञ यागादि प्रधान, तीसरे चौथे म इन बातो में हीनता आजाती है। परन्तु इससे उलटा क्रम नही होता ॥८॥ अध्यात्म-वादियो तथा

वैपरीत्य विचाराणां मौतिकाध्यात्मवादिनाम् ।
आलोकः प्रथमो जात-स्तमिस्रा तु तदानुगा ॥९॥
अहर्निश सदा तथ्य न हि नक्त दिवा तथा ।
वेदा ईश्वरनिश्वासा आर्यधर्मः सनातनः ॥१०॥
आर्या भारत वास्तव्या न कथचिद् विदेशिन' ।
भ्रांतिगर्ह्या त्यज-चिप्रमेतां शत्रुप्रमाणिताम् ॥११॥
देशभक्तिहरीं दुस्तां स्वार्थेन परिकल्पिताम् ।
पुरा निवासश्चार्याणां प्रख्याताः सप्तसिन्धवः ॥१२॥

भौतिक वादियों के विचार उलट पलट हैं । पहले प्रकाश हुआ, अ धकार उसके पीछे ॥९॥ अहर्निश-पहले दिन पीछे रात न कि पहले रात पीछे दिन वेद ईश्वर की निश्वास हैं और आर्य धम सनातन है ॥१०॥ आर्य लोगो का आदि निवास स्थान भारत है. यह जाति विदेशी नहीं । जि होने यह बात गढ़ी वे विदेशी हैं । उन्होने नि दनीय भ्राति फैलाई । यह शत्रुओं द्वारा की गई है इसे तुर त त्याग देना चाहिए । भारतीयों की देश भक्ति पर आघात करने की यह बात बड़ी बुरी है जो उन्होने अपने स्वार्थवश प्रचलित की। आर्यों का प्राचीन निवास स्थान भारत में ही सप्तसिन्धु देश है ॥१२॥

नेतुः सुभासचन्द्र बसोः प्राच्यां चन्द्रालोकः सुभासश्च

सुभासो वसु सम्पन्न-श्चन्द्रो वीरर्षभाग्रणी ।
नेतृणां परमौत्सु-क्येऽपि न सन्तोष-मवाप सः ॥१॥

किञ्चित्काल प्रतिच्छन्नो दुःशासन-बलाहकैः ।
भम्पितो रञ्जयन्भूमिं प्राच्यामाविष्कृतः पुनः ॥२॥

कृतायनक्षत्रगणैः सहोद्योगिसमादृतः ।
कृत्वा यात्रां प्रदेशेषु जर्मन्यादि पुपुत्सुषु ॥३॥

नेता श्री सुभासचन्द्रवसु की पूर्वदिशा में चान्दनी तथा प्रकाश की छटा

शुभकीर्तिमान् समृद्धिसम्पन्न वीरर्षभों के भी अग्रणी नेता जी को, समकालीन नेताओं के (अपने अहिंसात्मक आन्दोलन में) परम उत्सुक होने पर भी, सन्तोष प्राप्त नहीं हुआ। ॥१॥ अंग्रेज के दुष्टता पूर्ण शासन रूप बादलों के पीछे कुछ समय अन्तरधान रह कर अपनी मातृ-भूमि को आनन्दित करते हुए पूर्वदिशा (बर्मा, स्याम, थाई लैण्ड, मलय आदि) में प्रकट हुए ॥२॥ जिस प्रकार नक्षत्र गण चन्द्र के साथ रहते हैं उस भांति उनके शुभ कार्य में क्षत्र गण रण

तदा प्रत्यागतश्चन्द्रो वसुर्नेतायपुङ्गवः ।
आर्यसंस्कृति देशेषु जन्म-भू श्रेयसीप्सुभिः ॥४॥
प्रवासिभिश्च तन्नत्वै स्तन्त्रं तृत्वसमुत्सुकैः ।
आमन्त्रितः समायातः शुभागमनकांक्षिषु ॥५॥
राजार्यचर्स्वविधुरोऽसौ प्रगृहीत-वर्तनः ।
सुधाकरं हि राकेश-ममन्यच्चण्डदीधितिम् ॥६॥
पतिर्जापान-सेनाया इयेष समयं वसो. ।
स्वाभिमानि-सुभासेन सकृत्स्पष्ट निराकृतम् ॥७॥

प्रिय जर्मान उनमें आदर पूर्वक सम्मिलित हो गये । युद्ध निरत जर्मनी आदि देशो में यात्रा कर वह आर्यों मे श्रेष्ठ पुरुष चन्द्रमा की तरह नेताजी, अपनी जन्म भूमि भारत का श्रेय करने की इच्छा रखने वाले आर्य संस्कृति देशों मे पहुचे ॥३॥ वहा के भारतीय प्रवासी लोगो में उनके नेतृत्व की अभिलाषा थी, अतः उन्होंने नेता जी को योरोप से आमन्त्रित किया और उनके अपने बीच मे शुभागमन से उनको आनन्द हुआ ॥५॥ ग्रेट ब्रिटेन का वर्चस्व (प्रताप) अस्ताचल की ओर बढ रहा था परन्तु प्रचण्ड किरणों वाले सूर्य, नेताजी को अंग्रेज ने राकेश (रात्रि का पति) चन्द्रमा ही समझा ॥६॥ जापान के सेना पति ने नेता जी से साठ गाठ करनी चाही परन्तु—

स्वातन्त्र्यं मम देशस्य न पण्याहं कदाचन ।
मत्वेति विक्रूतिमिम बहुशः सर्वतोमुखम् ॥८॥
वीराङ्गनानां वीराणां सर्वमनहन रिपोः ।
वरूथिन्यभिचक्राम दिल्ली-विजयकाङ्क्षिणी ॥६॥
घोषन्तु 'जय हिन्देति जयहिन्द' पुनः पुनः ।
नियोजयन्तु वो देहं स्वातन्त्र्य वरदोऽस्म्यहम् ॥१०॥

स्वाभिमानी वीर वसु जी ने तुरंत स्पष्ट निषेध कर दिया। "मैं अपने देश का सट्टा पर चढाना नहीं चाहता, क्योंकि ऐसे कार्य को मैं सब तरह से धिक्कार के योग्य समझता हूं" ॥७॥ उनके द्वारा तय्यार की हुई वीराङ्गनाओं तथा वीरों की फौजें, शत्रु से करारी मुठभेड़ करने को, दिल्ली की ओर चल पड़ी, जिस पर वह कब्जा करने वाली थी ।६॥ 'जयहिन्द' 'जयहिन्द' का लगातार जय घोष करती हुई वे बढ रही थी । 'आप अपना शरीर समर्पण कीजिए' मैं तुम को स्वतन्त्रता का वर दान दूंगा ॥१०॥ चाहे इन्द्र भी हमारे विपक्ष में आवे, आप सब निर्भय होकर आक्रमण कीजिए । यदि हम खेत रहे तो स्वर्ग मिलेगा और यदि जीते तो उससे उत्तम हमारी प्यारी जन्म भूमि हमारे वश में होगी ॥११॥ अपने सेनापति नेता

वैवस्वतो विपन्नो चेत् काम्यन्तु गत-साध्वसाः ।
प्रेत्य नाक-मवाप्स्यामो विजय तद्गरीयसीम् ॥११॥

सेनान्युद्धर्पण वाक्य-मिदं शौर्य-परिप्लुतम् ।
हृदाभिनन्द्य तद्हृद्य वाहिनी प्रासरद्द्रुतम् ॥१२॥

जो का यह शौर्य सम्पन्न, तथा उद्धर्षण (कायरों में भी उत्साह फूकने वाला) वाक्य सैना के हृदय में उल्लास देता जाता था और वह सरपट कदम बढ़ा रही थी ॥१२॥

खिल पर्व

गोमाहात्म्यम्

गोपालो वृषभानुजा हलधरो गोलोकवासी विभुः।
देवानां वृषभध्वजश्च प्रमुखो गोवल्लभा यत्र वै॥
सर्वस्वं कृषकस्य लोकजननी मान्याः कृतज्ञैः सदा।
माता शैशव एव पाति मधुरं ह्याजन्म गोदुग्धदा॥१॥
पीयूषं दधिदुग्ध-सर्पिसुपलां हैयङ्गवीनं तथा।
तक्रं शक्र-सुदुर्लभं च सुलभं यस्या इहासीत्पुरा॥

गो माहात्म्य

गोपाल कृष्ण भगवान्, वृषभानुजा राधिका, हलधर बलभद्र, गोलोक वासी विष्णु और देवताओं में प्रमुख वृषभ पर आरूढ सबको गौ प्यारी है। किसान की सर्वस्व, कृतज्ञ लोगों द्वारा माता कही जाने वाली यही है, क्योंकि मा तो केवल बचपन में ही दूध पिलाती है, परन्तु गाय जन्म भर हमें दूध देती है॥१॥ खीस, दही, दूध, घी, लस्सी, मक्खन, इन्द्र को भी दुर्लभ खाद्य इस देश में इस गौ ने पहले सुलभ कर रखी थी। ये सब वस्तुएं शक्तिवर्द्धक, पथ्य, शीघ्र

वृष्य पथ्यकर सुपच्यमधुर प्रत्येकवस्तु स्मृतम् ।
सम्पन्न परिपूर्ण शुद्धमशन धेनो' पयो निश्चितम् ॥२॥
मिष्टान्न चैव पक्वान्न सिद्ध व्यंजन मेव च ।
खाद्य चोष्य न वा पेयं विनागव्य मनोरमम् ॥३॥
श्रोत्र हरति दु'स्वप्न शाकिनी–डाकिनी–भयम् ।
गोपुच्छभ्रामणेनैव सत्वर हि विनश्यते ॥४॥
गोमूत्रेण रजसा गोः कूष्माण्डा धर्मकग्रहा' ।
स्नापयित्वा विलीयन्ते हरेर्नाम्ना सह ध्रुवम् ॥५॥

पचने वाली हैं। गौ का दूध परि-पूर्ण तथा शुद्ध भोजन माना गया है ॥२॥ चाहे खाद्य, चटनी, पेय, कोई भी मिष्टान, पकान, सिद्ध सामग्री, व्यञ्जन कुछ भी हो, गोरस के बिना मनोरम नहीं बनते ॥३॥

किसी को दु'स्वप्न आते हों, उन्हें गाय के कान में कहने से वे मिट जाते हैं। शाकिनी, डाकिनी आदि का भय गाय की पूछ का भाड़ा देने से तुरन्त दूर हो जाता है। कूष्माण्ड, बालग्रह आदि भी भगवान का नाम लेकर, गोरज से स्नान कराने से शीघ्र नष्ट हो जाते हैं ॥५॥

गोदारण कृत तल्प मृदुमव शैशवे यत ।
यया लोकजनन्या सा सीता गोरक्षणी सदा ॥६॥
धान्य वपति क्षेत्रेषु पश्चाच्च परिशोधते ।
गव्य ददाति सत्सार सस्यपुष्टिकर महत् ॥७॥
भवनेषु च भूलेपो मृत्स्नया सह शोभनम्।
करीषमिन्धन शुद्ध महानस-प्रसाधनम् ॥८॥
अतिथीनां सपर्यायां देवानामचनेऽध्वरे ।
मधुपर्क पञ्चगव्य हवि पचामृत तथा ॥९॥

जिस जगमाता सीता ने गोदारण (लकीर) को शिशु काल में अपना पलग बनाया वह सदा गोरक्षणी है । बैल ही खेत में धान बोता है फिर उसे दाय करके साफ करता है। गव्य खेतीवाडी में खाद दता है और उसें खूब पुष्ट करता हैं ।७। मिट्टी के साथ गोबर का पोतना घरो को स्वच्छ सुदर बनाता है । कण्डे आदि रसोई बनाने मे इयन का काम देते हैं ॥८॥ आतिथ्य सत्कार में, देवपूजा यज्ञमे मधुपर्क, पञ्चगव्य पचामृत आदि गाय के बिना कैसे मिलेंगे । यह विद्वानो को वार वार सोचना चाहिए ॥९॥

गो का मूत्र कई रोगो में औषध का काम देता है । तथा रसादिक इससे शुद्ध किये जाते हैं । इन वस्तुओं से लोग अनेक

गां विना छत्र लभ्यानि सुधै-श्चिन्त्य पुनः पुनः ।
गदस्य मूत्रमगद रसादीनां च शोधनम् ॥१०॥
वहूनि शुचि-कार्याणि क्रियन्ते मनुजै-रिह ।
अमरेऽमरमाषायांश्लोका नेशाचि-संख्यकाः ॥११॥
वसुनेत्राणि नामानि शब्दा नेत्रेषुकाश्यपी ।
अघ्न्या माता च नाम्नी द्वे माहात्म्यं प्रतिपादिके ॥१२॥
कृष्णेनाप्यर्चितो भूभृद् गोवर्द्धन-इतीरितः ।
बभूव भूभृतां भूभृद् भूभृद्भिः पूज्यते सदा ॥१३॥

काम करते हैं। अमरकोश में संस्कृत भाषा में गो के सम्बन्ध में १८ श्लोक, ८२ नाम तथा १५२ शब्द हैं। इनमें अघ्न्या तथा माता गो के माहात्म्य के द्योतक हैं। भगवान् कृष्ण के द्वारा पूजा गया पहाड गोवर्द्धन कहाता है। यह पर्वतों का राजा है तथा राजा महाराजाओं द्वारा सदा पूजा जाता है ॥१४॥ वैतरणी नदी को पार करने के लिये गाय की पूंछ ही नाव है। इससे ही मानव को सद्गति मिलती है और गोलोक में स्थिर वास हो जाता है। गो की सेवा से धर्म, अर्थ, काम मोक्ष-इस चतुवर्ग की प्राप्ति होती है। इस प्रकार इस लोक में मनो वाञ्छित प्यारी वस्तुओं तथा उस लोक में कल्याण की प्राप्ति होती है ॥१५॥

प्राप्तु वैतरणी–पार सुतो गोलूम एव हि ।
सद्‌गति तेन प्राप्नोति गोलोके वसति स्थिराम् ॥१४॥
पुरुषार्थ–चतुर्वर्गो लभ्यते धेनु–सेवया ।
इहलोके तु प्रेयांसि श्रेयांसि ह्यपरत्र च ॥१५॥
गो शब्द उभयलिंगः कलयति कश्चिन्मूढ–स्ततो भेदम् ।
अघ्न्याया मातरि नो भेदस्याप्यस्ति ह्यवकाशः ॥१६॥
प्रातरेव हि चोत्थाय मातुदर्शन–तत्परः ।
शुभानि तस्य सर्वाणि प्रभवन्ति न संशयः ॥१७॥

गो शब्द पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग दोनो हैं— अर्थात् इस शब्द से गाय, बैल बछड़ा, बछिया सब माने जाते हैं। इनमें भेद कोई मूढ ही करता है। जिसका नाम अघ्न्या है (जिसकी हत्या न की जाय) तथा माता कहलाने वाले जीव में भेद की गुंजाइश कहां है। प्रात काल उठते ही जो गौ के दर्शन करता है उसके सब कार्य शुभ होते हैं। इसमें संशय नहीं ॥१७॥ वर्ष भर में शास्त्र में बतलाए दिनों में विधि विधान से मनस्वी लोग जगत में गौ की पूजा करते हैं ॥१८॥ सत्यव्रत बहुला गौ का चौथ को पूजन होता है। वत्स द्वादशी को बछड़े सहित इस की पूजा शुभ होती है। कपिला छठ

गोमातुः श्रद्धया पूजां कुर्वन्तीह मनस्विनः ।
शास्त्रविहित-पर्वेषु वर्षे विधि-विधानतः ॥१८॥
सत्यव्रता गौ बहुला-चतुर्थ्यां परि-पूज्यते ।
द्वादशी वत्स-नामाख्या सवत्सा-पूजने शुभा ॥१९॥
कपिला हलषष्ठ्या च कपिलापि समर्च्यते ।
पितृ-श्राद्धेषु गोग्रासो देयः प्रतिदिन शिवः ॥२०॥
पठेदेतन्माहात्म्य यः शृणुयाच्छ्रद्धया च वा ।
नश्यन्ति तस्य प्रत्यूहा अह्नि तारागणो यथा ॥२१॥

को कपिला गौ की पूजा होती है। पितृश्राद्ध में नित्य गौ ग्रास देना कल्याणकारी होता है। विवाह तथा शुभ कार्य मे गोधूलि लग्न सब दोषो को दूर करने वाला तथा सब भांति सुखकारी है ॥१९॥

जो व्यक्ति इस माहात्म्य को श्रद्धा से पढता है या सुनता है उसके सब विघ्न दिन में तारो की भांति विलीन हो जाते हैं ॥२२॥
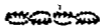
श्रीराधा माहात्म्यम्

श्रीराधे तव यत्पयोज-भजनात्सा ह्यर्ककन्या सरित्।
ग्रामे रावलगोकुले प्रतिदिन पूर्वे हरेरुद्भवात् ॥
नेनिक्त्वा चरणारविन्द-युगलं कृष्णार्भकस्य प्रभोः।
सन्तोष परम ययौ मनसि या लब्ध्वा स्वसेवाफलम् ॥१॥
कृताधिवासा शुचि धातुसानौ व्रजे परब्रह्मविहार-भूमौ।
परात्परा शक्ति-रजस्य नून तत्रास्ति लोके प्रतिपादिता त्वया।२॥

श्रीराधा माहात्म्य

हे श्रीराधे भगवान् हरि के प्रादुर्भाव के पूर्व से ही रावल तथा गोकुल में (जो आपका ननिहाल है तथा जन्म भूमि है) सूर्य की कन्या श्री जमुना जी ने आपके चरण कमलों को प्रति दिन सेवा की। उसके फल में उनको अपने पति भगवान् बाल कृष्ण के चरणों को पखार ने का सोभाग्य पाकर 'परम सन्तोष हुआ ॥१॥

परब्रह्म भगवान् श्रीकृष्ण की लीला भूमि के भीतर पवित्र ब्रह्मसानु (बरसाने) में निवास कर आपने यह सिद्ध कर दिया कि आप अजन्मा परब्रह्म की जगतमें परात्पर शक्ति हैं ॥२॥

श्रीराधिके त्वं ह्यधिकासि लक्ष्म्या
　　　　मातः श्रियं धारयसि प्रसन्नाम् ।
विभाति सत्वेन तवैव नित्य
　　　　श्यामो घनश्याम इवांशुकेन ॥३॥
रुक्म त्वदीय विदधाति रुक्मिणी
　　　　सौदामिनी सान्द्रपयोदमध्यगा ।
प्रकाशते सत्वयुता तवैव राध हि
　　　　लब्ध्वा प्रथितः स माधवः ॥४॥
सखी विशाखाऽप्यभवद् विशाखा
　　　　लालित्ययुक्ता ललिता बभूव ।
तवाष्ट-सख्यो निवसन्ति ते गृहे
　　　　विशारदास्ते प्रतिहार-कर्मणि ॥५॥

श्रीराधे, आप लक्ष्मी से भी अधिक हैं। हे माता, आप (रा) लक्ष्मी को धारण किये हुए हैं और वे इसी में प्रसन्न हैं। भगवान् कृष्ण घनश्याम पीताम्बर धारण किए हुए हैं वह आपके सत्व से ही निरन्तर चमकता है ॥३॥

जल से परिपूर्ण घन मे सौदामिनी (बिजली) है, वही मानो रुक्म (स्वर्ण) है जो रुक्मिणी देवी मे विद्यमान है। वह आपके सत्व से ही दीप्तिमान हैं। वे माधव भगवान आपके नाम से राध प्राप्त कर माधव कहलाते हैं।

निस्वार्थ-सेवया ते तु सा ललिता पुरस्कृता ।
शक्त्यार्थे वास्पद प्राप्य भूभृत्सानौ प्रतिष्ठिता ॥६॥
श्रीजिच्छ्रीलाडिलीजिच्च स्वामिनीजिच्छ्रियान्विता ।
प्राकाम्यत्व च वशित्व च ह्रीशत्व भरते स्वयम् ॥७॥
गूढा सिद्धय इतरा नापेक्षन्ते प्रदर्शनम् ।
त्वमस्याल्हादिनी शक्ति-र्वासुदेवस्य सर्वश ॥८॥
तवाल्हादोद्भवार्थे च कृष्ण प्रयतते सदा ।
मायारहिवपु-र्धृत्वा वर्हिकुर्व्या ननर्त सः ॥९॥
(राधा=विशाखा । राध, माधव वैशाख)

आपकी विशाखा (विनाशाखा वाली) सखी विशाखा (विशेष शाखाओं वाली) हरीभरी हो गई और ललिता लालित्य युक्त हो गई। आपकी आठ सखिया आपके ही घर में निवास करती हैं और आपके द्वारपालों का कार्य बडो चतुराई से करती है ॥५॥ श्री ललिता आपकी निस्वार्थ सेवा करने के फल-स्वरूप पुरस्कृत होकर शक्ति पद को प्राप्त कर पर्वत के ऊपर विराजती हैं ॥६॥

आप श्रीजी श्रीलाडिली जी तथा श्रीस्वामिनी जी कहलाती हैं अर्थात् प्राकाम्य वशित्व, तथा ईशत्व क्रमश आप में ही विद्यमान् है ॥७॥ दूसरी गूढ सिद्धियो का प्रदर्शन करने की आव-

दानमान-विलासेषु गढेष्वचल-सानुषु ।
श्रीराधेऽधिवससि त्व सद्वृत्तपरिपालने ॥१०॥
यदाचरसि मान त्व मान रक्षति माधवः।
जय्य मानगढ प्रेम्णा कुट्यां पत्या हि नृत्यता ॥११॥
नन्दाजिरे हरे-र्नृत्य मन्यते कौतुक कवि ।
गोपीभि॰ प्रेरितश्चान्यस्तक्राय स्वल्पकाय चे । १२॥
ब्रह्मसानु॰ कुलपति-र्ब्रह्मज्ञान तनोति स॰ ।
अन्तर्गणिश्च जिज्ञासु॰ श्रद्धाभक्ति समन्वित॰ ॥१३॥

इयकता न॰ी है। आप वासुदेव भगवान की आल्हादनी शक्ति हैं। आपको आल्हादित करने के लिए श्रीकृष्ण सदा यत्न करते रहते हैं और वे मोर कुटी मे मोर का रूप धारण कर नृत्य करते हैं ॥८६॥

दानगढ मानगढ विलासगढ नाम के पवत शिखरो पर आप जब जब निवास करती है तब २ सदाचार का पालन करती हैं। जब आप मान करती है तब भगवान आपका मान रखते हैं। मानगढ पर उनकी विजय तभी होती है जब वे, आपके पति, प्रेम के साथ कुटी म नृत्य करते हैं। भगवान् द्वारा नन्दराय के आगन म नृत्य को कवि कौतुक मानता है। दूसरा छछिया भर छाछ के लिए गोपिया उन्हे नचाती हैं (ऐसा कहते हैं) ॥१० १२॥

अनायासेन गृह्णाति शिक्षा गुणवतीं शिवाम्।
सांकरी-खोर शास्त्येतां सांख्य-मार्गदुरूहताम् ॥१४॥
दृषद्गुणो हि तत्रत्यो भवाब्धि-तरणोचितः।
भक्त्या स सुलभः प्राप्यो राधामाधव पूजया॥१५॥
प्रकृत्या राजते साकं माधवः पुरुषोत्तमः।
अनाद्यन्तौ विधातारौ द्वावेतावेकरूपशः ॥१६॥
साष्टादश साहस्री संहिता शुककीर्तिता।
श्रीकृष्णस्यात्मना रूप श्लेषस्तत्र न रोचते॥१७॥

यह ब्रह्मसानु (बरसाना) मानों कुलपति है और अपने शिष्यों को ब्रह्मज्ञान की शिक्षा देता है। विद्वान, जिज्ञासु तथा श्रद्धाभक्ति वाले पुरुष अनायास ही इस गुणवती कल्याणकारी शिक्षा को ग्रहण कर लेते हैं। सांख्य मार्ग की दुरुहता को साकरी खोर मानो स्वयं प्रकट कर देती है ॥१३-१४॥

इस स्थान पर पहाड में ही नौका रूप शिलातल मानो भव-सागर को पार करने के लिए भक्ति की निष्ठा से सुलभ है ॥१५॥

पुरुषोत्तम माधव प्रकृति (राधाजी) के साथ-युगल मूर्ति बरसाने में विराजते हैं। ये अनादि, अनन्त और दोनों एक रूप हैं ॥१६॥

अठारह हजार ग्रंथ वाली संहिता श्रीमद्भागवत् श्रीशुकदेव ने

तुम्यमाशङ्कया च्युत्या दाम्पत्य-सुख-सपद. ।
राधामाधवयोर्लीला गर्गेण परिकीर्तिता ॥१८॥
कुञ्ज वृन्दावनस्थ तद् सेवा कुञ्ज निगद्यते ।
प्रख्यात सेवया प्रेम्णा तव पादारविन्दयो. ॥१९॥
मातस्त्व वृषभानुजा हरिर्हलधरानुजः ।
स्नेहाधिक्य हि सहज-मुत्तमत. प्रवर्तते ॥२०॥
गोगोप्तृत्व गुणा गोश्च गोधाम्नोऽधीशता पुन ।
मकलास्ते प्रवर्तन्ते विश्वपालन हेतवे ॥२१॥
दाराधु स्तव च वेदागे सम च वृषभर्षभे ।

कही है वह भगवानका ही स्वरूप है, उसमे एक रूप होना अभीष्ट नही है ॥१७॥ ऐसा होने से दापत्य सुख की हानि होने की सभवना है। (इसीलिये श्रीमद्भागवत में श्रीराधा चरित्र वर्णन नही है) गर्ग मुनि ने राधा-माधव लीला का वर्णन अपनी सहिता मे किया है ॥१८॥

व्रज म जो सेवाकुञ्ज नाम स कुञ्ज है वह भगवान द्वारा आपके चरणारविन्दो की सेवा के कारण ही है ॥१९॥ हे माता आप वृषभ (बैल) की छोटी बहिन हो, और भगवान कृष्ण हल• धर (वृषभ) के छोटे भाई हैं। अत आप दोनो का परस्पर स्नेह अधिक होना स्वाभाविक तथा उत्तमोत्तम है ॥२१॥

१ भृणु सखि कौतुकमेक नन्द निकेतनागणे मयादृष्टम्। गोधूलि धूसरांगो नृत्यति वेदा त सिद्धा त । को घटि ये वृषभानुजा वे हलधर के वीर।

उपसंहार.

पुस्तकस्योपसहारे कले' सहार–मिच्छता ।
मयाम्यर्थयते लोकोऽखण्ड–भारत–वासिनाम् ॥१॥
शान्ति सौख्याय लोकस्य देशयोश्च विशेषतः ।
पञ्चशीलमदाचारः सौहार्दं च परस्परम् ॥२॥
जननी–जन्मभूम्या स्तौ यमजौ पाक्य–भारतौ ।
भिन्नौ प्रसवकारिण्या वामया गर्भमोचने ॥३॥

उपसहार

इस पुस्तक के उपसहार मे आपुस में युद्ध की भावना का नाश चाहते हुए में अखण्ड भारत के लोगो से प्रार्थना करता हूँ कि ससार में और विशेव कर दोनो (भारत तथा पाकिस्तान) के देशो में शान्ति और सुख के निमित्त परस्पर पञ्चशील का सदाचार तथा मैत्री का आचरण होना चाहिए ॥१–२॥ भारत तथा पाकिस्तान दानों जननी जन्म-भूमि के जोड़ला पुत्र हैं । दुष्ट प्रसवकराने वाली दाई ने दोनो में भेद डाल दिया ॥३॥ (उदाहरण के तौर पर) कागो, जर्मनी, कोरिया, वियननाम को देख लीजिए । इस प्रकार की राष्ट्रो की भेद नीति सम्बद्ध देशो को दुर्बल करने

काङ्गो जर्मनी कोर्याः वियतनाम च पश्यतात् ।
मेदनीतिश्च राष्ट्राणां नीतिर्दुर्बल-कारिणी ॥४॥
कलौ मार्जारयोः प्राप्ते न्यायाधीशः प्लवङ्गमः ।
भारतो भारतो ह्येव पाक्याभिख्या च नूतना ॥५॥
निजस्वार्थेऽपि सचिन्त्य पालनीया विशेषतः ।
युगे आणविके युद्धे सर्वनाशकर द्रुतम् ॥६॥
'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः' ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु न कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्" ॥७॥
ॐ शन्तिः शान्तिः शान्तिः ।

वाली है ॥४॥ जिस प्रकार दो बिल्लियों के झगड़े में बदर पंच बन गया था (वही बात यहां हुई है) भारत तो आखिर भारत ही रहा। पाकिस्तान नया खड़ा हो गया ॥५॥ उसको अपने हित भी समझ बूझ कर उक्त नीति वर्तनी चाहिए। क्योंकि इस अणु बम्ब के युग में युद्ध का परिणाम शीघ्र सर्वनाश ही है। भारत की संस्कृति तो कहती है कि संसार में सब सुखी रहें, सब नीरोग रहें, सब शुभ बातें ही देखें और कोई भी दुःख न पावे।

॥ ॐ शान्ति शान्ति शान्ति ॥

कविवंश–परिचयः

समरस्येतिहासेऽस्मिन्नार्याः समरपुगवाः ।
कृतकार्या बभूव स्ते रणे भङ्गो विपश्चिणः ॥१॥
दीक्षितो मूलपुरुषो मे पूज्याः समरपु गवाः ।
बादरायण–सम्बन्धात् संश्लिष्टोऽस्मि जन्मना ॥२॥
नमामि मूल पुरुष कुलस्य त मृधेतिहासस्य तथाद्यु पक्रमे ।
य' शास्त्रविच्चान्तर्वाणिषु गवोऽत्रेर्महर्षेरवतस उज्वलः ॥३॥
सुत्रैविद्यस्तिरुमल्लः पाणपट्टमुवास सः ।
पेण्यासरित्तटे याम्ये देशे तस्य सुत. सुधी ॥४॥

कविवंश परिचय

इस युद्ध के इतिहास मे आर्य लोग (भारतवासी) समर पु गव (युद्ध कुशल) थे, इस कारण अपने विपक्षी को युद्ध में पराजय करने में फलीभूत हुए ॥ मेरे मूलपुरुषों में पूज्य समरपु गव हुए। इसलिये मेरा इस कथावस्तु से बादरायण सम्ब घ ज म से ही है। कुल क उन मूलपुरुष को इस युद्ध के इतिहास के प्रारम्भ में नम स्कार करता हूँ। वे विद्वान, विद्वानों में श्रेष्ठ अत्रि मुनि के कुल के उज्वल अलकार थे। उनके पुत्र वेदविद् पेण्या नदी के तटवर्ती

द्विजानां द्राविडानां सा प्रशाखा दाक्षिणात्यका ।
तिरुम्मलस्य सत्पुत्रः श्रीनिकेतन-नामकः ॥५॥
श्रीविद्यानन्दनाथः स उपनामा विचक्षणः ।
श्रीनिवास इति ख्यातो धर्माचार्य-स्तदात्मजः ॥६॥
समाचरत्तीर्थ-यात्रां वाराणस्या-मुवास स. ।
तीर्थराजे प्रवासं स किञ्चित्कालं वथाऽकरोत् ॥७॥
दीक्षा त सुन्दराचार्यः पीठे जालन्धरे ददौ ।
श्रीविद्यायाः सपर्यायामभिषिक्तोऽन्तर्वाणि सः ॥८॥
गोस्वामिपदवाच्योऽभूद् वृतोऽन्ते-वासिभिः पुनः ।
जगन्निवास इति ख्यात-स्तत्सूनुर् पपूजितः ॥९॥

दक्षिण देश में पाणपट्ट नगरके निवासी सुधी हुए । वहा इन द्रविड विप्रोंकी दाक्षिणात्य शाखा रहती थी । तिरुमल के पुत्र श्रीनिकेतन थे उनके पुत्र श्रीनिवास उपनाम श्रीविद्यान द नाथ विद्वान् तथा धर्माचार्य थे । वे तीर्थयात्रा के मध्य वाराणसी म आये तथा तीथ राज प्रयाग में भी कुछ काल रह । जालधर पीठ मे उनको श्रीसु दरा चाय ने श्रीविद्या देवी की सपर्याकी दीक्षादी ॥१-८॥ वहा उन्हें गोस्वामी पदवी प्राप्त हुई और उनके अनेक शिष्य एकत्र हो गये। उन शास्त्रज्ञ विप्रके जगन्निवास नाम के पुत्र हुए जिनको राजाओं

गिरोमणि-शिवानन्दौ द्वे नाम्नी ह्यग्रजस्य च ।
जनार्दनश्चक्रपाण्यवरजौ द्भूसुरौ ॥१०॥
सर्वशास्त्रविदः सर्वे यथानामा शिरोमणिः ।
चन्देर्यधीश्वरो राजा देवीसिंह सहात्मजः ॥११॥
आमेराधीश्वरो विष्णु-सिंहोऽनूपश्च दीक्षितौ ।
तेन तस्य सुतो विद्वान्नपरः श्रीनिकेतनः ॥१२॥
राधाश्रीरमणे द्वे च नाम्न्येकस्यात्मजस्य ते ।
सहोदरो रमारमणो द्वावेतौ सुविचक्षणौ ॥१३॥

ने पूजा की। इनके बड़े पुत्र शिरोमणि (उपनाम शिवानन्द) तथा छोटे जनार्दन तथा चक्रपाणि दो पुत्र हुए। ये सब भूदेव शास्त्रज्ञ थे परन्तु शिरोमणि अपने नाम के अनुरूप हुए। चन्देरी के महाराज देवीसिंह तथा उसका पुत्र, जयपुर नरेश विष्णुसिंह तथा बीकानेर नरेश अनूपसिंह सब भक्ति पूर्वक इन लोगों के शिष्य हुए। शिवानन्द के पुत्र श्रीनिकेतन (द्वि०) थे। उनके दो पुत्र राधारमण (उप० श्रीरमण) तथा रमारमण दोनों विद्वान् हुए। श्रीरमण के पुत्र श्रीनिवास हुए। उनके पुत्रों में विद्वान् सदासुख हमारे पूर्वज थे। उनके चक्रपाणि (द्वि०) उनके कुन्दनधर, उनके गिरिधर पुत्र हुए।

द्वितीयः श्रीनिगमाख्यः श्रीरमणात्मजोऽभवत् ।
तस्यात्मजेषु पुरुषो नः सदासुखकोविदः । १४॥
सदासुखस्य य' सूनुश्चक्रपाणिरितीरित ।
तस्मात्कुशलधरो नाम गिरिधरश्च तदात्मजः ॥१५॥
लालकौ द्वौ सुतौ तस्य सोहनश्च सलोहनः ।
सोहन लाल स्य पुत्रोऽहं प्रणमामि गुरूनिह ॥१६।

गिरिधर के सोहन लाल, सलोहनलाल दो आत्मज हुए। श्री सोहन लाल का पुत्र मैं अपने पूर्वजों को प्रणाम करता हूँ।

(पूर्वजों के ग्रंथों से दिये उद्धरणों का भावानुवाद करना पिष्टपेषण होगा।)

पूर्वजानां ग्रन्थेषु निम्नान्युद्धरणानि प्रमाण रूपेण उदाहरामि-

देशोऽस्ति दक्षिणदिशि द्रविडाभिधानः काञ्चीति यत्र वसतिः स्मरशासनस्य । ' पाणपट्ट इति विश्रुतः क्षिति तले पेण्णानदीतीरभूः । षट्शास्त्रनिस्ममरपुगव दीक्षितोऽभूत् । ' तस्यात्मज सोमाध्वरी श्रुविविदुरमल दीक्षितोऽभूत् । तन्नन्दनः सकलवेदविदां वरिष्ठ' श्रीनिकेतन इति प्रथितोऽध्वरीन्द्रः । ' तत्सूनुः श्रीनिवास' पीठ जालन्धराख्य प्राप्य श्री सुन्दराख्य सकलगुण निधि प्राप

सद्शिकेन्द्रम् । श्री श्रीनिवास तनयस्तु जगन्निवास । विद्या-वन्त' मन्त,स्त्रयोगजा-स्तस्य जज्ञ तति । ज्येष्ठः शिरोमणि जंयति । पूज्यः सर्वनृपाणां चेदि जयपुर विक्रमेशानाम् ।
कनिष्ठ-स्तस्मा-ज्जनार्दन इति ह्यनु चक्रपाणिः '' ।
श्री श्रीनिकेतन इति स्मरतुल्यरूपः । ज्यायान् सुतस्य सुत उग्र महोग्रतेजाः । श्रुति-स्मृती चास्य सुतद्वयी ततः । ज्येष्ठो रमारमण इत्यपर, श्र राधारमण एव मुद वितेने । तदग्रभूतो ऽन्यगुणैः प्रशस्यः श्री श्रीनिवास इति प्रसिद्ध । तस्माद्जात-पत श्रीजनपति मान्या सुता श्चत्वारः । ज्येष्ठो जगन्निवास-स्तदनु च जातोऽनिरुद्ध नामाय । तस्माद्भूत्कनिष्ठ, सदा-सुख, परमसुख-स्तस्मात् ।

(नाम्नां पुनरावृत्ति' कुलपरपरा वर्तते ॥)

वंशवृक्ष यह है — श्री समरपु गव दीक्षित
|
निरम्मल दीक्षित
|
श्री निकेतन दीक्षित
|
श्री निवास गोस्वामी
(जालधर पीठ म श्री सु दराचाय से श्रीविद्या की दीक्षा ली)

जगन्निवास गोस्वामी (च देरी महाराज के गुरु)

शिवानन्द गोस्वामी जनादन गो चक्रपाणि गो
(च देरी, जयपुर बीकानेर महाराजाओं के गु

श्रीनिकेतन गोस्वामी

श्रीरमण (राधारमण) गोस्वामी

श्रीनिवास (द्वि०) गोस्वामी (बीकानेर म निवास)

सदासुख गोस्वामी

कुशलधर गोस्वामी

गिरिवरधारी गोस्वामी

सोहनलाल गो सलोहनलाल गो

फाल्गुन (ग्र थ कर्ता) आशुकरण विष्णुदत्त

परिशिष्ट

आदर्श-कौतुकम्

आदर्शो मुकुरो वा नृणां मुखप्रेक्षणे सत्कर्मानुराश्च-मत्कर्मनिरति-प्रेरक वस्तु अस्ति। तत्प्रेरणालब्धपुरुषाः ससारे आदर्शाः प्रभवन्ति। भारतीया महर्षयोऽन्तेवासान् सदाचारशिक्षानिमित्तमुपदिशन्ति स्म। परमोदात्तचरितै-रपि अयमुपदेशो भारतवर्षस्य जगद्गुरुत्व प्रतिपादयति। "यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नो तराणि"

परिशिष्ट

आदर्शों का कौतुक

आदर्श मुकुर मनुष्यों के लिए अपना मुख देखने का साधन है। इससे अपने स्वरूप के निरूपण के लिए सत्कार्य में प्रवृत्ति बुरे काम से मुखमोड़ने की प्रेरणा लेनी चाहिए। ऐसा करने वाले पुरुष ससार में आदर्श हो जाते हैं। भारत के महर्षि अपने शिष्यों को सदाचार की शिक्षा के निमित्त उपदेश कर गये हैं। परम उदात्त चरित वालों की ये शिक्षाएं भारतवर्ष का जगत् का गुरु होना

'मनः पूत समाचरेत्' 'सत्यपूतां वदेद्वाच.' इति महा-मन्त्रे स्मरणीये ।

आदर्श-प्रतिपादकोऽय "जय भारतादर्शः" ग्रन्थः । अस्मिन् आदर्शानां सघर्षकथा ग्रथिता अस्ति । वगला देशोपरि पाकयस्य परमनृशसतापूर्ण – शासनोन्मूलनार्थं शासकस्यो-त्पादित एव प्रजया सघर्षः समजनि । दिष्ट्या जयभारतादशस्य प्रकाशान्तर एवाय-मितिहासोऽघटत । अस्मिन्नरसहारात्याचारानाचारव्यभिचाराणां पराकाष्ठाऽ-वर्तत ।

सिद्ध करते हैं। "जो जो हमारे सुचरित हैं वे ही अनुकरण करने योग्य है। दूसरे नहीं। 'मनमें जा बात पवित्र है उस करो।' 'सत्य से पवित्र की हुई वाणी बोलो।" ये महाम त्र याद रखो।

आदश का प्रतिपादक यह 'जय भारतादश ग्र थ है। इसमे आदर्शों के सघर्ष की कथा कही गई है। बगला दश पर पाकिस्तान के परम नृशसता पूर्ण शासन को जड से उखाड फेंकने के निमित्त शासक की करतूतो से पैदा किया प्रजा का सघर्ष हुआ। सौभाग्य से 'जय भारतादश' के प्रकाशन के बीच ही यह इतिहास हुआ।

कुतस्त्यामि-रिष्टिकामि' कुत्रत्यैः प्रस्तरैस्तथा ।
महिलया भानुमत्या मकुल निर्मित कुलम् ॥१॥
विद्वेषबीजवपनेन समुद्भवो द्रुमो देशो हि भारतपुत्रकोऽयम् ।
विपाकपाको विषवृक्ष एव निरतर भारत भूम्यरातिः ॥२॥
अनकवार कृतसीमलङ्घनो-ऽकारण चायोघनतत्परः सः ।
सनातनः सैन्यप्रशासकोऽसौ बलाधिकारी परिपूर्ण ईशः ॥३॥
जनतन्त्रवाद प्रलपन् मुहुर्मुहुः प्रधानचयनस्य विलोपन ततः ।
वगप्रदेशे दमनेनदीने गोदोहन लोप्त्रसम हि शासनम् ॥४॥
उसमें नर सहार, अत्याचार, अनाचार, भ्रष्टाचार, व्यभिचार की पराकाष्ठ हो गई ।
"कहीं को ईट कही का रोड़ा, भानुमती ने कुनबा जोड़ा' ॥१॥

ईर्षा-द्वेष के विषबीज से उत्प न यह वृक्ष भारत का ही बच्चा है । ऐसे बुरे बीज से उत्प न यह विष वृक्ष लगातार भारत का शत्रु रहा है ॥२॥ इसने अनेक बार भारत की सीमा का उल्लघन किया और बिना कारण ही इसके साथ कलह मोल लिया । वहा सदा से सेना का शासन रहा और सेनाध्यक्ष ही निरकुश स्वामी रहा ॥३॥ वहा जनतन्त्र की स्थापना की झूठी डींग बार २ हाकते रहे परन्तु प्रधान के निर्वाचन का नाम नही लिया । बगला देश को तो दमन के साथ लूटेरो की भाति दुहा ॥४॥ वहा के शासकों ने

शामकः सः --

चगेजतैमूरहलाकुतुल्यां नृशंसतां पूर्णतया व्यवाहरत् ।
सर्वे विपन्नाश्च प्रपीडिता जना भूत्वा प्रपन्ना जनिभूविनिर्गता ५
निष्प्रोषिता भारतभूमिमध्ये रक्षो यथा सन्तत्रिर्मीषणोऽसौ ।
लोका सहस्र ह्ययुत प्रपन्नाः समागताः कोटिश सत्यकास्ते ।६।
देशः शरण्यो भरतस्यजन्मभूर्न प्राप काञ्चित्तन्वीं विभीषिकाम् ।
प्रपालयद् भूरिमहिष्णुतां सम नियन्त्रितासनुकम्पनयुक्तवृत्त्या ।७।
अवताररामकृष्णादितः प्राकृतजनपर्यन्त शरण्या
भारतस्यादर्शाः । नृशंसतापघोषानां मिथ्यालीकभाषिणां

चंगेज खां, तैमूरलंग, हुलाकू को आदर्श मानकर यहां क्रूरता का व्यवहार किया। प्रजा जन विपत्ति-ग्रस्त शरणार्थी बन कर अपने देश को छोड़कर भारत भूमि में खदेड़ दिये गये जैसे रावण ने भक्त विभीषण को भगा दिया था ।।५-६।। ये शरणार्थी क्रमश: हजारों लाखों की सख्या में धड़ाधड़ आते गये। यहां तक कि एक करोड़ के लगभग हो गये। भरत-पालन करने वाले-इस देश शरण्य भारत ने इससे कुछ भयभीत न होकर बड़ी सहनशीलता से और सहानुभूति के साथ इनका पालन पोषण किया ।।७।।

अवतार राम कृष्ण आदि से लेकर साधारण जन तक भारत

प्रचार निराकर्तु तया यथार्थं वृत्त प्रचख्यातु भारतस्य प्रधानमन्त्री प्रियदर्शिनी भारती इन्दिरा श्रीधीरूपिणी वृहद्देशराष्ट्रभूतां उद्बोधनाय तीर्थाटनमिव कतिपय देशान् जगाम—

इन्दिरा भारती शक्ति रिन्दिरा स्वयमेव हि ।
प्रदर्शितु वेदादर्शं राष्ट्राणां सन्निधिं गता ॥१॥

तत्र मां उवाच—

प्रमाद–रहिता भूत्वा रजोविद्वे परर्जिता ।
स्वात्मरूप प्रपश्यन्तु सस्पृह ,सम्मुख पुनः ॥२॥

के गरण्य श्रादर्श हैं। नृशसता पूण पापी, मिथ्या बोलने वालो के प्रचार को रोकने के लिए तथा यथार्थ बात का ज्ञान कराने के लिए भारत की प्रधान मंत्रि प्रियदर्शिनी भारती इन्दिरा लक्ष्मी तथा सरस्वती रूपिणी बडे २ राष्ट्रों को समझाने के लिए तीर्थ यात्रा की भांति कई देशों को गई।

लक्ष्मी, सरस्वती तथा काली रूपा–स्वयं नाम से भी लक्ष्मी–भारत के आदश का ज्ञान कराने के लिए राष्ट्रों को गई। वहा उन्होने कहा—

संयुक्त-राष्ट्राणां ससद्-सुरक्षापरिषच्च आदर्शं विहाय छायाचित्रस्य (फोटो) मध्ये नगतिरन-ममज्जन् । तत्र शीर्षासन-स्थित आत्मनो रूप-मवलोकयन् । अतः तेषां दोषदृष्टि-स्तु निश्चिता—

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धा वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम् ।
नासौ धर्मो यत्र न सत्यमस्ति, न तत्सत्य यच्छलेनाभ्युपेतम् ।१।

अन्यच्च-धर्मं यो बाधते धर्मो न स धर्मः कुधर्म तत् ।
अविरोधात्तु यो धर्मः स धर्मः सत्यविक्रम ।।२।।

प्रमाद रहित रजोगुण तथा द्वेष ईर्षा त्याग अपने सात्विक रूप को न्याययुक्त वस्तु की आकांक्षा से देखिये । संयुक्त राष्ट्र सभा तथा सुरक्षा परिषद् ने आदर्श को छोड़कर फोटो मे नेगेटिव की भांति शीर्षासन में अपना रूप देखा (तथा अकर्मण्य रहे)। इसलिए उनकी दृष्टि निश्चय ही दोष पूर्ण रही।

जहां वृद्ध नही वह सभा नही। जो धर्म की बात न कहें वे वृद्ध नही। वह धर्म नही जिसमें सत्य नही हो। जो छलकपट से सना हो वह सत्य नही होता। और भी, हे सत्यविक्रम जो धर्म में बाधा डाले वह धर्म नही कुधर्म है। जिसमें इस प्रकार का विरोध न हो वह धर्म है।

पुनश्च- वर्धत्यधर्मेण नरस्ततो भद्राणि पश्यति ।
ततः सपत्नाञ्जयति समूलस्तु विनश्यते ॥३॥

गणतन्त्राधिपोऽमेरिकाराष्ट्रपति-नवोदितस्य गणतन्त्रस्य जन्मक्षणे कि न निष्चणः। तथा तस्योन्मूलन-तत्परस्या-घौघपरायणस्य नृशंसजनसंहार-कर्तुः शस्त्रास्त्र सहायकः कस्यादशमाचरति स्म सःस्वदेशस्य आंग्लशासनात् स्वातन्त्र्य-लाभ कथां कथं निस्मरति। आंग्लशासकस्य पेयवस्तु-टीपण्य निरोध विषये प्रजा उपद्रुद्राव। फ्रांसस्पेनयो ब्रिटिश-

फिर भी— मनुष्य अधम करके बढता है, फिर उसके अच्छी बातें होती हैं और वह शत्रुओ पर भी विजय पाता है। परन्तु अन्त मे जड-मूल मे नष्ट हो जाता है।

गणतन्त्राधिप अमेरिका का राष्ट्रपति बगला देश नवोदित गण-तन्त्र के जन्म उत्सव पर कैसे उत्साह हीन न हो। तथा उसके जड से विनाश के लिए तत्पर पापपुञ्ज, नृशंसतापूर्ण नर-सहार करने वाले को शस्त्रास्त्र की सहायत दी। इसमे किस को आदर्श माना। वह अपने देश के अंग्रेज शासन स स्वाधीनता पाने की प्राप्ति का इतिहास क्यों भूल गए। अंग्रेज से वहा पान की वस्तु चाय के

—सपत्नयो सहायेनामेरिका स्वातन्त्र्य-मलभत ।
आयोधन तु योधानां सामान्यो विग्रहः किल ।
अप्रतिरूपोऽभिनवो कलहो वगवासिनाम् ॥१॥
द्विजातिवादः प्राक्तनो मूलतो भारते मृषा ।
कौतूहल महत्त-स्मिन्नादर्शानां कदम्बके ॥२॥
प्राच्यां चाऽपि प्रतीच्यां च द्व एवोपवर्तने ।
पोपकः शोपक स्तावत् क्रमशोयावधि परम् ॥३॥
निष्ठुर निर्घृण राज्य वगदेशस्य शोपकैः ।
दुःशासन तितिक्षायां मुपजग्मु प्रजास्ततः ॥४॥

व्यापार के विषय में झगडा हुआ। प्रजा के उपद्रव में ब्रिटेन के शत्रु स्पेन तथा फ्रास की सहायता से अमेरिका स्वतन्त्र हुई।

फौजों के परस्पर युद्ध को विग्रह कहा जाता है, परन्तु बग वासियो का कलह अनुपम अनोखा था। भारतवष मे पहले प्रचलित दो जातिवाद झूठा था। उसमें जो आदर्शों के कारण पाकिस्तान के पूर्वी तथा पश्चिमी दो भिन्न २ देश रहे, उनमें पूर्वी पोषक एव पश्चिमी शोषक रहा। पश्चिमी पाकिस्तानी शोषकों का पूर्व बगाल

व्यत्यये सर्वजनमा न भूयादुनिचार्य च ।
छद्मास्पुपत्तं गणतन्त्र तेन तत्र हि घोषितम् ॥५॥
निर्वाचन सदस्यानां तेषु राष्ट्रपतेस्तथा ।
बाहुष्ठमतनेतारं बगदेश निवासिनम् ॥६॥
अवामीलीगनेतार मु मुज्ज्वलन्जीविनम्।
रहमानं निगदसम्मान-समर्पदं बहुमत्त्वया ॥७॥
कारागृहे कालकूटया दुर्धर्षो बन्धनालये।
निरपराध नरय त कृतागस्मम मृषा ॥८॥

पर निष्ठुर तथा निर्दय शासन किया जा रहा था। उसको हटाने के लिए प्रजा म क्रांति हुई। १४॥ उसके कारण प्रजा का क्रोध अधिक बढ़ जाय इस विचार से राष्ट्रपति ने छलछद्म से गणतन्त्र की घोषणा करदी। तब सदस्या के तथा राष्ट्रपति के चुनाव में सर्वाधिक मत जीतने वाले बगाली अवामी-लीग के नता-शेख मुजीबुर्हमान का, जिसका उज्वल आचरण है तथा जनता में सम्मान है झूठा दोष लगाकर कैद की काल कोठरी म बन्द कर दिया। उस निरपराध को अपराधी की भांति बांध दिया। यह दिखाने के लिए कि वह दोषी है और कानूनी कार्रवाई पूरी की जा रही उसकी वकालत के लिए वकील नियुक्त कर दिया। उसने कहा कि मैं मरे हुए

[क्र-

प्राड्विवाक व्यवहारस्य विधिज्ञस्य सहायकम्।
यान्कोलार्क नियुक्तैक पृच्छा का न्यूनताऽभवत् ॥६॥
नाहं शक्नोमि प्रतिपत्तुमनुबन्धस्य प्राणिन।
जीवितस्य सुजीवम्पऽऽगतत्रासात् बलीयसी ॥१०॥

गणतन्त्रव्यपदेशो राष्ट्रधीशाहं कारागृहबन्धनार्हमिव दर्पयित्वा प्रचुरतर-शस्त्रास्त्र-सन्नद्ध-सैन्येन्या बंगदेशे अप्रतिहतहिंसात्याचारे निरीहजनतया स्वातन्त्र्यमिलापया मातृभूमि-प्रेम्णा सघर्ष समजनि।

आदमी को बरदाश्त नहीं कर सकता। उस समय बड़ी भारी त्रास का थी कि शेख को मारडाला गया है।

इस प्रकार जो राष्ट्र का प्रधोश्वर होने का अधिकारी था उस झूठा दण्डाह बनाकर शस्त्रास्त्रों से लैस अपनी सारी सेना द्वारा बगाल में निरङ्कुश हिंसा तथा अत्याचार प्रारम्भ किया गया। उस पर स्वतन्त्रता की अभिलाषी प्रजा ने अपनी मातृभूमि के प्रेम से उसके विरुद्ध सघर्ष छेड दिया।

फल स्वरूप एक करोड के लगभग शरणार्थियों को भारत में धकेल दिया गया। भारतवर्ष ने शुद्धभाव से उनका पालन पोषण लम्बे समय तक किया।

फलतः कोट्यावधि-शरणार्थिनां भारते प्रवासोजायत । भारतवर्षे तेषां सौहार्दपूर्णं परिपालनं चिरकालं अभूत् ।

पाक्य-द्वारा मा तस्य पूर्णा असूया । तेन कृत सीमा लंघन, ग्रामेषु अग्न्यास्त्र वर्षणम् । ततः विमानैर्युगपत् भारतस्याखिल-विमानस्थलेषु बम्बासारः कृतः ।

भारतीय-विमानपृतनया अमेरिकादिबृहद्राष्ट्रैः काम्य-दाने प्राप्तानां पाक्य-विमानानां पूर्णः पराभवः सम्पादित । पाक्यस्येदं आचरितं अग्रेसरेणाततायिना रणं घोषितम् ।

पाकिस्तान द्वारा भारत की प्रशंसा करने के स्थान में निन्दा की । साथ में उसने भारत की सीमा लांघकर गावों में गोलियां बरसाईं । फिर अपने विमानों द्वारा भारत के विमान स्थानों पर एक साथ आक्रमण कर बम्ब बरसाए ।

तब भारतीय विमान टुकड़ों ने अमेरिका से काम्य दान में मिले विमानों का पूर्ण पराभव किया । पाक्य की यह कारवाई आगे बढ़कर आततायीपन तथा युद्ध घोषणा थी । शत्रु ने अपनी ओर से भारत को परास्त करने का सोचा था । परन्तु हुआ उसका उलटा । उसका एक मात्र पोत सस्थानक राची राख का ढेर हो गया । वास्तव में शत्रु की

भारतस्य पराभव-चिकीर्षुः पाकस्तत्र स्थाने विपरीत परिणाममपश्यत् । स स्वस्यैकमात्र पोतमस्यान वरार्चा भस्म-साज्जातमपश्यत् । वस्तुत-स्तस्य जलनभः-शक्तिः पगु संजाता । नवजात शिशो' षष्ठ्यां पयः पानमिव पाकस्य दुरूहा गतिरभूत् । स्थलरणांगणेऽपि शत्रो सेनायारणे-भंगोऽभवत् ।

बंगलादेशे मुक्तिवाहिनी नृशसाना माततायिनां आस्यभ-जन समर्था बभूव । सक्करगढे ढाकायां च पाक्य-वरूथि-न्या घोर-तराभिषेणनमपि भग्नोद्यममजायत । ढाकाराज-

जल तथा आकाश की शक्ति पगु हो गई । उसको छठी का दूध याद आ गया। जमीन पर भी उसकी सेना के दा त खट्टे कर दिये गये ।

बगला देश की मुक्ति वाहिनी भी नशस आततायी पाक सेना का मुह तोडने में समथ हुई । सबकरगढ ढाका आदि मे शत्रु का घोर आक्रमण भी पस्त हो गया। ढाका में उसने सकुल रण छेडा । भारतीय सेना ने ढाका का पूरा मुहासरा किया (घेरा डाल दिया) हमारे सेनाध्यक्षो ने शत्रु को स देश भेजा कि यदि आप प्राण बचाना चाहते हैं तो आत्मसमपण कर हथियार डाल दो।

धान्या च शत्रुणा सङ्कुल रण निदिष्टम् । भारतीयाहिन्या तन्नगर पूर्णतया परिवेष्टित । सायुगीनैरस्मद् सेनाध्यक्षैः शत्रुः समादिष्ट यत् युद्ध प्राणत्यागात् पर आत्मसमर्पण श्रेयो यदि यूय जीवितु इच्छथ । अभियाने मति वय दुर्विनीते वाहे कशाहेतिरिव । मम नाम मानेकशा अस्ति । लक्षावधि शत्रु वरूथिनि निरशस्त्रा भूत्वा भारत-सैन्य-शरणे समायाता ।

युद्धारमान्तर एव संयुक्तराष्ट्र-सभाया सुरक्षापरिषदि च विटोपम्या' प्रस्तावा. प्रस्तुताः । ते वीटो योगात् रूसराष्ट्र

झगडा करोगे तो हम बिगडे घोडे के लिए चाबुक वाले की भाति बर्ताव होगा । प्रधान सेनाध्यक्ष ने कहा मेरा नाम मानेकशा (घमण्ड पर चाबुक' है । तब एक लाख के लगभग पाक सेना निहत्थी बनकर भारती सेना की शरण में आ गई ।

युद्ध प्रारम्भ होते ही सयुक्त राष्ट्र सभा तथा सुरक्षा परिषद् में वीटो के समान प्रस्ताव उपस्थित किये गये । रूस के प्रतिनिधि ने उनको वीटो द्वारा निषिद्ध कर दिया । वहा प्रश्न उठा कि बुद्धदेव के समान मानी दयालु कौन है । समझदारों ने देख लिया कि इसका उत्तर प्रश्न में ही विद्यमान है । यानि रूस-राष्ट्रपति कोसिजिन ही है।

-प्रतिनिधिना निरिपूणाः । अत्र भारतीयाद्-नमन्ना
कोऽमिजिन इव पुरुष इति पृष्टा भवन्ति । तत्र किं
विमुक्त यत् पृच्छमानेन तद्गुर वदन इति । स मत्सुतो
जिनो बुद्धदेव इव कात्रिगिनो स्वगात्रारिरक्ति ।

कौशिजिन. कर्मनिष्ठः सत्यनिष्ठ उदारधीः ।
नृशंसानामभिघाति शुद्धो परमः सुहृद् ॥१॥
अयोगवाहा सा सन्धिः सिनो अमेरिका कृता ।
सिनो हों वा कोऽप्येकः जयन्तः पाकशासनिः ॥२॥

कौशिजिन कर्मनिष्ठ सत्यनिष्ठ तथा उदार बुद्धि वाले हैं। वे नृशंस पुरुषों के शत्रु एवं मित्रों के परम मित्र हैं ॥१॥ सिनो-अमेरिका सन्धि अयोगवाह है (इस कारण उसकी दृष्टि दोष पूर्ण है) जयन्त (इन्द्र के पुत्र ने कौवा बनकर श्री सीता जी के चोंच मारी थी। इस अपराध में भगवान् ने उसे काना कर दिया) पाकशासन के पुत्र (प्यारे) की भी यही गति हुई।

शत्रु का बल (सहायक सहायक) रिप-वनिवन का एक अणु भी उपेक्षा के योग्य नहीं (उससे सावधान रहना चाहिए। वह चीन की पुरानी बहुत बड़ी अच्छी दिवार थी, जो संसार के

रिपुबलकणो निक्सनो न उपेदयः । स चीनस्य समीचीन प्राचीन वृहत् प्राचीन पृथिव्यामेक कौतुक दृष्टु गतः । श्रात्मकृतानि कौतुकानि स्वय उपन्यस्तानि प्रदर्शितु-मैच्छन् राष्ट्रमूर्न्निकूसनः । सहस्राचेन्द्रसेनोऽह–प्रियः केन-र्डिडिम घोषेण रहस्योद्घाटन कृतम् ।

(१) स्पेन–फ्रांस सहायेन निजस्वातन्त्र्योपलब्धिः । भारतस्य वगमहाय विरोध ।

(२) चीन–राष्ट्रस्य स्थाने सुचिर फोरमोसा–मान्यता ।

(३) कोर्यायां वियतनामे तैवाने स्वसेनायां स्थितौ सोनार

श्राश्चर्यो मे एक है दखने गया । उसने श्रपने ही किए श्राश्चर्यों का प्रदर्शन करने की इच्छा की । सहस्राक्ष (हजार श्राख वाले) इन्द्रसेन (ए इसन) उसके प्रिय हम्फ्री तथा केनडी (या भगवान्) ने डिडिम घोप स निक्सन के रहस्यो का भण्डाफोड किया ।

(१) स्पेन फ्रास की सहायता स जिस स्वतन्त्रता मिली वह भारत द्वारा बगला देश की सहायता का विरोध करे !!

(२) चीन के स्थान पर फोरमूसा को लगातार चीन मानते रहना ।

(३) कोर्या वियतनाम तैवान में श्रपनी सेना रखकर भारत का

वगलादेशस्य अमान्यता यावत् भारतस्य एकतम-
सैनिकस्य स्थितौ ।

(४) ससारेऽपूर्वानुपम शरएयत्वे भारतस्य सहायोपरामः ।

(५) नृशमजनसहारकस्य शस्त्रास्त्रैः प्रच्छन्न-सहायः ।

(६) निजपोष्यस्य तैवानस्याधिपस्य विरोधे चीन प्रति
प्रेमापाङ्गानि ।

(७) स्वराष्ट्र जनानां प्रतिरोधे सति भारतविद्वेष-पूर्ण-
चेष्टितानि ।

(८) अष्टम पोतपृतनाया वगापकार कर्तु वगाखाते प्रेषणम् ।

एक भी जवान रहे इस बहाने से वगला देश को मा यता न देना।

(४) ससार में अपूव, अनुपम शरणागत पालन पर भारत की
सहायता बन्द ।

(५) नृशस मनुष्यो की हत्या करने वाले को शस्त्रास्त्र सहायता ।

(६) अपना ही पालतू तैवान के विरोधी चीन से प्रेम की पींगें ।

(७) अपने राष्ट्र की जनता के विरोध करने पर भी भारत से
साथ द्वेष पूर्ण करतूतें ।

(८) वगदेश का अपकार करने को अपने अष्टम बेडे को बगाल

एतानि जगत्यां कौतुक सख्या समानि अष्टौ कौतुकानि।
अन्यानि चापि अष्टौ —
यथा–(१) वगलादेश स्वातन्त्र्य-सघर्षः।
(२) गणतन्त्र–छद्‌मना वर्हिष्ठमतजेतुः काराग्रहे बन्धनम्।
(३) पाक्याधिपेन देशे अप्रतिहत-जन सहारः।
(४) वगलादेश-प्रपन्नानां भारतशरण्यता।
(५) पाक्य द्वारा भारतोपरि एकपदे आक्रमणम्। भारतेन कृत स्तत् पूर्णपराभव.।

की खाडी में भेजना ससार के आश्चर्यों के बराबर आठ कौतुक दूसरे और भी आठ य हैं–
जैसे—(१) वगलादेश की स्वतन्त्रता की लडाई।
(२) गणतन्त्र के छल से सर्वाधिक मत जीतने वाले को कैद।
(३) वगलादेश में बे रोक टोक लोगों की हत्या।
(४) वगलादेश के शरणार्थियो का भारत द्वारा पालन पोषण।
(५) पाक्य द्वारा भारत पर एक दम आक्रमण। भारत द्वारा उसको सर्वथा पस्त करना।

(६) भारतेन जिष्णुना एक पक्षा रणविरति ।

(७) मुजीबुर्रहमानस्य प्राणत्राणम् ।

(८) एक लक्ष पाक्य योधाना–मात्मसर्पणम् ।

भुरत् भरौट भाषायां, भृष्टः सस्कृत–वाचि च ।
प्राकृते प्रथितो भुट्टो भ्रष्ट आचरणे पुनः ॥१॥
बहुरूप-ताण्डवकृत् कटकी च समतत ।
आचरेच्चावधानेन मित्र वामित्रसन्निभम् ॥२॥

(६) विजयी भारत द्वारा एक पक्ष से युद्ध व दी ।

(७) मुजीबुर्रहमान की प्राण रक्षा ।

(८) एक लाख पाक्य योधाओ का हथियार डालना ।

भुरत्, भरौट भाषा मे, सस्कृत में भृष्ट, प्राकृत म भुट्टो और आचरणो मे भ्रष्ट, सब तरफ कटीला। इस प्रकार भुट्टो बहुरूपिया ताण्डव नृत्य कर रहा है। चाहे वह मित्र बने या शत्रु इसके साथ सावधानी से वर्ताव करना चाहिए।

जयभारतादर्शः

शुद्धिपत्रम्

निगृहीतो ह्यनुस्वारो मात्रायाः स्वल्पता तया ।
अर्धे रेफविसर्गौ च विकलांगाक्षराणि वै ॥१॥
दीर्घोकारस्य मात्राया ऋकारस्य च साम्यता।
ऋते स्त्र्यचि दोष हि त्रुटीनां कारण महत् ॥२॥

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	७	तमह्	तमहं
२	६-७	निमिता	निर्मिता
८	७	अग	अंग
६	३	ल	मूल
	१५	धमरूप	धर्मरूप
१२	२	कण	कर्ण
	६	विद्यायिन	विद्यार्थिन
		त्वास्ति	रेवास्ति
	१२	आय	आर्य
	१६	कण	कर्ण
१४	२	प्रदातृणा	प्रदातृणां
१५	५	अहनिश	अहर्निश

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१६	११	पुण	पूण
१८	४	परिवजितुम्	परिवर्जितुम्
२०	३	वहिण	वर्हिण
२२	११	श्रत	श्रत
	१८	शावर	शावर
२७	१७	इस	इसस
२६	३	श्रमे	श्रमे
	७	गाकल	गाकुल
	१२	माताश्री	माताश्री
३१	३	विग्रहस्येव	विग्रहस्यैव
	६	ऽयतन	ऽयतने
३२	६	सरक्षण	संरक्षण
	७	निवहण	निर्वहण
	१३	विप्णु	विष्णु
		स्वयवरो	स्वयंवरा
३३	३	तिहरो	तिहरो
	७	दारिद्रयस्य	दारिद्र्यस्य
३४	३	मागण	मार्गण
	१०	ढूढते	ढूंढते
३७	५	दोशायणी	दाक्षायणी
३८	६	चतुविशति	चतुर्विंशति

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४०	३	स्वय	स्वय
	५	कल्प	कल्पा
	१६	पुनज म	पुनज म
४८	८	ऋन	ऋीन
	६	रक्षका	रक्षको
४६	४	राजोनत्य	राजोलक्ष्य
५२	१	व्याघ्र	व्याघ्र
	२	च पति	चमूपति
	३	विमुख	विमुख
	४	चिद	चिद
	७	सद्यो	सद्यो
५६	७	त्याल	त्यलि
६०	२	बहुशो परार्थ	बहुशोऽपरार्थ
६२	७	वक्रत्य	वक्रत्व
६४	६	मनीपिणम्	मनीपिणाम्
६५	७	सवन	सवश
	६	कुवन्	कुर्वन्
	१३	स्काइन	स्काइन
६६	११	शास्त्रोविप्वच्	शास्त्राविप्वक्
	१२	कृतना	कृतना
७०	६	ऊत्यान्तो	ऊत्या तो

(८

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७१	६	मेतु	भेत्तुम्
७७	१८	मूपक	मूपक
		कलक	कलक
७८	४	प्रासादशाश्चम्	प्रासादेशश्चमूपतेः
७६	८	गति	गतिं
८०	८	शत्रोमन्यु	शत्रोमन्यु
८२	८	वसमि	वसति
	६	निबहणे	निबहणे
	१२	ईट	ई ट
८३	६	कम्बू	कम्बु
८४	६	शोय	शौर्यं
८६	२	घृष्ट	घृष्ट
	३	नशास	नशास
	१५	फिरत	फिरती
८७	६	धपे	धर्षे
	१६	राजू का	राजू की
६०	६	कनु	कर्त्तुं
६१	२	बम्वानि	बम्बानि
	४	पाण	पाण
	८	राजमा	राजस्य
	१३	यर	पर

ः)

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९२	१	शक्तयनु	शतधनु
	६	हिंद	हिन्द
९३	९	विदग्धो	विदग्गो
९४	१	दश	दर्श
	५	पेतनि	पेतानि
	१२	कतव्य	कर्तव्य
९५	५	तथा	यथा
९६	१	दशः	दर्श
	२	विभाजन	विभाजन
	६	घम	घर्म
	१५	विगोको	विगो कोट
९७	१	शक्तय	शतच
	५	चपलापि	चपलाऽपि
		जगभा	जगमा
	८	कोविद	कोविदे
	९	रमूददेपा	रमूदेपा
९७	१०	घोघश्च	घोघश्च
	११	मिलार्य	स्मिन्नार्येः
९८	१	शतय	शक्तच
	४	समाभ्या	समाम्या
	१३	बद	बंद

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
	१४	भरव	भव
	१८	रहाथा।	रहाथा ?
९९	१	शत्य	नक्षत्र
	२	भगविल	भगक्लि
	११	पाका	पावयो
१००	५	निमिते	निर्मिते
	६	निम्ना	निम्ना
१०१	१४	बडी	बडो
	१६	की	क्रिये
१०२	५	वोढु	वोढु
		सन्या	सै यो
१०३	८	मवाममन्	मवागमन्
१०५	३	—	जल्पति
	६	—	स्तगोत्रेन
१०६	८	कादिशको	कादिशीको
१०९	२	बीगासनके	बारासनके
११०	६	—	स्त्रियाने
	१५	—	चरित्र
१११	४	वर्गी	वर्गी
	५	लभ्य	लक्ष्य
११३	१	मोत्र	मोच

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११४	६	नाग्रे	ननोग्रे
	७	स्थान	स्थाने
	९	विधमिण,	विधर्मिण
११६	५	स यस्य	सैन्यस्य
	८	द्रुतम्	द्रुतम्
	१६	सना	सेना
११८	१४	पर	पेर
११९	३	आनमु पुरयो	आनमुश्च पुरो
१२०	११	टैंक	टैंक के
१२२	२	निमिता	निर्मिता
	१३	मुह	मुह
१२३	४	—	घपयति
	६	—	प्रत्यग्नुच
१२४	२	शोय	शौय
	६	सेशोधन	सशोधन
	८	चाक्रमण	चाक्रमण

पृ० १२२ १२६ तक शीपक 'डोगराई समरागणम् के स्थान पर 'सुचेतगढ स्यालकोट धू' तथा पृ० १२७ – ३७ तक 'स्यालकोटाञ्चलम्' पढिये।

१२५	६	विभजन	विभाजन
	७	युग	युग

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२५		६ २०२२	६, २०२२
१२८	८	परिणाति	परिणति
१२९	७	विच्छेनु'	विच्छेत्त'
१३०	३	शत्रा	शत्रो
	६	स्थल	स्थल
	१२	गाढ	गाढ
	१८	प्रत्ति	पत्ति
१३२	४	—	सा
१३३	११	चाविद्दा	चाविद्दा
१३४	५	—	बुद्दर
	८	श्वऽपि	श्वाऽपि
१३५	७	—	तत्रस्थ
	१८	सहायया	सहायता
		प्रतीश्वाये	प्रतीक्षाम
१३६	१६	ली	ही
१३८	७	निम्मो	निम्मो
		नियोजन	नियोजित
१३९	५	व	न
१४०	४	—	नो ह्यमित्रय
	५	कम	कर्म
	८	ग्रति	गति

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१४१	६	सकुल	सकुल
	१६	ब्रिडेड	ब्रिगेड
१४३	७	सरक्षण	सरक्षण
	१८	कमेण्ड	कमेण्डो
१४४	८	पलाते	पलने
	१३	जीर्यें	जीर्यें,
	१५	थी	थी
१४५	७	विल्लोरन	विलोचन
१४६	११	मशेपु शकुना	मशेपुशकुना
	१७	त्रिशकु	त्रिशकु
	१८	भारताम	भारतीय
१४७	२	रास्पद	रास्पद
१४६	२	ऽविरेणैव	ऽभिरेणैव
१५०	१	दर्न	दर्श
१५२	६	नवह्	निवह्
१५५	१८	स्थित्वा	स्थित्वा
	१६	इत्यपि	इत्यपि
१५६	५	प्रहरण	प्रहरणं
	१५	पद्य द्रुतविलम्बित	पद्यद्रुत विलम्बित
१५७	३	स्वन	स्वने
१५६	२	रक्षिण-स्थले	रक्षिण स्थले

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	स्पष्ट
१५६	४	रिपु	रिपु	
	११	—	—	जेसलमेर
	१४	—	—	शोध
१६०	७	याततायित	याततायिनै	
१६३	१४	कतियो	कृतियो	
१७०	४	दृकति	दृकेति	
	५	—	—	सरति
	८	—	—	चापसपति
१७४	४	सत्य	सत्य	
१७५	३	—	—	अमार्जित
	४	स्वश्वमार्जिते	स्वअमार्जिते	
१७७	२	पक	पक	
१८०	७ १४	खेमकण	खेमकण	
१८४	३	न	न	
१८५	१७			शत्रु
१८६	७	स्छेद	स्छेद	
१८७	१३	सजोये	सजोवे	
	१६	वीरा	वीरो	
१८८	४	पूव	पूर्व	
१८६	३	धर्पितु	धर्वितु	
	७	छेनु	स्टेत्तु	

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	स्पष्ट
१६२	२	शत्वंक	शत्वकं	
	७	तत	ततः	
	६	खनर के	ग्वनूरके	
	१०	पाण्डनो	पण्डितो	
१६६	५	नेतृणा	नेतृन्द्रणा	
१६७	४	लक्ष्य	लक्ष्य	
१६८	५	पुत्रस्य	पुत्रस्य	
१६६	६	—	—	र्गनि
२००	५	—	—	शौर्य
२०१	२	—	—	निमि
	८	—	—	वर्पणे
२०३	५	देशे	देशे	
	११	दुग	दुर्ग	
२०४	५	मम	मर्म	
	८	भव	मव	
२०५	४	साखयो	सांखयो	
२०६	११	नाम	नाले	
	१२	लगतार	लगातार	
	१८	चलने का	चलने की	
२०७	२	निवहणांम्	निबहणम्	
	११	शत्र	शत्रु	

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	स्पष्ट
२०७	१६	(कलक)	(कलक)	
२०८	१७	—	—	आधुनिक कट
२०९	११	—	—	पौराणा
२१०	१	दश	दश।	
२१२	६	चापुरे	चारेषु	
	१६	–	–	दस
२१५	११	में	मैं	
२१६	१२	–	–	व्यास
२१७	२	बेतवा	वेतवा	
	४	निविंदी	निस्त्रिशी	
२१८	२	पूणता	पूणता	
	५	निवतितम्	निवतितम्	
	१६	सख्या का	सख्याका	
२२२	१	दश	दर्श	
२२४	२	सानऽपि	सानेऽपि	
	४	कीतिमान्	कीतिमान्	
२२६	५	–	–	वे
	११	–	–	उसी
२२७	५	–	–	मूमात्रा
२२८	५	पयपालयन्	पयपालयन्	
	७	–	–	इन्द्रजित्

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	स्पष्ट
२२६	७	—	—	निरुपमो
	११	पराश	परन्तु	
२३०	१४	—	—	सिंधिया
२३१	३	खाडो	खोडो	
	४	—	—	रणे
	५	—	—	बाँहु
	१०	प्रणा	प्रणी	
२३३	१६	—	—	वाए
२३४	२	—	—	दम्भिना
	१८	कमवती	कमवतो	
२३६	३	शोय	शौर्य	
	१३	का	की	
२३७	६	जाम या	जामंन्य	विस्मय
२३८	५	—	—	स्तया
	७	—	—	शास्त्रे
	११	—	—	सनी
	१२	—	—	इटलो
	१६	—	—	सहन शीलता
२३९	३	—	—	सघाते
	११	—	—	युद्ध
२४०	४	शत्रोधन	शत्रोधन	—

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	स्पष्ट
	५	—	—	रुची
	८	सयुगा	सयुगो	
	१६	दण्ड	दण्डी	
२४२	२	लोचनन	लोचनन	
	३	ज ननी	जननी	
	११	गर्वविमोहितः	गर्वविमोहित	
२४३	६	शास्त्रास्त्र	शस्त्रास्त्र	
२४४	१३	हाजी पर	हाजीपोर	
२४६	१४	सस्कृति	संस्कृति	
२४७	३	शकास्पद	शकास्पद	
	८	प्रतीते	प्रतीते	
२४९	५	निबहणम्	निबहणम्	
२५३	३	—	—	दुर्विनीतेषु
२५४	२	निघोप	निर्घोष	
	६	—	—	वर्जिते
	१२	प्राशका	प्राशका	
२५५	६	पद्म	पद्म	
२५७	३	प्राप्राप्य	अप्राप्य	
२६०	५	—	—	नियुक्ता
	७	निक्रमणे	निक्रमण	
२६१	९	—	—	दृश्यास्मानि रहनि

(म

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	स्पष्ट
	१५	सम्मती	सम्मति	
२६२	६	आपूयते	आपूयते	
	१६	जाता	जातो	
२६५	६	The Foundation Head of Religeous	The Fountain Head of Religion	
२७२	८	कल्पिलाम्	कल्पिनाम्	
	१६	भारतीयो का	भारतीयो की	
२७४	२	नेंतायपुंग्व	नेंतायेंपुंगव	
	११	जमनो	जमनी	
२७५	१२	पदो	पदो	
२७६	३	—	—	गोरक्षिणी
	८	मवने	मर्चने	
२८१	३	गति	गति	
	८	मातुदशन	मातुर्दशन	
२८६	७	—	—	गावोमि' प्रे
२८७	११	—	—	जिज्ञासु
	१३	—	—	साध्य
	१४	—	—	स्वय
२८८	२	—	—	सपद
	५	प्रख्मात	प्रख्यात	
	१०	पुत्तव	पुंस्त्व	

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	स्पष्ट
	१४	वणन	वर्णन	
	२१	—	—	नृत्यति
२६३	३	दृष्नुरो	सद्भूगुरो	
	६	सिहो	सिंहो	
		दीक्षितो	दीक्षिता	
२६५	३	—	—	वर्तति
	८	राधा	श्रीराधा	
	९	तस्मादजान	तस्मादजनि	
२६६	८	चक्रपाणि गोस्वामी (द्वि०)		

परिशिष्टम्

क	५	वासन्	वासीन्	
ख	४	दश	दर्श	
	६	दशो	देशो	
ग	१३	—	—	भारत
घ	५	—	—	ऽसौ
	७	—	—	विभीषिकाम्
	७	पाय सम्	पर्यं तम्	
ङ	७	प्रदर्गितुं	प्रदर्शितुम्	
च	४	मवलोक्यन्	मवालोक्यन	
छ	५	—	—	तस्यो

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	स्पष्ट
	६	कतु	कतु	
म	७	बह्वय	वह्वय	
ट	४	भा तस्य	भारतस्य	
	१६	सस्थानक राची	सस्थान कराची	
ठ	१५	—	—	मुह
ड	२	—	—	निर्दिष्टम्
	६	—	—	दुर्विनीते
	१०	तो हम बिगडे	तो बिगडे	
ढ	३	त त्र	तत्र	
	७	नज्ञ	नश	
	१२	अयोग ह	अयोगवाह	

घोशाक्षरो म दीघ ऋ मात्रा वाले अक्षर नही, अत इनके स्थान म ह्रस्व ऋ से ही स तोप करना पडा।

तिथि–पत्र

राष्ट्रीय शाके,	विक्रम सवत्,	ईसवी सन्	घटना
१८८७	२०२२	१९६५	
श्रावण	श्रावण शुक्लपक्ष	अगस्त	
(१) १४	१	५	पाक्य द्वारा घुसपैठ प्रारम्भ। छबरैट गाव पर आक्रमण।
(२) २३	भाद्र कृष्ण २	१४	श्रीनगर प्रात में वटमाल गाव मे आगजनी।
(३' ३१	१०	२?	पाक्य द्वारा युद्धविराम रेखा का उल्लघन तथा आक्रमण
(४) भाद्र ४–५	३० शु० १	२६–२७	भारत द्वारा बेदोर चौकी हस्तगत की गई।
(५) ६	२	२८	भारत द्वारा हाजीपीर दर्रा की विजय(८६०० फुट ऊची)
(६) १०	६	सितम्बर १	पाक्य द्वारा छम्ब पर घोर आक्रमण।
(७) १६–१८	१२–१४	६	अमृतसर, हलवाडा पर आकाश से बम्ब वर्षा।
(८) १८–१९	१४–१५	१०–११	भारतीय सेना पा में प्रवेश।

(९) १४-१८	१०-१४	५-९	पठानकोट, आदमपु अमृतसर, पटियाल अम्बाला पर पाकिस्ता सिपाही छतरी से उतरे ।
(१०) १६-१८	१२-१४	७-९	भारत द्वारा सरगोध चकलाला, रावल पिण्ड पर बम्ब गिराना ।
(११) १७-१८	१३-१४	८-९	पाक्य द्वारा द्वारका प बम्ब गिराना ।
(१२) २०-२१	आश्विन कृष्ण १-२	११-१२	लाहौर, स्यालकोट प सकुल संग्राम ।
(१३) २२	३	१३	पाक्य द्वारा जामनगर प बम्ब वृष्टि ।
(१४) २४	५	१५	पसरूर-स्यालकोट रे माग का भारत द्वारा कब्जा
(१५) २६	७	१७	चौविण्डा-स्यालकोट अचल मे सकुल युद्ध ।
(१६) २८	९	१९	पाक्य द्वारा गुजरात के मुख्य मंत्री के विमान पर बम्बो की मार ।
		१-२२	भारत की डोगराई संग्राम में विजय ।